३१८९

२५क-२

पत्र ६५

घरघोरघरकितिमिमाली ॥ ९ ॥ जयतिदेवसुनिदेवनरदेवदसरथकेदेवमुनिवंदिकियअव
धवासी ॥ लोकनायककोकसोकसंकटसमनभानुकुलकमलकाननविकासी ॥ २ ॥ जयति
सिंगारसरतामरसदामदुतिदेहगुनगेहविश्वोपकारी ॥ सकलसौभाग्यसौंदर्यसुखमारूप
प मनोभवकोटिगर्वहारी ॥ ३ ॥ जयतिसुभगसारंगसुनिखंगसायकसक्तिचारुचर्मा
सिवरवर्मधारी ॥ धीररघुरथीरघुविरभुजबलअतुलहेलयादलितभूभारभारी ॥ ४ ॥
वर जयतिकलधौतमनिमुकटकुंडलअलकभ्रूवनतिलकभलिभालविधुवदनसोभा
दिव्यभूषनवसनपीतउपवीतकियध्यानकल्यानभाजननकोभा ॥ ५ ॥ जयतिभरतसौ
मित्रीसत्रुघ्नसेवितसुमुखसचिवसेवकसुखदसर्वदाता ॥ अधमआरतदीनपतित
पातकपीनसकृतनतमात्रकहिपाहिपाता ॥ ६ ॥ जयतिजयभुवनदसचारिजसजगमग
धन्यजय तपुन्यमयधन्यजयरामराजा ॥ चरितसुरसरितकविमुख्यगिरिनिस्सरितपिवतमज्जतमुदि
तसंतसमाजा ॥ ७ ॥ जयतिवर्णाश्रमाचारपरनारिनरसत्यसमदमदयादानसीला ॥
विगतदुखदोषसंतोषसुखसर्वदासुनतगावतरामराजलीला ॥ ८ ॥ जयतिवैराग्यवि
ज्ञानवारानिधेनमतनर्मदपापहर्ता ॥ दासतुलसीचरनसरनसंसयहरनदेहिअव
लववैदेहीभरता ॥ ९ ॥ ४४ ॥ श्रीरामचंद्रकृपालभजमनहरणभवभयदारुणंनवकंज लोचन
कंजमुखकरकंजपदकंजारुनं

१२ पदकंजारुने ॥ कंदर्प अगनित अमित छवि नवनील नीरज सुंदरं ॥ पटपीत मानहु तडित रु
चिसुचि नौमि जनकसुतावरं ॥ सीरकीरट कुंडल तिलक चारु उदार अंग विभूषणं ॥ आजान
भुजसरचापधर संग्राम जितषरदूषणं ॥ इति वदति तुलसीदास संकर सेष मुनि मन रंजनं
नं ॥ मम हृदय कंज निवास कुरु कामादि षलदल गंजनं ॥ ४६ ॥ श्री सी आरति रामायण किरकी
12 कर हुम महरन दुष देहंद गोविंद आनंदघन अघ चर चर रूप हर सिव गन सेव रावदत है तिवा
सना भूप परीजै ॥ दीप निजबोध गत क्रोध मद मोह तम प्रौढ अभिमान चितवृत्ति छीजै ॥ भा
म व अतिसय विसद प्रवर नैवेद्य सुभ श्रीरमन परम संतोषकारी ॥ प्रेम तांबूल गत सूल संस
य सकल विपुल भव वासना वीज हारी ॥ अशुभ शुभ कर्म घृत पूर्ण दस वर्तिका त्याग पावक स कु
तोगुन प्रकासी ॥ भक्ति वैराग्य विज्ञान दीपावली अर्पि नीराजनं जगनिवासी ॥ विमल हृदभ
वन कृत सांति पर्यंक सुभ सयन विश्राम श्रीराम राया ॥ क्षमा करुणा प्रमुख तत्र परिचारिका
यत्र हरि तत्र नहिं भेद माया ॥ इहि आरति निरत सनकादि श्रुति शेष शिव देवरिषि अखिलमु शित
कामना नी तत्व दरसी ॥ जोई करै सोई तरै परिहरै काम सब वदत इति अमल मति दास तुलसी ॥ ४७ ॥
हरन सब आरतें आरती राम की दहन दुख दोष निर्मूलिनी काम की ॥ सुभग सौरभ धूप
दीपवर मालिका ॥ उडत अघ विहंग सुनि ताल करतालिका ॥ भक्त हृदभवन अज्ञान तम १२

हारिनी॥विमलविज्ञानमयतेजविस्तारनी॥मुक्तिकीदूतिकादेहदूतिदामिनी॥मोहमद
कोहकलिकंजहिमजामिनी॥प्रणतजनकुमुदवनइंदुकरजालिका॥तुलसीअभिमा
नमहिषेसबहुकालिका॥१५॥देवदनुजवनदहनगुनगाहनगोविंदनंदादिआनंददा
ताअविनासी॥संभुसिवरुद्रसंकरभयंकरभीमघोरतेजायतनक्रोधरासी॥१॥देवअनंतभ
गवंतजगदंतअंतककृत्रासशमश्रीरमनभुवनाभीरामं॥भूधराधीशजगदीशईशानवि
ज्ञानघनज्ञानकल्याणधामं॥२॥देववामनअव्यक्तपावनपरावरविभुप्रगटपरमातमाप्रकृति
स्वामी॥चंद्रशेखरसूलपानीहरअनघअजअमितअविछिन्नवृषभेसगामी॥३॥देवनील
जलदाभतनस्यामबहुकामछविरामराजीवलोचनकृपालं॥कंबुकर्पूरवपुधवलनिर्मल
मौलिजटाधरतरुनतरनिसिरसुमनमालं॥४॥देववसनकिंजल्कपरचक्रसारंगधरकंजकौ
मोदकीअतिविसालं॥मारकरिमत्तमृगराजत्रयनैनहरनौमिअपहरनसंसारजालं॥५॥
देवकृष्णकरुणाभवनदमनकालीयखलविपुलकंसादिनिर्वंसकारी॥त्रिपुरमदभंग
करमत्तगजचर्मधरअंधकोरगग्रसनपन्नगारी॥६॥देवब्रह्मव्यापकअकलसकलपरप
रमहीतज्ञानगोतीतगुनवृत्तिहरता॥७॥सिंधुसुतगर्वगिरिवज्रगौरीशभवदक्षमखअ
खिलविध्वंसकरता॥देवभक्तिप्रियभक्तजनकामधुकधेनुहरिहरनदुर्घटविकटविपति

१३ भारी॥ सुखदनर्मदवरदविरजअनवद्यअखिलविपिनआनंदवीथिनविहारी॥ ८॥ देवअतिरुचिरर ६
घुबीरकरीनाममंत्रावलीहंसहंसहूखदूरनआनंदधारी॥ विश्वाधिपलोकसौरपनिसमसर्वदादास
रामजपुरामजपु तुलसीहृदयविसदवानी॥ सदारामजपुरामजपुमूढमनवारवारं॥ सकलसौभाग्यसुख
रामजपु खानिजियजानिसठमानिविश्वाससवदवेदसारं॥ ९॥ देवकोशलेंदुनवनीलकंजाभतनु
13 मदनरिपुकंजहृदयचंचरीकं॥ जानकीरवनसुखभवनभुवनैकप्रभुसमरभंजनपरम
दहनआति कारुनीकं॥ १०॥ देवदनुजवनदहनधूमध्वजपीनआजानभुजदंडकरचंडवाणं॥ अरुनकरचरन
मुखनयनराजीवगुनअयनवहुमयनशोभानिधानं॥ ११॥ देववामनांहंदकेरवदिवाकरका
मक्रोधमदकुंजकाननतुषारं॥ लोभअतिमत्तनागेंद्रपंचाननंविप्रहितहरनसंसारभा
हं रं॥ देवकेशवक्लेशघ्नकेशववंदितपदद्वंदमंदाकिनीमूलभूतं॥ सर्वदानंदसंदोहमोहापहंघो
रसंसारपाथोधिपोतं॥ १२॥ देवशोकसंदेहपाथोदपटलानिलंपापपर्वतकठिनकुलिश
रूपंसंतजनकामधुकधेनुविश्रामप्रदनामकलिकलुषभंजनमनूपं॥ १३॥ देवधर्मकल्पद्रुमा
रामहरिधामपथसंबलं॥ मूलमिदमेवमेकंभक्तिवैराग्यविज्ञानशमदानदमनामआधी
नसाधनंअनेकं॥ १४॥ देवतेनतप्तंहुतंदत्तमेवाखिलंतेनसर्वंकृतंकर्मजालं॥ जेनश्रीराम १२
नामामृतंपानकृतमनिसमनवद्यमवलोक्यकालं॥ १५॥ श्वपचखलभीलजमनादिहरी

लोकगाननामवलविपुलमतिमलिनपरसी॥ त्राहिसर्वेससंत्रासभवपासअसिनिसितह
रिनामजपुदासतुलसी॥४९॥५०॥ देवभानुकुलकमलरविकोटीकंदर्पछविकालकलिव्याल
मिववैनतेयं॥ प्रवलभुजदंडपरचंडकोदंडधरतूनवरविशिषवलमप्रमेयं॥१॥ देवअरुण
राजीवदलनैनसुखमाअैनस्यामतनकांतिवरवारिदाभं॥ तप्तकांचनवस्त्रशास्त्रविद्यानि
पुनसिद्धसुरसेव्यपाथोजनाभं॥२॥ देवअखिललावन्यग्रहविश्वविग्रहपरमप्रौढगुन
गूढमहीमाउदारं॥ दुर्धर्षदुस्तरदुर्गस्वर्गअपवर्गपतिभग्नसंसारपादपकुठारं॥३॥ देव
सापवसमुनिवधूमुक्तकृतविप्रहितजग्यरक्षणदक्षपक्षकर्ता॥ जनकनृपसदसिशिवचा
पभंजनउग्रभार्गवागर्वगरिमापहर्ता॥४॥ देवगुरगिरागौरवअमरसुदुस्त्यजरा
ज्यत्यक्तश्रीसकलसौमित्रिभ्राता॥ संगजनकात्मजामनुजमनुसत्यअजदुष्टवधनिरतत्रैलो
क्यत्राता॥५॥ देवदंडकारन्यकृतपुन्यपावनचरणहरणमारीचमायाकुरंगं॥ वालीवलमत्त
गजराजइवकेसरीसुहृदसुग्रीवदुखरासिभंगं॥६॥ देवरिछमर्कटविकटसुभटउद्भटभट
समरशैलसंकासरिपुत्रासकारी॥ वद्धपाथोधिसुरनिकरमोचनसकुलदलनद
ससीसभुजवीसभारी॥७॥ देवदुष्टविवुधारिसंघातअपहरणमहीभारअवतारकारण
अनूपं॥ अमलअनवद्यअद्वैतनिर्गुनसगुनब्रह्मसुमिरामिनरभूपरूपं॥८॥ देवशेषश्रु

२४ तिसारदायंप्रभुनारदसनकगानततनुमंत्रंनहीनवचविंवं॥सोऽहंरामकामारिप्रीयअवधपति
सर्वदारामबलसीतारामनिधिवहिते॥५॥५४॥देवजानकीनाथरघुनाथरागादितमतरनिता
कृत्यतननतेजधामं॥सच्चिदानंदमानंदकंदाकरंविश्वविश्रामरामाभिरामं॥१॥देवनीलनववा
रिधरसुभगसुभकांतिकरपीतकौशेयवरवसनधारी॥रत्नहाटकजटितमुकुटमंडितमौ
लिभानुसमसदृशउद्योतकारी॥२॥देवश्रवनकुंडलभालतिलकभ्रूरुचिरअतिअरुणअं
भोजलोचनविशालं॥वक्रअवलोकत्रैलोकशोकापहंमाररिपुहृदयमानसमरालं॥३॥
देवनासिकाचारुसुकपोलद्विजवज्रदुतिअधरबिंबोपमामधुरहासं॥कंठदरचिबुकवरव
चनगंभीरतरसत्यसंकल्पसुरत्रासनासं॥४॥देवसुमनसुविचित्रनवतुलसिकादलजुतं॥ व
मृदुलवनमालउरभ्राजमानं॥भ्रमतआमोदवशमत्तमधुकरनिकरमधुरतरमुखरकुर्वंति
देव गानं॥५॥सुभगश्रीवत्सकेयूरकंकनहारकिंकिनीरटनकटितटरसालं॥वामदिशजनक
न कजासीनसिंहासनंकनककृदुवल्लिवततरुमालं॥६॥देवपीनआजानुभुजदंडकोदंडधरी
नवामभुजदक्षिनकरबानमेकं॥अखिलमुनिनिकरसुरसिद्धगंधर्ववरनमितनरनाग
अवनिपअनेकं॥७॥देवअनघअनवद्यअविच्छिन्नसर्वज्ञसर्वेशखलुसर्वतोभद्रदाताअसमा २७
कं॥प्रणतमनखेदविच्छेदविद्यानिपुनमनोमिश्रीरामसोमित्रिसाकं॥८॥देवजगलपदप

14

प्र सु खसुख पयाल यं चिन्ह कलि पादिहो भाति भारी॥ हनुमंत दूर विमल कृत परम मंदि
र सदा दास तुलसी सरन सोक हरी॥ ५॥ ५४॥ देव कौसलाधीस जगदीस जगदेक हित अमि
त गुन विपुल विस्तार लीला॥ गायंति तव चरित सुपवित्र स्रुति सेष सुक संभु सनकादि मुनि
मन न सीला॥ १॥ देव वारीचर वपुष धरि भक्त निस्तार पर धरनि कृत नाव महिमाति गुर्वी॥ सक
ल यज्ञांसमय उग्र विग्रह क्रोड मर्दि दनुजेस उद्धरन उर्वी॥ २॥ देव कमठ अति विकट तन कठिन
पृष्ठोपरे भ्रमत मंदर कंद सुख मुरारी॥ प्रगट कृत अमृत गो इंदिरा इंदु वृंदारका वृंद आनंदका
री॥ ३॥ देव मनुज मुनि सिद्ध सुर नाग त्रासक दुष्ट दनुज द्विज धर्म मरजाद हरता॥ अतुल मृग
राज वपु धरत विद्दरत अरि भक्त प्रहलाद अहलाद करता॥ ४॥ देव छलन बलि कपट वटु रूप वा
मन ब्रह्म भवन पर्यंत पद तीनि करनं॥ चरन नख नीर त्रैलोक पावन परम विबुध जननी दु
सह सोक हरनं॥ ५॥ देव क्षत्रियाधीस करि निकर नव केसरी परसुधर विप्र ससि जलद रूपं
सिष्ट भुजदंड दस सीस संहरनचंड वेग सायक नौमी राम भूपं॥ ६॥ देव भूमि भर भूरि हर रिपुग्रा
ह पामात्मा॥ ब्रह्म नररूप धरि भक्त हेतू॥ हसि कल ऊमद रा के प्रा रा थारवनके [illegible] वे भाटवी
धूमकेतू॥ ७॥ देव प्रवल पाखंड महि मंडलाकुल देखि निंद्य कृत अखिल मख कर्म जाले॥ सु
द्ध बोधैक घन ज्ञान गुन धाम अज बौध अवतार वंदे कृपाले॥ ८॥ देव कालकलि जनित मलम

१५ लिनमन सर्वनर मोहतमिस्त्रिनिविड़ जनमनोंधकारं ॥ विमुखजनसत्रुत्रकल की दिवाकर उदित दास॰
15 तुलसी हरण विपति भारं ॥ ५३ ॥ पद ॥ देव सर्व सौभाग्यप्रद सर्वतोभद्र निधि सर्व सर्वेस सुखधामी॰
रामं ॥ सर्व हृदकंज मकरंद मधुकर रुचिर रूप भूपाल मनि नौमि रामं ॥ १ ॥ देव सर्व सुखधाम गु
सर्व नग्राम विश्राम प्रद नाम सर्वास्पद मनिपुनीतं ॥ निर्मल शांत सुविशुद्ध बोधायतन क्रोध मद
दहरण करुणा निकेतं ॥ २ ॥ देव अजीत निरुपाधि गोतीत मव्यक्त विभु मेकमनवद्य मजमद्यु
तीयं ॥ प्राकृतं प्रगट परमात्मा परमहित प्रेरकानंद वंदे तुरीयं ॥ ३ ॥ देव भूधरं सुंदरं श्रीवरं मद॰
नमद मथन सौंदर्य सीमातिरम्यं दुःप्राप्य दुष्प्रेक्ष्य दुस्तर्क दुःपार संसार हर सुलभ मम दुर्भा
वगम्यं ॥ ४ ॥ देव सत्यकृत सत्यरत सत्यव्रत सरवदा पुष्ट संतुष्ट संकष्ट हारी ॥ धर्मवर्म निर्मुक्त रत
वाचैक हिज्या पूज्य व्रति धन्य जन श्रीय मुरारी ॥ ५ ॥ देव नित्य निर्मम नित्य मुक्त निर्मान हरि
ज्ञानघन सच्चिदानंद मूलं ॥ सर्व रक्षक सर्व भक्षकाध्यक्ष कूटस्थ गूढार्चि भक्तानुकूलं ॥ ६ ॥
देव सिद्ध साधक सीध्य वाचक रूप मंत्र जापक जाप्य सृष्टि परम कारन केजनाभ जल॰
दाभतन सगुन निर्गुन सकल दृश्य द्रष्टा ॥ ७ ॥ देव व्योम व्यापक विरज ब्रह्म वरदेश वैकुंठ वाम
न विमल ब्रह्मचारी ॥ सिद्ध वृंदारिकारि वृंद वंदित्मयवर दैत्य निर्मूल कारी ॥ ८ ॥ देव शरणानंद संदो १५
ह द्विपद हरण संमूह भ्रत्ता गुन सत्य पालं वचन मन कर्म गत शरण ॥ तुलसीदास त्रास पाथो

पाँडं

यिरेव अभजाते ॥ ४॥ ५४॥ देव विश्व विख्यात विश्वेश विश्वायतन विश्वमरजाद व्यालारिगामी
ब्रह्म वरदेश वागीश व्यापक विमल विपुल बलवान निर्बान स्वामी ॥ २॥ सर्वमेवात्र त्वद्रूप भूपाल
मनी व्यक्तमव्यक्त गत भेद विस्नो ॥ भुवन भय दंड कामारि वंदित पद द्वंद मंदाकिनी जनकजि
स्नो ॥ ३॥ देव प्रकृति निमहत्तत्वज्ञाद्यादि गुन देवतां व्योम मरुदग्नि अमलांबु उर्वी ॥ बुद्धि मन इंद्रीय
प्रान चित्तात्मा काल परमान चिच्छक्ति गुर्वी ॥ देव स्रष्टादि मध्यंत भगवंत त्वं सर्वगत मीस पावस्यं
ति जे ब्रह्मवादी जथा पट तंतु घट मृत्तिका सर्प स्रग दारु करि कनक कटकांगदादी ॥ ४॥ देव गू
ढ गंभीर गर्भाभ्र गम्यार्थ वित गुह्य गोतीत गुर ज्ञान ज्ञाता ॥ ज्ञेय ज्ञानप्रिय प्रचुर गरिमागा
र घोर संसार पर पार दाता ॥ ५॥ देव सत्यासत्य कल्प अतिकल्प कल्पांत हेतु कल्पनातीत
अहितल्पवासी ॥ वनजलोचन वनजनाभ वनदाभ वपु वनचर ध्वज कोटि लावन्य रासी ॥ ६॥ दे
व सुकर दुःकर दुराराध्य दुर्व्यसन हर दुर्ग दुर्द्धर्ष दुर्गार्तिहर्ता ॥ वेद गर्भार्भकादर्श गुन गन गर्व अवी
कपर गर्व निर्वाप्य करता ॥ ७॥ देव भक्त अनुकूल भवशूल निर्मूलकर तूल अघ नाम पावक
समानं ॥ तरल तृष्णा तमी तरनि धरनीधरन सरन भयहरन करुनानिधानं ॥ ८॥ देव बहुलहं
दारकंसारि कादंवर्य पदवंदि मंदारमालोरधारी ॥ पाहि मामीस संताप संकुल सदा दास तुलसी
प्रनत रावनारी ॥ ९॥ ५५॥ देव संतसंतापहर विश्व विश्रामकर राम कामारि अभिरामकारी

१९ सुद्धबोधायतनममच्चिदानंदघनमज्जनानंदस्वरयमस्वामी॥१॥देवपतितसमताभवनविषमता
मतिसमनरामरामारमननरवनारी॥घटकृकरचमेचरवमेघरुचिरकटिहूनपारघाक्तिसारं-
16 गधारी॥२॥देवसत्यसंधानसिंधोनप्रदमदेहितनसर्वगुनज्ञानविज्ञानशालो॥सघननतमघोर-
संसारभरसर्वरीनामदोषोप्रवरकिरिनिमालो॥३॥देवफनीहिलनकृतीत्रनानायघनर- तद
पतनश्रूपतमयरनतपस्वी॥मानमदमदनमत्सरमनोरथमदनमोहश्रंभोधिमंदरमनस्वी
४॥देववेदविख्यातवरदेशवांवनविरजब्रह्मवामीसवैकुंठस्वामी॥कामक्रोधादिमर्दनविव-
र्दनक्लेमासंतविग्रहविहंगराजगामी॥५॥देवपरमपावनपापपुंजमुंजाटवीअनलइवनि-
मिषनिर्मूलकरना॥अवनअमपरहृदयतातविभुवनेशभुवनाथश्रुतिमाथजयभुवनमंत्री॥६॥
भव देवअमलअविचलअकलसकलसंततसकलिविकलभंजनानंदरासी॥उरगनायकसय-
ननरुनपंकजनयनक्षीरसागरअयनसर्ववासी॥७॥देवसिद्धकविकोविदानंददायकप-
दद्वंदमंदात्ममनुजैर्दुरापं॥यत्रसंभूतअतिपूतजलसुरसरीदरसनादेवअघहरनपापं॥८॥
देवनित्यनिर्मलासंज्ञकनुगननीगुनानंतभगवंतनयामकनियंता॥विश्वपोषनभरनविश्व-
पी कारनकरनसरनतलदासत्रासहंता॥९॥१०॥देवदनुजदमनदयासिंधुदंभापहेदहनि- १९
दा दुर्दैवदुःपापहरना॥हृष्टहासमनगुप्तभवनडरेवाहहरहगीर्दवासनानासकरना॥१॥

देवमुनिवृंदमनमानुमंतनमगवंतभवभंजनानंदवृंदनैसभारी॥ भावनातीतभववंद्यभवभ
क्तिहितमुनिउद्धरनभूधरनधारी॥ २॥ देवव्यापकंव्योमवंद्यांघ्रिपावनविभोब्रह्मविद्ब्रह्म
चिंतापहारी॥ सहजसुंदरसुखदसुषमनमनसमभवदरासुहृदसर्वज्ञस्वछंदचारी॥३॥ देवस
सर्वदा र्वकृतनसर्वजित्सर्वहितसत्यसंकल्पकल्यानकारी॥ ब्रह्मादिसुरसर्वमुनिसिद्धवंदितनर
णकुरणसुरवेषुजहृद्देहहारी॥४॥ देवनित्यनिर्मोहनिर्गुननिरंजननिजानंदनिर्मान
निर्वाणदाता॥ निर्भेदानंदनिःकेवलनिःसीमनिरवद्यनिरुपाधिनिर्ममविधाता॥५॥ देवमहा
मंगलमूलमोदमहिमायतननमुग्धमधुमथनमानदश्रमानी॥ मदमर्दनमदातीतमाया
रहीतमंजुमानाथपाथोजपानी॥६॥ देवकमललोचनकमलकोसकोदंडधरकोपान
लाथीघाकल्यानरासी॥ जातुधानःप्रचुरमत्तकरीकेशरिभक्तमनपुन्यआरंन्यवासी॥७॥
देवअनवद्यअद्वैतअनवद्यअव्यक्तअजअमितअविकारआनंदसिंधो॥ अचलअनिकेत
अविरलअनामयअनारंभअंभोदनादघ्नबंधो॥८॥ देवदासतुलसीखेदखिन्नआपन्नयह
घोकसंपन्नअतिसयसभीते॥ प्रनतपालकरामपरमकरुणाधामपाहीमामउर्विपतिदु
र्विनीते॥९॥१०॥ देवदेहिसतसंगनिजअंगश्रीरंगभवभंगकारणसरणसोकहारी॥
जेतवत्सवंद्यांघ्रिपल्लवसमाश्रितसदाभक्तिरतविगतसंसयमुरारी॥१॥ देवअसुरसुर

१० नागनरएत्त गंधर्व खग रजनिसचर निकर येवापि अन्ये॥ हंस सरगन अयवें गे परपरमपद।
प्रापनि श्राप गति विचि असक्ने॥ ३॥ देव ह्न नवलि वान प्रह लाद मय ब्याथ गज गिय हि जिवंधु
निज धर्म त्यागी॥ मायुपर सलिल निर्मूल कल्मष सकल स्वपच जमन आदि केवल्प भारी॥ ३
17 देव संत निर्मलत निर्गुन निरामय अगुन श ह्न ब्रह्म कपरब्रह्म सानी रद्दा समर्दक स्वर्द कृवि गत
अति स्वरमति पूरम रति विरति तव चक्रपानि॥ ४॥ देव विश्व उपकार हित व्यग्र चित सर्व सत्य
क्रमर्द मन्वंतर तउन्यरासी॥ जयति हे ति नैवे अजम वेद हित सहीतन गाके निकी रा सिवासी॥ ५॥ दे
व देस्यय सिंधुसु विचार मंदिर बमहा अवील मुनिहृद निमेनकर्ता॥ मातृसत सर्ग अहु वित अति
श्रिं नि श्रितं व दान श्री रामवे दे हि भर्ता॥ ६॥ देव सोमसंदेह भय हर्षत मत विगत साधु संयुक्त विवे
कारी॥ जयति हु नाथ मायक निसाचर चमु निचय निर्दलन पटवेग भारी॥ ७॥ देव यत्र क्रतु या
ग्र मिस जन्म नि कर्म वस भ्रमत जग जोनि से कट अनेकं॥ त्रत्रत ज्ञ किसत्तु नसमा गाम सदाभ
वत्रमे रामर्विश्या ममेकं॥ ८॥ देव प्रबल भव ज्ञनित ते व्याधि भेषज भक्त सेवज्यां महेत र्द्धी॥ करद्रुम
संत भगवंत अंतर निरंतर नहीं कि मिपिमति विमल कह दास तलसी॥ ९॥ ५२॥ देव दृढ़ी।
अवलेवकरक मल्लक मला र मनद् मन ह्रवो दो वे संताप भारी॥ ज्ञानराकेश ग्रासन विधुंत १२
दलनकाम करी मत्त हरि दूषणारी॥ १॥ देव व उ वे ब्रह्मांड एव बने लेकार्ट गरची नमनद

धि नुजमयरूपधारी॥ दिदिकोपैतिष्ठअनिरुचिरसंदि रलिकरसत्लजनप्रभुखंडयकटककारी॥
४॥ देवऊणायअभिमानसागरभयंकरघोरविपुलअवगाहदुस्तरअपारं॥ नक्ररागादिसंकुल
वि मनोरथसकलसंगसंकल्पवीचिविकारं॥ ३॥ देवमोहदसमौलीतदभ्रातअहंकारपाकारिजि
तकामविश्रामहारीलोभअतिकायमतसरमहोदरदुष्टक्रोधपापिष्टविबुधांतकारी॥ ४॥
देवद्वेषदुर्मुखदंभखरअकंपनकपटदर्पमनुजादमदसूलपानी॥ अमितबलपरमदुर्जयनि
शिचरनिकरसहितषडवर्गगोजातधानी॥ ५॥ देवजीवभवदंघ्रिसेवकविभीषणवसतमध्यदुष्टा म
टवीग्रसितचिंतानियमशमसकलसुरजोगयलोकपावनसरत्नमांनादअंतर्गतभीता॥ ६॥ देव
ज्ञानअवधेसगृहगेहनीभक्तिशुभतत्रअवतारभूभारहर्ता॥ भक्तसंकष्टअवलोक्यपितुवा॰
क्यकृतगहनगवनवैदेहीभर्ता॥ ७॥ देवकैवल्यसाधनअखिलभालुमर्कटविपुलज्ञा
नसुग्रीवकृतजलनिधिसेतु॥ प्रबलवैराग्यदारुणप्रभंजनतनयविषयवनभवनमिवधूम
ज केतु॥ ८॥ देवदुष्टदनुजेशनिर्वंशकृतदाससहीतविश्वदुखहरनबोधैकरासी॥ अनुजनिजजा
नकीसहिततहरिसर्वदादासतुलसीहृदयकमलवासी॥ ९॥ ५५॥ देवदीनदुखहरणरघु
वार्यकरुणाभवनसमनसंतापपापौघहारी विमलविज्ञानविग्रहअनुग्रहरूपभूदेवरविबु ह
धनर्मदावरारी॥ १॥ देवसंसारकांतारअतिघोरगंभीरघनगहनतरुकर्मसंकुलमुरारी॥

१८ वासनावल्लीखरकंटकाकुलविपुल निबिडविटपाटवी कठिन भारी ॥२॥ देव विविध विधि चितहु
लिषनानिकरसेनोस्तूककाकवनगीधअामिषअहारी ॥ अखिलखलनिपुनछलछिद्रनिर
18 खतसदाजीवजनपथिकमनखेदकारी ॥३॥ देवक्रोधकरमत्तमृगराजकंदर्पमदर्पदर्पहकमा
लअतिउग्रकर्मी ॥ महिषमत्सरक्रूरलोभसूकररूपफेरुछलदंभमार्जारधर्मी ॥४॥ देव
कपटमर्कटविकटव्याघ्रपाखंडमुखदुखदखलनिकरव्रातघातकानना ॥ हृदयअवलोकिय
हशोकशरणंगतंपाहिमांपाहिमांविश्वभरता ॥५॥ देवप्रबलअहंकारदुर्घटमहीधरम
हामोहगिरिगुहानिबिडांधकारं ॥ चित्तवेतालमनुजादमनप्रेतगनरोगभोगोघवृश्चिक
विकारं ॥६॥ देवविषयसुखलालसादंशमशकादिखलझिल्लिरूपादिसबसर्पस्वामीतत्रआ
त्प हीनवविषमभयानाथश्रमयमंदव्यालारिगामी ॥७॥ देवघोरअवगाहभवआपगापाप
जलपूरदुःप्रेक्ष्यदुस्तरअपारं ॥ मकरषडवर्गगोनक्रचक्राकुलंकूलशुभअशुभदुखतीव्रधा नव
रं ॥८॥ देवसकलसंघटपोचसोचबससर्वदादासतुलसीविषमगहनग्रस्तं ॥ त्राहिरघु
वंसभूषणकृपाकरिकठिनकालविकरालकलित्रासत्रस्तं ॥९॥५९॥ देवनौमिनारायणंनरम
करुणाकरंध्यानपारायणंज्ञानमूलं ॥ अखिलसंसारउपकारकारनसदयहृदयतपनिर १८
तप्रणतानुकूलं ॥१॥ देवश्यामनवतामरसदामद्युतिवपुषछविकोटिमदनार्कअगनितप्र

न

कासं॥ नरकनरमनीयराजीवलोचनललितवदनशकेशाकवनिकरहासं॥२॥देवसकलसौंदर्य-

निधिविपुलगुणधामविधिवेदबुधपरांमुखेक्षितश्रमानं॥ अरुणपदकंजमकरंदमंदाकिनिम-

धुपमुनिहंदकुर्वेलिपानं॥३॥देवशाकवेष्टितश्रीरमारमदभंगाकृतक्रोधगतलोभरतब्रह्मचा-

री॥ मारकंडेयमुनिवर्यहितकौतुकीविनहिकल्पांतप्रभुप्रलयकारी॥४॥देवपुन्यवनपो-

लसालवैद्रिकाश्रमसदासीनपद्मासनंतेमेकरूपं॥ सिद्धयोगेंद्रहंदारकानंदप्रदभद्रदायकक-

चिताउंसं पशीश्रुतिश्रनुपं॥५॥देवमानमदमंगगंमदक्रोधलोभादिपंचेतद्रूगभुवनभर्ता॥ दुहवमलसरदागभ-

वलप्रलसहसुअतिभुरिनिर्दयक्रूरकर्मकर्ता॥६॥देवविकटतलवकुकचुरधारप्रमदांदर्पकेदर्प तिरवुर

घरवकुधीरा॥ धीरगंभीरमनधीरकारकतत्रकेवराकावर्यविगतसारा॥७॥देवपरहृत्वंदंघ म

मलभ्रुसंगानिसाध्यनाध्यनहीहाधरहनिजष्टी॥ दर्शनारतदेससंत्रासितमायापासत्राहि-

हस्त्राहिरुद्रजानीकष्टी॥८॥देवसासतलसीरीनधर्मसंमलहीनभ्रमितश्रुतिचरमतिमोह-

ग्रासी॥ रिहिश्रवलंवनविलंवश्रीभोजकरचकधरतेजवलरासी॥९॥१३॥देवसकलस्व-

लवंकरश्रानंदवनपुन्यकृतविंहमाधवहृदविपतिहारी॥ यस्यांघ्रिपाथोजअजशंभुसनका-

दियुकशेषामुनिहृंदश्रलिनिलयकारी॥ देवकालगजराजमृगराजदनुजेसवनदहनपा-

वकमोहनिशिदिनेसं॥ चादिभुजचक्रकौर्मेदकीयजलधामसरसिजोपरि कमल भृंगजिहंसं॥२

दृडधर

२४ देवश्यामलमरकतस्यामकामसतकोटीकृविपीनपटतड़िन्मंवजलदनीलं॥ अरुणसतपत्र
लोचनविलोकनिचारुप्रणतजनसुखदकरुणाद्रिसीलं॥ ३॥ देवमुकटकुंडलतिलकअलक
19 अलिव्रतनैवभ्रुकुटीद्विजअधरवरचारुनासा॥ रुचिरसुकपोलदरग्रीवसुखसींवहरिइंदु
करकुंदमिवमधुरहासा॥ ४॥ देवउरसिवनमालसुविशालनवमंजरीभ्राजश्रीवत्सलांछ
पर नमुदारं॥ परमब्रह्मन्यअतिधन्यगतमन्युअजअमितबलविपुलमहिमाअपारं॥ ५॥ देवहारकेयू
रकरकनककंकनरतनजटितमनिमेखलाकटीप्रदेसं॥ जुगलपदनूपुरामुखरकलहं
सवत्सुभगसर्वांगसौंदर्यवेसं॥ ६॥ देवसकलसौभाग्यसंयुक्तत्रैलोकश्रीदक्षदिसिरुचिर
वारीशकंन्या॥ बसतविवुधापगानिकटतटसदनवरनयनविरचितिनरतेनीयन्या॥ ७॥ देवअ
खिलमंगलभवननिविडसंसयदमनसमनहृजनारदीकष्टहर्ता॥ विष्णुकृतविश्वहित
अजीतगोतितसिवविश्वपालनहरनविश्वकर्ता॥ ८॥ देवज्ञानविज्ञानवैराग्यऐश्वर्य
निधिसिद्धिअनिमादिदेभूरिदानं॥ ग्रसितभवव्यालअतित्रासतुलसीदासत्राहिश्रीरमन
हिधि अरगारिजानं॥ ९॥ २१॥ यहैपरमफलपरमवडाई॥ नषसिषरुचिरविंदुमाधवछविनिरषहू
रागजासा नयनअघाई॥ विसदकिसोरपीनसुंदरवपुस्यामरुचिरअधिकाई॥ नीलकंजवारिदतमा २४
पर लमनिइनतननेहूतिपाई॥ मृदुलचरनसुभचिन्हरुचिरनखअतिसूतउपमाई॥ अरुनबी

लपाछोजउसवजनुमनिजनरलसमुदाई ॥ जानरूपमनीजरतिमनोहरन्हपुरअनिसखे
दाई ॥ जनुहरउरहरीविविधवेषधरिरहेसरभवनवनाई ॥ करतिनदरटतचारुकिंकनिरवअ
नुपमवरनिनजाई ॥ हेमजलजकीकलिनमध्यजनुमधुकरसुखरहाई ॥ उरविशालवृ
गुचिन्हचारुअतिसूचतकोमलताई ॥ कंकनहारविविधिभूषणविधिरचेनिजकरम
नुलाई ॥ गजमनिमालबुंजअ्रानककहिजातिनपहिकनिकाई ॥ जनुउडुगनमेडलवारिदपर
नवग्रहरचीअथाई ॥ भुजगभोगभुजदंडकंजदरचक्रगदावनिआई ॥ छोभासीवग्रीवचिवु
काधरवदनअमितछविकाई ॥ अलिसकुंदकुंडलरामिनिहुतिदशननदेषिलजाई ॥ ना
न सानैनकपोलकलितश्रुतिकुंडलधमोहिभाई ॥ कुंचितकचसिरमुकुटभालपरतिलक
कहैासमुझाई ॥ अलषतछविनबनगरेषरंहमहरहितजिचंचलताई ॥ निर्मलपीतदुकूलअनु
पमउपमाहियनसमाई ॥ बहुमनिजुततिरिनीलसिषरपरकनकवसनरुचिराई ॥ दहंभा न
नु गअंगसहितरइदिरामअधिकललिमाई ॥ हिमलताजवनरुतमालठिगनीलनिचोल
औढाई ॥ समसारदशेषश्रुतिमिलिकरिशोभाकहिनसिराई ॥ तुलसीदासमतिमंदद्वं
दरतकहेकौनविधिगाई ॥ १८ ॥ मनईतनोईहैयातनकोपरमफल ॥ सबअंगसुभगविंदुमा
धवछविततजिस्वभावअवलोकएकपलतरुनअरुनअंभोजवरणमृदूनषदुतिदृदय

रागजयति श्री

२० तिमिरहारी॥ कुलिस कंज जव जलज रेष वर अंकुस पाग जम नव सकारी॥ जंघ जानु कनक सम ने नूपुर
मेखल करि लट तट मधुरवानि॥ त्रिवली उदर गंभीर नाभी सर जहं उपजे विरंचि ज्ञानी॥ उरसि नि
20 माल्य दिव्य अति शोभित विप्र चरन चिन्ह कह करखे॥ स्याम तामरस दाम वरन वपु पीत वसन
शोभा वरषे॥ कर कंकन केयूर मनोहर दन मोद मुद्रिका न्यारी॥ गदा कंज दर चारु चक्रधर नाग
सुंड सम भुज चारी॥ कंवु ग्रीव छवि सीव चिवुक द्विज अधर अरुन उन्नत नासा नव राजीव न
यन शशी आनन सेवक सुखदाई॥ विसद हास मारु चिर कपोल श्रवन कुंडल सिर अलक कुंति
लक भाल भ्राजै॥ ललित भ्रकुटि सुंदर चितवनि वनै वर निरखि मधुप अवलि लाजै॥ रूपशील गु
न धाम निरदत दिसि सिंधु सुता रत पद सेवा॥ जाकि कृपा कटाक्ष चहत हर विधि मुनि मनुज दनु
ज देवा॥ तुलसीदास भवत्रास मिटे तव जव चितवन हि सरूप अटकै॥ नाहित दाम मलीन हीन र
मति कोटि जनम भ्रमि भ्रमि भटकै॥ ६५॥ राग बसंत॥ वंदौ रघुपति करुणा निधान॥ जाते छू
पेद टे हि भव जान रघुवंस कुमुद सुखप्रद निशेश॥ सेवित पद पंकज अज महेश॥ निज भक्त ह
दय पाथोज भृंग लावन्य वपुष अगनित अनंग॥ अति प्रवल मोह तम मार तंड अज्ञान गहन
पावक प्रचंड॥ अभिमान सिंधु कुंभज उदार॥ सुरंजन भंजन भूमि भार॥ रागादि सर्प गन पन्नगा
रि॥ कंदर्प नाग मृगपति मुरारी॥ भवजलधि पोत चरनार विंद॥ जानकी रवन आनंद कंद॥ २०

हनुमंतप्रेमवापीमराल॥ निःकामकामधुकगोदपाल॥ त्रैलोकतिलकगुनगाहनरामके
हैतुलसीदासविश्रामधाम॥ ८८॥ रामरामरमुरामरामरमुरामरामरटुजीहीरामना।
मनवनेहमेहकोमनहठिहोहीपपीहा॥ सबसाधनफलकूपसरितसरसागरसलिल
निरासा॥ रामनामरतिस्वातिसुधासुभसीकरप्रेमपीयासा॥ गरजौतरजिपाषानबरु
षपविप्रीतिपरषिजियजानी॥ अधिकअधिकअनुरागउमगउरपरपरमितपहीचानी॥
रामनामगतीरामनाममतिराममामअनुरागी॥ ह्वैगयेहैजेहोहीगेतेत्रिभुवनगनीयत
बडभागी॥ एकअंगमगअगमगमनकरबिलंबुनछिनछिनकाहै॥ तुलसीहीतअपनो
अपनिदिसिनिरुपाधिनेमनिबाहै॥ ६७॥ रामजपुरामजपुरामजपुबावरे॥ घोरभवनिर
निधिनामनिजनावरे॥ एकहीसाधनसबरिधिसिद्धिसाधिरे॥ ग्रसेकलीरोगजोगसंजम।
समाधिरे॥ भलोजोहैपोचजोहैदाहिनेजोबामरे॥ रामनामहीसोंअंतसबहीकोकामरे
जगनभवाटिकारहीहैफलिफूलिरे॥ धूंआकेसेधोरहरदेषितूनभूलिरे॥ रामनामछा
डीजोभरोसोकरेऔररे॥ तुलसीपरोसोत्यागीमागेकूरकौररे॥ ८८॥ रामनामजपुजी।
यमसदासानुरागरे॥ कलिनविरागजोगजगतपतपत्यागरे॥ रामनामबुमिरणसबविधिही
कोसातुरे॥ रामकोबिसारीबोनिषेदसिरताजरे॥ रामनाममहामनिफनिजगजालरे

२१ मनिलिषफनिज्ञियेब्याकुलब्याहालदे॥ रामनामकामतरुदेतफलचाहे॥ कहनयुरान
वेदपुरानितपुरारीसे॥ रामनामप्रेमपरमारथकोसारहै॥ रामनामतुलसीकोजीवनअधारहै
रामरामक रै॥ रामरामरामजीवजौलौंनमजपिहै॥ तौलौंकहूंजोहिनिहुंतापनमीहै॥ सुरसम
नी रीतिरविनुनिरहुखपाईहै॥ सुरतरुनरलोकहीसरिरसनाईहै॥ कुटिकीजननविसेषिवा
योजाईगो॥ देहहेविषभोजननसुधासोसानिधाईगो॥ जोगनवानमनसुखसुपनेनसोईहै॥
21 जनमजनमजुगजुगजगरोईहै तुलसीतिलोकतिहूंकालतोसोदीनको॥ रामनामहीं
कीगतिजैसेंजलमीनको॥ १०॥ सिमरुसनेहसोंतूनामरामरायको॥ संमलनिसंबिलीको
सखाअसहायको॥ भागहैअभागनकोगुनगुनहीनको॥ गाहकगरीबकोदयालदानिदी
नको॥ कुलअकुलीनकोसुनोहैवेदसाखिहे॥ पांगुरेकेहाथपायआंधरेकोआंखीहै॥ माय
बापभूखेकोअधारनिराधारको॥ सेतभवसागरकोहेतुसुखसारको॥ पातिनपावनरामना
मसोनदूसरो॥ सुमिरसुभूमिभयोतुलसीसोऊसरो॥ ११॥ भलोभलीभांतिहैजोमेरेक
हेलागीहै॥ मनरामनामसोंसुभावअनुरागीहै॥ रामनामकोप्रभावजानतजूडीआगिहै
सहितसहायकलिकालभीरुभागिहै॥ रागरामनामसोंविरागजोगजागिहै॥ रामविधि २१
भालहूंनकरमदागदागीहै॥ रामनाममोदकसुधासनेहयागीहै॥ पीयपरतोषतौनहीं

रह्यस्वामिहै॥रामनामकामनकनोईजोरहैमांगिहै॥तुलसीदासस्वारथ्थपरमारथोन
वोरहीहै॥ऐसेहूंसाहेबकीसेवासोहोतनचोरदे॥आपनोनहूजैनकहैकोरांकरोरदे॥
मुनिमनअगमसुगमसमायवापसो॥कृपासिंधुसहजसषासनेहीआपसो॥लोक
वेदविदितवडोनरघुनाथसो॥सवदिनसवदेससवहीकेसाथसो॥स्वामिसरव
ग्यसोंचलेनचोरीचारकी॥प्रीतिपहीचानियहरीतिदरवारकी॥कायनकलेसलेस
लेनमानिमनकी॥सुमिरेसकुचिरुचिजोगवतमनकी॥रीझेवसहोतषिजेदेतनिज
धामरे॥फुलतसकलफलकामतरुनामरे॥वेचेषोटोदामनमिलेनराषेकामरे॥सो
उतुलसीनेवाज्योऐसेराजारामरे॥७२॥मेरोभलोकीयोरामआपनीभलाईहोतो
सांईद्रोहयैसेवकहोतसांई॥रामसोवडोहैकोनमोसोकोनछोटोरामसोषरोहैकोनमो
सोषलषोटो॥लोगकहेरामकोगुलामहोंकहावौ॥एतिवडोअपराधमनभवन
वावौ॥पाथमाथेंचढेतृनतुलसीज्योनीचो॥वोरतनताहीवारीजानिआपसींचो॥
७३॥जागुजागुजागुजीवजडेहैजगजामिनी॥देहग्रहनेहजानुजैसेघनदामिनी॥सो
वतसपनेहींसहेसंसृतसंतापरे॥वूड्योम्रगवारिषायोजेवरीकेसांपरे॥कहैवेदवुधतूतोवू
झिमनमाहीरे॥दोषदुषसपनेकेजागेहीयेजाहिरे॥तुलसीजागेतेजाइतिहूंतापं

२२ नाइरे॥रामनामसुविकविसहजसुभाइरे॥७४॥जानकीसकीकृपाजगावतीसुजानजीव
22 जागीत्यागिमूढतानुरागश्रीहरे॥करिविचारतजिविकारभजुउदाररामचंद्रभद्रसिंधुदीन
बंधुवेदवदितरे॥मोहमायाकोहूकामनिसिविसालकालविपुलसोयोखोयोसोअ
नुपरूपस्वप्नजूपरे॥अवप्रभातप्रगटज्ञानभानकेप्रकाशवासनासरागमोहद्वेषनि
विडितमटरे॥भागेमदमानचोरभोरजानिजातधानकामक्रोधलोभछोभनिकरअप
टरेदेषतरघुपतिप्रतापवीतेसंतापपापतापत्रिविधप्रेमआपदूरिहीकरे॥श्रवनसुनिगि
रागंभीरजागेअतिधीरवीरवरविरागतोषसकलसंतआदरे॥तुलसीदासप्रभुकृपाल
निरषिजीवजनविहालभंज्योभवजालपरममंगलाचरे॥७५॥षोटोषरोरावरोहौरा
वरीसौंरावरेसोंझूठोकहौगोजानौसवहीकेमनकी॥करमवचनहीएकाहैनक
पटकीएऐसेहठजैसेगांठिपानीपरेसनकी॥दूसरोभरोसोनाहिवासनाउपासनाकी
वासवविरंचिसुरनरमुनिगनकी॥स्वारथकेसाथीमेरेहाथीस्वानलेवादेईकाहूतौ
नपीररघुवीरदीनजनकी॥साईसभासादरलवारभयदेवदिव्यदुसहसासतिकी
जैआगेह्यानजनकी॥साचेपरेंपावौपानपाँचमेपनप्रमानतुलसीचातकआसरामस्या २२
मघनकी॥७६॥रामकोगुलामनामरामबोलैराख्योकामयहीनामद्वैहौं॥कवहूंकहतहौ

राम

रोटीलुगानीकेराषैआरोकोंवेदभाषैभलोहूंहोंनेरोनानेंआनंदरलहरत हौ॥वांधोहोंकर
मजेद्रगरवगूढनिगद्रसुननतुमसहहोलोसासतिसहत हों॥आरहूंअनाथकोपालपाल
कृपालुलीन्योकीनिदीनदेख्योरूचितरहत हौ॥तुलस्योजैसोहीकह्योमेहूंचेरोहूंहौं॥राव
रोजुमेरेकोउकहूंनाहीचरननगहत हौं॥मीजैसोगुरुचीठिअपनावरोहोबांहवोलसेवक
सुखदसदाविरदवहत हों॥लोककहेपोचसोनसोचनसंकोचमेरेव्याहूनवरेषीजाति
पांतिनचहत हौ॥तुलसीअकाजकाजरामहीकेरीझेषीझेंप्रीतिकीप्रतीतिमनमुद्रितरहत
हौ॥७७॥जानकीकेजीवनजगतहितजगतपतिजगतहीसरघुनाथराजीवलोचनरामस
रदविधुवदनसुखसीललछीसदनसहजसुंदरतनसोभाअगनितकाम॥जगतपितामस
मातसुगुरुसुहृदमीतसबकोंदाहिनोंदीनवंधुकाहूकेंनवाम॥आरतहरनसरनदसु
वलितदानिप्रणतपालकृपालपतितपावननाम॥सकलविस्ववंदितसकलसुरसेवित
आगमनिगमकहेरावरेंगुनग्राम॥यहीजानिकैतौतुलसीतिहारोजनभयोन्यारोकेंगा
निवोजहानतेंविहारीवगुलाम॥७८॥देवदीनकोदयालदानिदूसरोनकोई॥जाहिदीनत राग टोडी
ताकहोंमेंदीनदेषोसोई॥त्रिभुवनतिहुंकालविदितवदतवेदचारी॥आदिअंतमध्यराम
साहेवीतुम्हारी॥पाहनपसुकपिविहंगअपनेकरलीन्हेमहाराजदसरथकेरंकरा

यकीन्हे ॥ सुरनरमुनिअसुरनागसाहबतौघनेरे ॥ तौलौंजौलौंरावरेननेकुनयनफेरे ॥ तुमहिमा
२२ गिमागनोनमागनेकहावो ॥ सुनिसुभावशीलसुजसजाचनजनआयो ॥ तूगरीबकोनेवा
जहौंगरीबतेरो ॥ बारककहिएकृपालतुलसीतेमेरो ॥ ७९ ॥ तूदयालदीनहौंतूदानिहौंभिखा
23 री ॥ हौंप्रसिद्धपातकीतूपापपुंजहारी ॥ देवनाथतूअनाथकोअनाथकोनमोसों ॥ मोसमा
नआरतनहिंआरतहरतोसो ॥ देवब्रह्मतूहौंजीवहौंतूठाकुरहौंचेरो ॥ तातमातगुरसखा
तूसबविधिहितमेरो ॥ देवतोहीमोहिनातेअनेकमानियेजोभावै ज्यौंत्यौंतुलसीकृपाल
चरणसरनपावै ॥ ८० ॥ देवऔरकाहिमागियेकोमांगनोनिवारै ॥ अभिमतदातारकौनदुख
दरीद्रदारै ॥ देवधर्मधामरामकामकोटिरूपरूरो ॥ साहेबसबविधिसुजानदानिखड्गसूरो
देव ॥ सुसमैदिनद्वैनिसानसबकद्वारबाजे ॥ कुसमयदसरथकेदानितेंगरीबनिवाजे ॥
सेवाविनगुनविहिनदीनतासुनायजेजेतेनिहालकएतेफूलेफिरतपाय ॥ देवतुलसी
दासजाचकरुचिजानदानदीजे ॥ रामचंद्रचंद्रतूचकोरमोहीकीजे ॥ ८१ ॥ दीनबंधुसु
खसिंधुकृपाकरकारुनिकरघुराई ॥ सुनहुनाथमनजरतत्रिविधिज्वरकरतफीरतबौ
राई ॥ कबहुंजोगरतभोगनिरतसठहठिवियोगबसहोई ॥ कबहुंमोहबसद्रोहकरतबहु २२
कबहूंदयाअतिसोई कबहूंदीनमतिहिनरंकतरकबहूंभूपअभिमानि ॥ कबहूं मूढपंडि

न बिरंचि बरनत कबहूं परमित न ताली॥ कबहूं देखि जनापन मयशि सुमयक बहू नाहि मय भासै॥ सं
त्रिन संभव पावन सरूप सुषबितु सरीर कृपा न नमासै॥ संजम जप तप नेम धरम ब्रत बहु भेषज समु
दुराई॥ तुलसीदास भव रोग रामपद प्रेम हीन नहि जाई॥ ८१॥ मोह जनित मल लाग बिबिधि
बिधि कोटिहु जतन न जाई॥ जनम जनम अभ्यास निरत चित अधिक अधिक अधिकाई॥
नयन मलिन परनारि निरषि मन मलिन बिषय संग लागे॥ हृदय मलिन॥ बासना मान
मद जीव सहज सुख त्यागे॥ परनिंदा सुनि श्रवन मलिन भय बचन दोष पर गाए॥ सब प्र
कार मलभार लाग निज नाथ चरन बिसराए॥ तुलसीदास ब्रत दान ग्यान तप सुद्धि हेतु श्रु
ति गावै॥ रामचरन अनुराग नीर बिनु कलिमल नास न पावै॥ ८२॥ मो तें कछू न है आई गयो रामजयश्री
जनम जाई॥ अति दुर्लभ तन पाइ कपट तजि भजे न राम बचन मन काई॥ लरिकाई बीते अ
चेत चित चंचलता चौगुने चाई॥ जोबन ज्वर जुवती कुपथ्य करि भयो त्रिदोष भरि मदन बाई॥
मध्य बयस धन हेतु गवायो कृषी बनिज नाना उपाई॥ राम बिमुख सुख लह्यो न सपनेहु
निसिबासर तयो तिहू ताई॥ सेयो नहि सीतापति सेवक साधु सुमति भलि भक्ति भाई॥ सुने
न पुलकि तन न कहे न मुदित मन किए जे चरित रघुबंसराई॥ अब सोचत मनि बिनु भुअंग ज्यों
बिकल अंग दले जरा धाई॥ सिर धुनि धुनि पछितात मिजि कर कोउ न मीत हीत दुसह दाई

२५ प॥ जिन तन मिति निज परलोक बिगार्यो॥ तेल जात रोत दाढ़े दाण॥ तुलसी सुमिरु अन हूर खुन
ण हित सो गयंद ग्राह के एक नाम॥ ८४॥ तौ लपछितैहै मन सी जिहार्थ्यं भयो सुग मनो कें अव
24 सुग्र गाम तन न सम जूथों कनघो वन अकाथ॥ सुख साधन हरि बिमुख वृथा जे सुश्रम फल तहूं न
हित मथत पाथ॥ यह बिचारि तजि कुपथ कुसंगति चल सुपंथ मिलि भले साथ॥ दे सुन मः
सेवक सुनु की रति निरट हि नाम करि गान माथ॥ हृदय आनु यनु वान पानि प्रभु लसे सुनि पर
कटिक से माथ॥ तुलसी दास पवि हृदि घंच से बनाओ मघ रकमल माथ॥ जनि निर खपहितो
समुझै कपलमुप नाथ जानकी नाथ॥ ८५॥ मन माधव कों नेकु निहारहि सुनु सठ सदा रंक के थ
न॥ ज्यौं छिन छिन प्रभुहि संभारहि सोभा सील ज्ञान गुन मंदिर सुंदर परम उदारहि॥ रंजन संत अ
खिल अघ गंजन भंजन बिषय बिकारहि॥ जो बिनु जोग जग्य व्रत संजम गयो चहै भव पारही॥
तौ जनि तुलसीदास निसबासर हरि पद कमल बिसारहि॥ ८६॥ यहै कह्यो सुत वेद चहूं श्रीर
घुबीर चरन चिंतन तजि नाही ठौर कहूं॥ जाके चरन बिरंचि बिसेसे सिद्धि पाई संकर हूं॥ सुक सनका
दि मुक्त बिचरत ते भजन करत अजहूं॥ जद्यपि परम चपल श्री संतत थिर न रहत कतहूं॥ हरि प
द पंकज पाइ अचल भइ करम बचन मनहूं॥ करुणा सिंधु भक्त चिंतामनि सोभा सेवतहूं॥ और सु २५
कल सुर असुर नाग नर खाए उरग कहूं॥ सुक्र चिक कह्यो सोई सत्य तात अति परुष बचन जबहूं

तेउ

तुलसीदास रघुनाथ बिमुष नहि मिटै बिपति कबहूं ॥८७॥ सुनु मन मूढ़ सिषावन मेरो ॥ हरिपद
बिमुष लह्यो न काहूं सुख सठ यह समुझ सवेरो ॥ बिछुरे ससि रबि मन नैननि तें पावत दुख ब-
हुतेरो ॥ भ्रमत स्रमित निसि दिवस गगन महं तहं रिपु राहु बडेरो ॥ जद्यपि अति पुनित सुर-
सरिता तिहूं पुर सुजस घनेरो ॥ तजे चरन अजहूं न मिटत नित बहिबो ताहू केरो ॥ छुटै न बि-
पति भजे बिनु रघुपति श्रुति संदेह निबेरो ॥ तुलसिदास सब आस छाडि कै होहि राम को चे-
रो ॥८८॥ कबहूं मन बिश्राम न मान्यो ॥ निसिदिन भ्रमत बिसारि सहज सुख जहं तहं इंद्रीन
तान्यो ॥ जद्यपि बिषय संग सह्यो दुसह दुष बिषम जाल अरुझान्यो ॥ तदपि न तजत मूढ़ मम-
ता बस जानतहूं नहि जान्यो ॥ जनम अनेक किये नाना बिधि करम कीच चित सान्यो ॥ होइ न
बिमल बिबेक नीर बिनु बेद पुरान बषान्यो ॥ निज हित नाथ पिता गुरु हरि सों हरषि हृदय न-
हि आन्यो ॥ तुलसीदास कब त्रिषा जाय सर षनतहि जनम सिरान्यो ॥८९॥ मेरो मन हरिजू हठ
न तजै ॥ निसिदिन नाथ देउं सिष बहु बिधि करत सुभाव निजै ॥ ज्यों जुवती अनुभवत प्रसव अति
दारुन दुष उपजै ॥ ह्वै अनुकूल बिसारि सूल सठ पुनि षल पतिहि भजै ॥ लोलुप भ्रमत गृहप-
सु ज्यों जहं तहं सिर पदत्रान बजै ॥ तदपि अधम बिचरत तेहि मारग कबहूं न मूढ़ लजै ॥ हौं हार्यो वे
करि जतन बिबिध बिधि अतिसै प्रबल अजै ॥ तुलसीदास बस होइ तबहि जब प्रेरक प्रभु बरजै ॥९०॥

ऐसी मूढ़ता या मन की॥ परिहरि राम भक्ति सुरसरिता आस करत ओस कन की॥ धूम समूह निर
२५ षि चातक ज्यौं तृषित जानि मति घन की॥ नहिं तहं सीतलता न पानि पुनि हानि होत लोचन की
45 ज्यौं गच कांच बिलोकि स्वान जड़ छांह आपने तन की॥ टूटत अति आतुर अहार बस छति बि
सारि॥ आनन की कहं लौं कहौं कुचालि कृपानिधि जानत हौ गति जन की॥ तुलसीदास प्र
भु हरहु दुसह दुष करहु लाज निज पन की॥ ९०॥ नाचत ही निसि दिवस मर्यौ॥ तब ही तें न भयो ह
रि थिर जब तें जीव नाम धर्यौ॥ बहु बासना बिबिधि कंचुकी भूषन लोभादि भर्यौ॥ चर अरु अचर
गगन जल थल मैं कवन स्वांग न कर्यौ॥ देव दनुज मुनि मनुज नाग नहि जाचत कोउ उबर्यौ
मेरो दुसह दरिद्र दोष दुख काहू तौ न हर्यौ॥ थके नयन पद पानि सुमति॥ बल संग सकल बि
छुर्यौ॥ अब रघुनाथ सरन आयो जन भव भय बिकल डर्यौ॥ जेहि गुन तें बस होहु रीझि क
रि सो मोहि सब बिसर्यौं॥ तुलसीदास निज भवन द्वार प्रभु दीजै रहन पर्यौ॥ ९१॥ माधव मो स
मान मंद न कोउ जद्यपि मीन पतंग हीन मति मोहि नहिं पूजै ओउ॥ रुचिर रूप आहार बस्य उन पाव
क लोह न जान्यौ॥ देषत बिपति बिषय न तजत हौ॥ तातें अधिक मैं यान्यौ॥ महा मोह सरिता अपार
मैं संतत फिरत बह्यो॥ श्रीहरि चरन कमल नवका तजि फिरि फिरि फेन गह्यौ॥ अस्थि पुरातन २५
छुधित स्वान ज्यौं भरि मुष पकरै॥ निज तालू गत रुधिर पान करि मन संतोष धरै॥ परम कठ

नभवब्यालग्रसितनहींत्रसितनभयोग्रतिभारी॥ बाहुलतग्रभयएकसरणागतगपतिनाथबिसारी
जलचरबृंदजालग्रंतरगतसिमिटिहोतएककपासा॥ एकहिएकषातलालचबसनहिंदेषतनिजना।
स॥ मेरेग्रघसारदग्रनेकजुगगनतनपारहिपावै॥ तुलसीपतीतपतितपावनप्रभुयहभरोसजी
यग्रावै॥ ९३॥ कृपासोकहाबिसारी॥ रामजेहिकरुणासुनिश्रवनदीनदुषधावतहेतजिधाम॥ ना
गराजबलबिचारिहियहारिचरनचितदिनग्रारतगिरासुनतषगपतितजिचलतनबिलंबनकी
नदितिसुतत्रासत्रसितनिसिदिनप्रहलादप्रतिग्याराषी॥ ग्रतुलितबलमृगराजमनुजतनुदनु
जहत्योश्रुतिसाषि॥ भूपसदसिनृपबबिलोकिप्रभुराषुकह्योनरनारी॥ बसनपूरिग्ररिदर्पदू।
रिकरिभूरिकृपादनुजारि॥ एकएकरिपुसोंत्रासतजनतुमराषेरघुवीर॥ ग्रबमोहिदेतदुस।
हदुषबहुरिपुकसनहरहुभवभीर॥ लोभग्राहदनुजेसक्रोधकुरुराजबंधुषलमार॥ तुलसी
दासप्रभुयहदारुनदुषभंजहुरामउदार॥ ९४॥ काहेतेहरिमोहिबिसार्‍यो॥ जानतनिजमहिमा
मेरेग्रघतदपिननाथसंभार्‍यो॥ पतितपुनीतदीनहितग्रसरनसरनकहतश्रुतिचार्‍यो॥ हौंनहि
ग्रधमसभीतदीनकीधौंबेदनम्रषापुकार्‍यो॥ षगगनिकागजब्याधपाँतिजहँतहँहौंहूँबैठा।
र्‍यो॥ ग्रबकेहिलाजकृपानिधानपरसतपनवारोफार्‍यो॥ जोकलिकालप्रबलग्रतिहोतोतु
वनिदेसतेंन्यारो॥ तौपहरिरोसभरोसदोषगुनतेहिभजतेतजिगारो॥ मसकबिरंचिबिरंचि

२९ समसकुसमक रहुँ अभाव नन्हारो ॥ यह सम मय थ अछत मोहि त्यागहू नाथ कहा कहूं चारो ॥ नाहि
नन कै परत मो कहूँ उरजत पिहौं खलि हारो ॥ वह बड़ी त्रास दास तुलसी प्रभु नाम न हूं ताप न जारो
॥४४॥ तउ न मेरे अघ औगुन गनि हैं जो जम राज काज सब परिहरि यहे ख्याल उर अनि है ॥ चलि है
छूटि पुंज पापन के असमंजस जिय जनि है ॥ देखि खल अधिकार प्रभु सों मेरी भूरि भलाई भ
नि है हसि करि है परतीति भक्त की भक्त सीरो मनि मनि है ॥ ज्यों त्यों तुलसीदास को पालय पनि अप
नायक हिय प्रभुर नि है ॥४५॥ जौ पै जिय धरी हो औगुन जन न के ॥ तो कों कटत तस कुनन न षतें मो पे वि
पुल हंद अघ वन न के ॥ कहिहे को न कलुष मेरे कृत करम वचन अरु मनके ॥ हारहि अमित सेष
सारद श्रुति गनत तएक एक छिन के ॥ जो चित चढ़ै नाम महिमा निज गुन गन पावन पन के ॥ तो तु
लसिहि तारि हौं विप्र ज्यों दसन तोरि जम गन के ॥४६॥ ऐसी हरि करत दास पर प्रीति निज प्र
भु ता विसारि तिनके वस होत सदा एहू रिति ॥ जेही बांधे सुर असुर नाग नर प्रबल करम की डो
री ॥ सोई अबिछिन्न ब्रह्म जसमति हाठि बांध्यो सकत न छोरी ॥ जाकी माया वस विरंचि सिव
नाचत पार न पायो ॥ करतल ताल बजाय ग्वाल जुवतिन्ह सोई नाथ नचायो ॥ विस्वंभर श्रीप
ति त्रिभुवन पति वेद विदित यह लीख बलि सों कछु न चली प्रभुता बरु होइ द्विज मांगी भीख ॥ जा
को नाम लिये छूटहि बहु जनम मरन दुख भार अंबरिक हित लागी कृपानिधि सोई जनमे दस २९

28

बारजोग बिराग ध्यान जप तप करि जेहि खोजत मुनि ज्ञानी॥ बानर भालु चपल पसु पावर नाथ त
हां रति मानी॥ लोकपाल जम काल पवन रबि ससि सब आज्ञाकारी॥ तुलसीदास प्रभु उग्रसे
न के द्वार बेत कर धारी॥ ४५॥ बिरद गरीब निवाज राम को॥ गावत बेद पुरान संभु सुक प्रगट प्र
भाव नाम को॥ ध्रुव प्रहलाद बिभीषन कपिपति जड़ पतंग पांडव सुदाम को॥ लोक सुजस परलोक
सुगति इन्ह में को है राम काम को॥ गनिका कोल किरात आदि कबि इन्हते अधिक बाम को॥ बाजि
मेध कब कियो अजामिल गज गायो कब साम को॥ छली मलीन हीन सब ही अंग तुलसी सो
छीन छाम को॥ नाम नरेस प्रताप प्रबल जग जुग जुग चालत चाम को॥ ४६॥ सुनत सीता
पति सील सुभाउ मोद न मन तन पुलक नयन जल सो नर खेह हि खाउ॥ सिसुपन तें पितु मा
तु बंधु गुरु सेवक सचिव सखाउ॥ कहत राम बिधु बदन रिसौंहैं सपनेहु लख्यो न काउ॥ खेलत सं
ग अनुज बालक नित जोगवत अनट अपाउ॥ जीति हारि चुचुकारि दुलारत देत देवावत दाउ॥
सिला साप संताप बिगत भइ परसत पावन पाउ॥ दई सुगति सो न हेरि हरष हिय चरन छूए
को पछिताउ॥ भव धनु भंजि निदरि भूपति भृगुनाथ खाइ गये ताउ॥ छमि अपराध छमाय पांए
परि इतो न अनत समाउ॥ कह्यौ राज बन दियो नारि बस गरि गलानि गयो राउ॥ ता कुमातु को
मन जोगवत ज्यों निज तन मरम कुघाउ॥ कपि सेवा बस भये कनौड़े कह्यो पवनसुत आउ

२२ देवै कौन कछू रिनिआ हौं धनिका तूं पत्र लिखाउ ॥ आपनाए सुग्रीव विभीषण तिन्ह न तज्यौं छल छा
उ ॥ भरत सभा सनमानि सराहत होत न हृदय अघाउ ॥ निज करुणा करतूति भगत पर चपत चल
27 त चरचाउ ॥ सकृत प्रनाम प्रनत जस बरनत सुनत कहत फिरि गाउ ॥ समुझि समुझि गुन
ग्राम राम के उर अनुराग बढाउ ॥ तुलसीदास अनयास राम पद पैहै प्रेम पसाउ ॥ १०० ॥ जा
उं कहं तजि चरन तिहारे ॥ काको नाम पतित पावन जग केहि अति दीन पियारे ॥ कौन देव बरि
आई विरद हित हठि हठि अधम उधारे ॥ खग मृग व्याध पषान बिटप जड़ जवन कवन सुर
तारे ॥ देव दनुज मुनि नाग मनुज सब माया बिबस बिचारे ॥ तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु कहा
अपनपौ हारे ॥ १०१ ॥ प्रभु तुम बहुत अनुग्रह कीन्हो ॥ साधन धाम बिबुध दुर्लभ तनु मोहि कृपा क
न रि दीन्हो ॥ कोटिहु मुख कहि जात प्रभु के एक एक उपकार ॥ तदपि नाथ कछु और मांगिहौं दीजे प
रम उदार ॥ विषय बारि मन मीन भिन्न नहिं होत कबहूं पल एक ॥ ताते सहौं बिपति अति दारु
न जनमत जोनि अनेक ॥ कृपा डोरि बनसी पद अंकुस परम प्रेम मृदु चारो ॥ एहि बिधि बे
धि हरहु मेरो दुख कौतुक नाथ तिहारो ॥ हैं श्रुति बिदित उपाइ सकल सुर केहि केहि दीन
निहोरै ॥ तुलसीदास यह जीव मोह रजु जेहि बांध्यो सो छोरै ॥ १०२ ॥ यह बिनती रघुबीर गुसा
ईं ॥ और आस बिस्वास भरोसो हरो जीव जड़ताई ॥ चहौं न सुगति सुमति संपति कछु रिधि सि २२

थिविपुलवड़ाई॥हेतुरहितअनुरागनाथपदवढ़ौअनुदिनअधिकाई॥कुटिलकरमलेमोहि
३६ जाहिंजहंअपनीवरिआई॥तहतहजनिछिनछोहछाड़िएकमठअंडकीनाई॥हैजगमैजहल
गियातनकीप्रीतिप्रतितिसगाई॥तेसबतुलसिदासप्रभुसौंसबसिमिटिहोहिएकठाई॥१०४॥जा
नकीजीवनकीवलिजैहौंचितकहैरामसीयपदपरिहरिअवनकतहूंचलिजैहौं॥उपजीउरप
रतितिसपनेहूंसुखप्रभुपदविमुखनपैहौं॥मनसमेतयातनकेवासीन्हइहैसीखावनदैहौं॥
श्रवननऔरकथानहिसुनिहौरसनाऔरनगैहौं॥रोकिहौंनयनविलोकनऔरनसीसई
सहीनैहौं॥नातोनेहरामसोंकरिसवनातेनेहवहैहौं॥यहछरभारताहीतुलसीजगजाकोदा
सकहैहौं॥१०५॥अवलौंनसानीअवननसैहौं॥रामकृपाभवनीसासिरानिजागेफिरिनडसै॥
हौं॥पायोनामचारुचिंतामनिउरकरतेंनखसैहौं॥स्यामरूपसुचिरुचिरकसवटीचितकंच।
नहिंकसैहौं॥परवसजानिहस्योइनइंद्रननिजवसव्हैनहसैहौं॥मनमधुपहीपनकेतुलसीर।
घुपतिपदकमलवसैहौं॥१०६॥महाराजरामाधरयौंधन्यसोई॥गरूवगुनरासिसर्वज्ञसुकृति
सूरसुचिसीलनिधिसाधुतेहिसमनकोई॥कीसकेवटउपलभालुनिसचरसवरिगीधसमदम
दयादानहीने॥नामलियरामकियेपरमपावनसकलनरतरततिनकेगुनगानकीन्हे॥व्याध
अपराधकीसाधराखीकौनपिंगलाकौनमतिभक्तिभेईकौनथौंसोमजाजीअजामिलअधम

२८ मकौं न गज राजनयौं बाजियेई॥ पंगु सुमत नोपिका विद्रु रजु बरी सवही सोध लिप सुद्र ता लेसकै सौ
प्रेम लषि कृस्न कियो आपने ताति न है को सुजन संसार हरि हर को जैसे॥ कोल षस भिल्ल जमन ना
दि षल राम कहि नीच ह्वै ऊंच पद को न पायो दीन दुखद वन श्रीरमन करुणाभवन पतितपावन र
विरद बेद गायो॥ मंद मति कुटिल षल तिलक तुलसी सरीस भयो तिह काल तिहूं लोक को
ई॥ नाम की कानि पहिचानि जन आपनो ग्रसित भव व्याल राष्यौ सरना सोई॥ १०७॥ हे नि को
मेरो देवता कोसलपति राम॥ सुभग सरोरुह लोचन नाम न सुंदर स्याम सियसमेत सो भीत
सदा छवि अमित अनंग॥ भुज विसाल सर धनु धरे कटि सोह निषंग॥ बलि पूजा चाहत नहीं
चाहत एक प्रीति॥ सुमिरन ही मानत भला पावन रीति॥ देइ सकल सुख दुख दहै आरत
जन बंधु॥ गुन गाहि अवगुन हरै अस करुणासिंधु॥ देस काल पूरन सदा बद बेद पुरान सब
को॥ प्रभु सब में सब से सब की गति जान॥ कोटिक कामना पूजै बहु देव॥ तुलसिदास ते
हि सेइय जिहि शंकर सेव॥ १०८॥ वीर महा अवराधिए साधे सिधि होई॥ सकल काम पूरन करै जा
नै सब कोई॥ बेगि बिलंबु न कीजिए लीजै उपदेस महामंत्र जपिए सोई॥ जो जपत महेस मेम तादि
न रघुनम लोहूत सहजनेह॥ संसय समधि अगिनि छमा ममता बलि देहु॥ अघ उच्चाटि मन बस २८
करै मारै मद मार॥ आकरषै सुख संपदा संतोष विचार॥ जिन एही भांति भजन कीयो मिले रघुप

तिनाहि॥ तुलसीदासप््रभुपथ्यचढौजौलेहुनिबाहि॥११९॥ कसनकरहुकरुनहरेदुखसमन
मुरारी॥ त्रिविधितापसंदेहसोकसंसयभयहारी॥ इककलीकालजनितमलमतिमंदमलि
नमननतेहिपरप्रभुनहिकरसंभारकीहिंभांतिजिश्रेजनसबप्रकारसमरथ्यप्रभुमैसबविधि
हीन॥ यहजियजानिद्रवहुसदामैकरमविहीन॥ भ्रमतअनेकजोनीरघुपतिपतिआननमो
रे॥ दुखसुखसहोसदासरनागततोरें॥ तोसमदेवनकोउकृपालसमुझौमनमाही॥ तुलसी
दासहरितोषियसोसाधननाही॥१२०॥ कहूंकहिकहिएकृपानिधेभवजनितविपतिअति॥
इंद्रीसकलविकलसदानिजनिजसुभावरतिजेसुखसंपतिसरगनरकेसंततसंगलागी॥
हरिपरहरिसोईजतनकरतमनमोरअभागी॥ मैअतिदीनदीयालदेवसुनिमनअनुरा
गे॥ जवनद्रवहुरघुबिरधीरकाहेनदुखलागे॥ जद्यपिमैअपराधभवनदुखसमनमुरारे॥
तुलसीदासकोंआसएहबहूपतितउधारे॥१२१॥ कैसोकहीनजायकाकहीयदेवतबवर तु
चनाविचीत्रहरिसमुझिमनहीमनरहीयेसुनिभीतिपरचित्ररंगनहीतनबिनुलीखेचिते न
निज रें॥ धोएमिटेनमरैभीतीदुखपाईए॥ एहीतनहेरें॥ रविकरनीरवसैअतिदारुनमगररूपतेहीमा
ही॥ वदनहीनतेहीग्रसेचराचरपानकरनजेजाहीं॥ कोउकहेझूठसत्यकहेकोउजुगल
प्रबलकरीमाने॥ तुलसीदासपरिहरेतिनिभ्रमसोआपानपेहिचाने॥१२२॥ कैसोकारन

२९ कौन गोसाईं जेहि अपनाय अनाथ जानि मो हीन ज्यौं अपराध की नाईं॥ परम पुनीत संत कोमल॰
गज चित तिनहीं तुम्ह हि बनी आईं॥ तौ कत विप्र व्याध गनिकहि तारेहु कछु रही सगाई॥ काल कर्म
29 गति अगति जिव की सब हरि हाथ तिहारें॥ सोइ कछु करहु हरहु ममता मम फिरौं न तुम्हहीं बि
सारें॥ जौ तुम्ह तजहु भजौं न आन प्रभु यह प्रमान पन मोरें॥ मन बच करम नर्क सुरपुर जहं तहं र
घुबीर निहोरें॥ जद्यपि नाथ उचित न होत अस प्रभु सौं करौं ढिठाई॥ तुलसीदास सीदत नि॰
सि दिन देखत तुम्हारि निठुराई॥ ११३॥ माधव अब न द्रवहु केहि लेखें। प्रनतपाल पन तोर सो
र पन जिऔं कमल पद देखें॥ जब लगि मैं न दीन दयाल तैं मैं न दास तैं स्वामी तब लगि जे दु
ख सहे कहे नहिं जद्यपि अंतरजामी तैं उदार मैं कृपन पतित मैं तें पुनीत श्रुति गावै॥ बहुत॰
नात रघुनाथ मोहि तोहि अब न तजे बनि आवै॥ जनक जननि गुरु बंधु सुहृद पति सब प्र॰
कार हितकारी॥ द्वैत रूप तम कूप परौं नहिं सो कछु जतन विचारि॥ सुनु [illegible] करुणावा कर
भव रिज लोचन मोचन भय भारी॥ तुलसीदास प्रभु तव प्रकास बिनु संसय टरै न टारी॥ ११४॥ य
मो सो मोहि समान जग माहीं॥ सब विधि हीन जो दीन मलिन अति लीन विषय कोउ नाहीं॥
तुम सम हेतु रहित कृपाल आरत हित ईश न त्यागी॥ मैं दुख सोक विकल कृपाल केहि का २९
रन दया न लागी॥ नाहिं न कछु औगुन तुम्हार अपराध मोर मैं माना॥ ज्ञान भवन तनु दी

यानाथसोइपाइनमैप्रभुजानावै॥तुकरिलक्ष्मीलिस्वसंतहिहृदयनमर्षीलगावै॥सारहित
हृतभाग्यनरभोवस्त्रविसोकहांकीसिपावै॥सवप्रकारमैकठिनमदुलहरिदृढविचारजी
यमोरें॥तुलसीदासप्रभुमोहसंषलाछुटहितुमरेछोरें॥माधोमोहपासक्योंटूटै॥बाहरको
टिउपायकरीअभ्यंतरग्रंथिनछूटै॥घृतपूरणकराहअंतरगतसशिप्रतिबिंबदेषावै॥ईंधन
अनललगाईकल्पसतऔटतनासनपावै॥तरुकोटरमहवसविहंगतरुकाटेमरेनजैसे न
॥साधनकरियविचारहिनतनसुधहोईनहितैसे॥अंतरमलिनविषयमनअतितनपावनकर
रेंयहमारें॥मरैनउरगअनेकजतनवलमीकविविधिविधिमारें॥तुलसीदासहरिगुरु
करुणाविनुविमलविवेकनहोई॥विनविवेकसंसारघोरनिधिपारनपावैकोई॥११५॥मा
धोअसितुम्हारियहमायाकरिउपायपचिमरियतरियनहीजवलगीकरहुनदायासुनिय
य गुनीयसमुझीयसमुझाईदसाहृदयनहीआवै॥जेहीअनुभवविनुमोहजनितदारुनभव
विपतिसतावै॥जेहिकेभवनविमलचिंतामनिसोकतकाचवटोरै॥सुपनेपरवसपरै॥जागि
देषिनकेहिजाइनिहोरै॥ब्रह्मपयूषमधुरसीतलजोपैमनसोरसपावै॥तोकतमृगजल
रूपविषयकारननिसिवासरधावै॥ज्ञानभक्तिसाधनअनेकसवसत्यझूठकछुनांहि॥तुल
सिदासहरिकृपामिटैभ्रमयहभरोसजीयमाही॥११६॥हेहरिकौनदोषतोहिदीजे॥जेहीउपा

३० यसपनेहुंदूहुंजोभगतिसोइनिसिवासरकीजै॥ जानतअर्थअनर्थरूपतमकूपपरनतिहि
लागै॥ तदपीनतजतस्वाननदतखरज्यौंफिरितविषयअनुरागै॥ भूतद्रोहकृतमोहवस्यहित
आपनमैनविचारा॥ मदमत्सरअभिमानज्ञानरिपुइनमहंरहतिअपारा॥ वेदपुरानसुनतस
30 मुझतरघुनाथसकलजगव्यापी॥ वेधतनहिंश्रीखंडवेनुइवसारहीनमनपापी॥ मैंअपरा
धसिंधुकरुणाकरजानतअंतरजामी॥ तुलसीदासभवव्यालग्रसिततवसरनउरगरिपुगा
मी॥ ११८॥ हेहरिकौनजतनसुखमानहे॥ ज्यौंगजदसनतथामममकरनीसवप्रका।
रतमजानहुं॥ जोकछुकहियकरियभवसागरतरियवछपदजैसें॥ रहनिआनविधिक
हियआनहरिपदसुखपाइयकैसें॥ देषतचारुमयूरवचनसुभवोलिसुधाइवसानि॥ सविष
उरगआहारनिठुरअसयहकरनिवहवानि॥ अखिलजीवबत्सलनिरमत्सरचरनकम
लअनुरागी॥ तेतोहरिप्रियरघुवीरधीरमतिअतिसयनिजपरत्यागी॥ यद्यपिममऔगु
नअपारसंसारजोगरघुराया॥ तुलसीदासनिजगुनविचारिकरुनानिधानकरुदाया॥
११९॥ हेहरिकौनजतनभ्रमभागै॥ देषतसुनतविचारतयहमननिजसुभावनहिंत्यागै॥
भक्तिज्ञानवैराग्यसकलसाधनएहिलागिउपाउ॥ कोउकछुकहोदेउकछुआसिषयहवा ३०
सनाहृदयतेंनजाइ॥ जेहिनिससकलजीवसूतहितवकृपापात्रजननजागै॥ निजकरनीवि।

परीनदेषिमोहीसबुरकि महाभयलैगै॥ यद्यपिभ्रममनोरथविधिवससबखरहितरूषपा
वै॥ चित्रकारकरहीनयथास्वारथविनचित्रबनावै॥ ऋषीकेससुनिनाउजाउंयलियहभरो
सजियमोरें॥ तुलसीदासइंद्रीसंभवदुषहरेंवनेप्रभुतोरें॥ १२०॥ हेहरिकसनहरहुभ्रमभा
री॥ जद्यपिमृषासत्यभासैजवलगिनहीकृपालतुम्हारी॥ अर्थअविद्यमानजानैंसंसृतन॰ विनु
हिजायगोसांई॥ विनबांधेनिजहठसठपरवसपस्योकीरकीनांई॥ सपनेब्याधिविविधिबा
धाजनुमृत्युउपस्थितिआई॥ वैदअनेकउपायकरैजागेंविनपीरनजाई॥ श्रुतिगुरसाधु
सम्रतसंमतयहदृस्यसदादुषकारितेहिविनुतजेंभजेंविनुरघुपतिविपतसकेकोटारीव
हुउपायसंसारतरनकोविमलगिराश्रुतिगावै॥ तुलसिदासमेंमोरगएविनजियसुष
कवहूनपावै॥ १२१॥ हेहरियहभ्रमकीअधिकाई॥ देषतसुनतकहतसमुझतसंसयसंदेह॰
नजाई॥ जोजगमृषातापत्रयअनुभवहोईकहहुकेलेषें॥ कहीनजाईमृगवारिसत्यभ्रमतेंदुष॰ दि
होयविसेषें॥ सुभगसेनसोवतसुपनेवारिधिबुडतभयलागै॥ कोटिहनावनपारपावसोज
वलगीआपुनजागै॥ अनविचाररमनीयसदासंसारभयंकरभारी॥ समसंतोषदयाविवि
वेकतेंव्योहारीसुषकारी॥ तुलसिदाससवविधिप्रपंचजद्यपिझूठश्रुतिगावै॥ रघुपति।
भक्तिसंतसंगतिविनुकोभवत्रासनसावै॥ १२२॥ मेंहरिसाधनकरेनजानी॥ जसआमयभेष

३१ जनककीन्हतसदोषकहनदरुआनी॥सपनेन्रूपकहुघटैविप्रवधविकलफीरैअघलागैं॥वा
31 जिमेधसतकोटिकरैनहीसद्धहोइविनुजागै॥स्रुगमहसर्पविपुलभयदायकप्रगटहोइ।
अविचारें॥वहुआयुधधरिवलअनेककरिहारहिमरैनमारे॥निजभ्रमतेंरविकरसंभवसा
गरअतीभयउपजावै॥अवगाहतवोहितनवकाचढिकवहूपारनपावै॥तुलसीदासजगआ
पसहितजवलगिनिर्मूलनजाई॥तवलगिकल्पकोटिउपायकरिमरियतरियनहिभाई॥१२३॥ य
असकछुसमुझिपरतरघुराया॥विनतवकृपादयालदासहितमोहनछूटै॥मायाँवाक्यग्या
नअत्यंतनिपुनभवपारनपावैकोई॥निसीग्रहमध्यदीपकीवातनतमनिवृत्तनहिहोइजैसेको
उ॥एकदीनदुखितअतिअसनहीनदुखपावै॥चित्रकल्पतरुकामधेनुग्रहलिखेंनविपतिन॰
सावै॥षटरसवहुप्रकारभोजनकोउदिनअरुरैनिवषानै॥विनुवोलेसंतोषजनितसुषषा
कदिन्नदि इपैंजानै॥जवलगिनहिनिजहृदिप्रकासअरुविषयआसमनमाहि॥तुलसिदासतवलगि
जगजोनिभ्रमतसपनेहुसुषनाहि॥१२४॥जोनिजमनपरहरैविकारहैतौकहद्वैतजनि ह
तसंसृतिदुषसंसयसोकअपार॥सत्रुमित्रमध्यस्थतीनियेमनकीनेंवरिआई॥त्यागनग्रहनउपे स्य
छनीयअहिहाटकतृनकीनाई॥असनवसनपसुवस्तुविविधिविधिसवमनिमहरहजे ३१
सें॥स्वर्गनरकचरअचरलोकवहुवसतमध्यमनतैसें॥विटपमध्यपुत्रिकासूत्रमहकंचु

किबिनबिहँनायमननमहतग्यालीनेननानातनप्रगाहतश्रीसरयाप॥ रघुपतिभक्तिवाबिछा
लितचितबिनप्रयासहीसूझै॥ तुलसिदासकहचिदबिलासजगबूझतबूझतबूझै॥१२५॥
मैंकेहिकहौंबिपतिअतिभारी॥ श्रीरघुबीरधीरहितकारी॥ ममहृदयभवनहरितोरा॥ तहा
आयबसेबहुचोरा॥ अतिकठिनकरहिबरजोरा॥ मानैनहिबिनैनिहोरा॥ तमलोभमोहअ
हंकारा॥ मदक्रोधबोधरिपुमारा॥ अतिकरहीउपद्रवनाथा॥ मर्दहिमोहीजानिअनाथा॥
मैंएकअमीतबटपारा॥ कोउसुनैनमोरपुकारा॥ भागेहुनहिनाथउबारा॥ रघुनायककर
हुसम्हारा॥ कहतुलसिदाससुनुरामा॥ लूटहितसकरतवधामा॥ चिंताएयहमोहीअपा
रा॥ अपजसनहिहोइतुम्हारा॥१२६॥ मनमेरेमानैसिखमेरी॥ जोनिजभक्तिचहैहरिकेरी॥ उ
रआनहीयभुक्तिनहीतजेते॥ सेवहितेतुअपनपोचेते॥ दूखसुखऔअपमानबड़ाई॥ सबसम
लेखहिबिपतिबिहाई॥ सुनुसठकालग्रसितयहदेही॥ जिनतेहीलागिबिदूखहिकेही॥ तु
लसीदासबिनुअसिमतिआये॥ मिलहिनरामकपटलौलाये॥१२७॥ मेजानिहरिपदर
तिनाही॥ सपनेहुनहिबिरागमनमाही॥ जेरघुबीरचरनअनुरागी॥ तेसबभोगरोगसमत्या
गी॥ कामभुअंगडसतजबजाही॥ बिषयनिंबकटुलगतनताही॥ असमंजसअसहृदयबिचा
री॥ बढतसोचनितनूतनभारी॥ जबकबरामकृपादुखजाई॥ तुलसीदासनहिआनउपाई॥

३२ १२८॥सुमिरुसनेहसहितसीतापति॥रामचरनतजीनहिनआनगति॥जपतपसंजमजो
32 गसमाधी॥कलिमतिबिकलनकछुनिरुपाधी॥करनहुसुकृतननपापसिराही॥रकतबीजजि
मिबाढतजाही॥हरणएकअघअसुरजालिका॥तुलसिदासप्रभुकृपाकालिका॥१२९॥रु
चिसोंरसनाहरामरामरटतसुमिरतसुभसुकृतबढतअघअमंगलघटत॥बिनुश्रमक
कलिकलुषजालकटुकरालकटतदिनकरकेउदयजैसें॥तमतिमिरफटतजागजोग
जपबिरागतपसुतीरथअटतलालचलघु॥तेरोदेखितसीतोहिहटत॥१३०॥रामराम
रामरामरामजपतमंगलमुदउदितहोतकलिमल॥छलछपनकबहुकलहफलर
साल॥बबुरकीजवपालत॥हारहिजनिजनमजायगालगुलगावतकालकर्मगुनसुभावसु
वकेप्रीसतपतरामराममहिमाकीचरचाचलेंचुपत॥साधनबिनुसिद्धिसकलबिकललो
गलपतकलिजुगवरवनिजुलवनिजनामनगरखपत॥नासोंप्रतीतीप्रीतिनिदरदयसोथि
रथपत॥पावनकियरावनरिपुतुलसिहूसेअपत॥१३१॥पावनप्रेमरामचरनजनमलाभपर
तु मरामनामलेनहोतसुलभसकलधरम॥जोगमखविवेकबिरतिवेदविदितकरम॥करिवेक
हुकटुकठोरसुननमधुरनरमतलसीहनिजानिबुझिभूलहिजनिभरम॥तिहिप्रभुकेकहं ३२
सरणहोहिजाहिसवकीसवसरम॥१३२॥रामसेप्रीतमकीप्रीतिरहिजीवजायजीयत॥जे

हिसखसखमानिलेत॥सुखसोसमुफुकियत॥जहतहूंजेहिजोनिजनममहियतालवि
पत॥नहंनहंतेविषयसुखहिचहतलहतनिपतकनविमोहलयौफसौगगनमगनसि
पत॥तुलसीप्रभुसुजसगायवौनसुधापियत॥१३३॥तोसोंहोफिरिफिरिहितसत्यसु
वचनकहतसुनिमनगुनिसुमुफिकैंनसुमनसुगमगहत॥कोटोबड़ोखोटोखरोजग
जोजहारहत॥अपुअपनेकोभलोकोनजानेचहतविधिलमिलगुकीटअबुथसुखसुखी
दुखदहत॥पसुलोपसुपालईसबांधनछोरनहतविषयसुखदभारसिरकोकांधेज्योंव
हतयोहैजियजानिमानिसठतूसासतिसहत॥बायोकिन्छूतविचारहरिनवारिमह
त॥तुलसीतउतनाहिसरणजातैसबलहत॥१३४॥तातेंहौंबारबारदेवद्वारपरिपुकारकर
त॥आरतनरतदीननाकेहूसोंसंकटहरतलोकपालशोकविकलरावनडरडरत॥कासुनि
सकुचेकृपालनरसरिरथरतिकोपिकमुनितियजनकसोकअललजरतसाधनकेहि
सीतलभएसोनसमुझिपरत॥केवटखगसबरिसहजचरनकमलनरततसनखबतोहि
होतनाथयकुतसफलफरनवेपुवेरकपिविभीषणगुरगलानिगरत॥सेवाकेहैरिकि
रामकीयहेसरसभरत॥सेवकभयोपवनपूतसाहिवअनुहरत॥ताकोलियेनामरामसव
कोसुढरढरत॥जानेवीनुरामरीतिपतिवचिपचिजगमरतपरिहरिछलसरणगए३०

२२ हुसेनरत ॥ राग सूहा ॥ रामसनेही सौं तैन सनेह कीयौ ॥ आराम जो आमरन हू कौं सो तन तो ही
दियो ॥ छंद ॥ दियो सब कुल जन मम सरीर संदर हेत जो फल चारि को ॥ जो पाई यं ज्ञित परम पद स्या
33 वत पुरारी मुरारि को ॥ यहु भरत खंड समीप सब रस रिष्य लभ लो संगति भली ॥ तिरी कुमति का
यर कल्पव ली चहति ॥ सो विषफल फली ॥ १ ॥ अज हू समुझि चित देख परमारथ ॥ हे हित सो
जगत हू जा हित तें स्वारथ ॥ छंद ॥ स्वारथ हि प्रिय स्वारथ सों का सों को न बेद बखानई ॥ देखि बल
अहि खेल बरि हरि सो प्रभु हि पहिचानई ॥ पितु मातु गुरु स्वामी अपन पो तिय तनय सेव
क सखा प्रिय लगत जाके प्रेम सों बिनु हेतु हित तूं मैं लषा ॥ २ ॥ दूरि न सो हित हेरि हिये ही ॥ छ
लहि छाडि सुमिरि छोह कीए हैं ॥ छंद ॥ किए छोह छाया कमल कर की भक्ति पर भजन तहि
भजे ॥ जगदीस जीवन जीव को जो सा जस सब सब के सजे ॥ हरि हरि ता विधि हि विधिना पीव ही भि
वता जेहि देई ॥ सो ज्ञान की गति मधुर सुर रति मोदमय मंगल मई ॥ ३ ॥ ठाकुर अति हि बड़ो सील
सरल सुठि ज्ञान अगम शिव हू भेटेउ केवट उठि ॥ छंद ॥ भरि अंक भेटो सजल नयन सनेह पि
थिल बारस सो ॥ सुर सिधु मुनि सब कहत को उन प्रेम प्रिय रघुबीर सो ॥ खग सेवरि निसिचर भा
लु कपि किए आप तें बंदित बडे ॥ ता पर तिन की सेवा सुमिरि जिय जात जनु सकुचनि गडे ॥ ४ २२
स्वामि को भाउ कपो सो जन बउ अस्मानि है ॥ सो चुक्क लमिटि है राम बाल मानि है ॥ छंद ॥ भल

वैरिभयो॥परदारपरधनद्रोहपरसंसारवाछो नितनयो॥७॥देषनहीआईषिरधाई॥जोवेष
पनेहु नाहिवोलाई॥ताकेगुनकछुकहेनजाहीं॥जोअवप्रगटदेषुजगमाही॥छंद॥सोप
गटतनजरजरजरावसव्याधिहलसंतापदेषिपरकेपईद्रीअसकअतिहनवचनकाहुनभा
वई॥गहपालहुतेअतिनिशदरषोनपाननपावई॥ऐसेहुदिसानविरागवहहरसानंग
वढावई॥८॥कहिकोसकैमहिमाभवतेरे॥जन्मएककेकछुकहूहेरे॥चारिषानिसंततनअव(
माही॥अजहुनकरिविचारमनमांही॥छंद॥अजहूंविचारिविकारतजिभजुरामजनस
षदायकं॥भवसिंधुदुस्तरजलरथंभजुचक्रधरसुरनायकं॥विनहेतकरुणाकरउदार
पति अपारमायातारनं॥कैवल्यपतिजगपतिरमाँप्राणपतिजगकारनं॥९॥रघुपतिभक्तिसु
लभसुषकारी॥सोत्रयतापशोकभयहारी॥विनसतसंगभक्तिनहिहोई॥तेतवमिल
हिद्रवहिजवसोई॥छंद॥जवद्रवैदीनदयालराघवसाधुसंगतिपाइऐ॥जेहिदरसपरस
समागमादिकपापरासीनसाइऐ॥जिनकेमिलेहुविपतिसुषसमानअमाननादिकगुन(
भव॥मदमोहलोभविषादक्रोधसवोधतेसहजेहिगए॥१०॥सेवतसाधुद्वैतभयभागे॥श्री
रघुवीरचरनलवलागे॥देहजनितविकारसवत्यागे॥तवफिरिनिजस्वरूपअनुरागे॥छं
द॥अनुरागसोनिजरूपजोजगमेंविलक्षनदेषिए॥संतोषसमसीतलसदादमदंभवंत

३५ 3T
नेलेषिए॥ निर्मल निराम यए॥ कबमते हर्ष सोकुन आपर्दे॥ त्रैलोकपावन सो सदा॥ जाक
डुदसा औसी भई॥ ११॥ जो तिहि पंथ चलही मन लाई॥ नोह रिका हे नेहाँ हि सहाई॥ जो मारग
श्रुति साधु बतावै॥ तेहि मग चलत सबै सुख पावै॥ छंद॥ पावै सदा सुख हरि कृपा संसा
रआसा न निरहै॥ सपनेहु नहि सुख होत दरस न बात को टिक को कहै॥ द्विज सेवकुरुह
रीसंत बिन संसार पार न पाइए॥ यह जानि तुलसिदास त्रासहर न रमापति गाइए॥ १॥ ॥ रागबिना वदन
१२१३५॥ जो पै कृपा रघुपति कृपाल की॥ बैर और के काह सरै हाँ इनबा को बार भ्रम को जो
कोउ कोटि उपाय करै॥ तके नीचु जो मीचु साधु की सो पावर हे ति मीचु मरै॥ बेद बिदित प्रहला
द कथा सुनि को न भक्ति पथ पाउ धरै॥ गज उधारि हरि थप्यो बिभीषण ध्रुव अबिचल कबहु न
टरै॥ अंबरीष की आप सरतिक ति अजहु महामुनि ग्लानि गरै॥ सो न कहा जो कियो न सुजो
धन अबुध आपने मान जरै॥ प्रभु प्रसाद सौभाग्य बिजय सुख पांडव नि बहि आई बरै॥ जोई जो
ई उपपै ने गोपर को सो सठ फिरि तेहि कुपय परै॥ सपनेहु सुख न संत द्रोही कहु सुरतरु सो
बिषफरनि फरै॥ हे काके हे श्री शुशाइ शा के जो हठि जनकी सीव चरै॥ तुलसी दास रघुबीर बाह
बल सदा निडर काहू न डरै॥ १३५॥ कबहु क सो कर सरोज रघुनायक धरि हो नाथ सीस
मेरे॥ जेहि कर अभय किए जन॥ आरत बारक बिबस नाम टेरे॥ जेहि कर कमल कठोर संभु ३५

यनुभंजि जनकसंसयमेटो॥ जेहिकरकमलउठाईवंधुज्यौंपरमप्रीतिकेवटभेटो॥ जेहिक
रकमलकृपालगीधकौंऔरदकदेयनिजधामदियो॥ जेहिकरबालिविदारिदासहितकपि
कुलपतिसुग्रीवकीयो॥ आयोसरणसभीतविभीषणजेहीकरकमलतिलककीनो॥ जे
हिकरगहिसरचापअसुरहतिअभयवांहदेवन्हदीन्हो॥ सीतलसुखदछांहजेहिकर
कीमेटनपापतापमाया॥ निसिवासरतेहिकरसरोजकीचाहततुलसीदासछाया॥
२३५॥ दीनदयालदुरितदारिददुखदुनिदुसहतेतापनईहै॥ देवदुआरपुकारतआरतसव
कीसवसुखहानिभईहै॥ प्रभुकेवचनवेदवुधसंमतममसूरतिमहीदेवमईहै॥ तिन्हकी
मतिरसरागमोहमदलोभलालचलीलिलईहै॥ राजसमाजकुसाजकोटिकटुकल
पितकलुषकुचालनईहै॥ नीतिप्रतीतिप्रीतिपरमितिपतिहेतवादहठिहेरिहईहै॥ आ
श्रमवरनधरमविरहितजगलोकवेदमरजादगईहै॥ प्रजापतितपाखंडपापरतअपने
अपनेरंगरईहै॥ सहितसत्यसोरीतिगईछुटिवढीकुरीतिकपटकलईहै॥ सीदतसाधुसा
धुतासोचतखलविलसतहुलसतखलईहै॥ परमारथस्वारथसाधनभयअफलसकल
नहिसिद्धिसईहै॥ कामधेनुधरतीकलिगोमरविवसविकलजामतिनवईहै॥ कलिकरनी
वरनिएकहालौकरतफीरतविनटहलटईहै॥ तापरदांतपिसिकरमीजततौजानेचित

२९ कहा ठई है ॥ त्यों त्यों नीच चढत सो चढत सिर ज्यों ज्यों सीलवस ढील दई है ॥ सरुष बरजि तरजि
३८ एत रजनी कुम्हिलैहै ॥ कुम्हडे की जई है ॥ दिजै दादि देषी नातो बलि महि मोद मंगल रितई है ॥ भ
रे भाग अनुराग लोग कहै राम अवधि चितवनि चितई है ॥ विनती सुन सानंद हेरि हसि करुना
वारि भूमि भिजई है ॥ रामराज भयो काज सगुन सुभ राजा राम जगत विजई है ॥ समरथ बडो सु
जान सुसाहिब सुकृत सेन हारि जिती है ॥ सुजन सुभाव सराहत सादर अना स सांसति
बितई है ॥ उथपे थपन उजारि बसावन गई बहोर बिरद सदई है ॥ तुलसि प्रभु आरत आरति ह
र अभय बांह केहि केहि न दई है ॥ १४० ॥ ते नर नरक रूप जीवत जग भव भंजन पद बिमुख अभा
गी ॥ निसि वासर रुचि पाप असुचि मन षल मति मलीन निगम पथ त्यागी ॥ नहि सतसंग
भजन नहि हरि को श्रवन न राम कथा अनुरागी ॥ सुत बित दार भवन ममता निसि सोवत अ
ति न कबहु मति जागी ॥ तुलसिदास हरिनाम सुधा तजि सठ हठि पियत विषय विष मां
गी ॥ सूकर स्वान सृगाल सरिस जन जनमत जगत जननि दुष लागी ॥ १४१ ॥ रामचंद्र रघुना
यक तुम सो हौं विनति बहु भांति करौं ॥ अघ अवलोकि अनेक आपने अनघ नाम अनुमानि ड
रौं ॥ परदुष दुषी सुषी पर सुष देषे संत सील नहि हृदय धरौं ॥ देषि आनकी बिपति महा २९
सुष सुष निसि देषि विनु आगि जरौं ॥ भक्ति विराग ग्यान साधन कहि बहु विधि डहकत लोग।

करौं ॥ पिव सबेस सुबेथामनातवेवेचिनरकघटउररभरौं ॥ जानित हौं निजपापजल
धिजियजलसीकरसमसुनतलरौं ॥ रजसमपरअवगुनसुमेरगिरिगुनगिरिसमरजतें
निदरौं ॥ नानावेषबनाइदिवसनिसिपरबितजेहितेहिजुगुतिहरौं ॥ एकौपलनकबहुँअ
लोचितहितदैपदसरोजसुमिरौं ॥ जोआचरनबिचारहुमेरेकलपकोटिलगिअवटि ।
मरौं ॥ तुलसिदासप्रभुकृपाविलोकनिगोपदज्यौंभवसिंधुतरौं ॥ १४२ ॥ सकुचतहौंअ ।
तिरामकृपानिधिक्यौंकरिविनेयसुनावौं ॥ सकलधरमविपरीतकरतकेहीभांतिना ।
थमनभावौं ॥ जानतहौंहरिरूपचराचरमेहठिनयननलावौं ॥ अंजनकेससिखाजुवति
तहलोचनसलभपठावौं ॥ स्रवननकोफलकथातिहारीयहसमुझौंसमुझावौं ॥ तिनस्र
वननपरदोषनिरंतरसुनिसुनिभरिभरितावौं ॥ जेहिरसनागुनगायतिहारेबिनुप्रया
ससुखपावौं ॥ तेहिमुखपरअपवादभेकज्यौंरटिरटिजनमनसावौं ॥ करहुहृदयअति ।
विमलबसहिंहरिकहिकहिसबहिसिखावौं ॥ हौंनिजउरअभीमानमोहमदखलमंड ।
लीबसावौं ॥ जोतनधरिहरिपदसाधहिजनसोविनुकाजगवावौं ॥ हाटकघटभरिधर्यो
सुधागृहतजिनभकूपखनावौं ॥ मनक्रमबचनलाइकीनेअघतेकरिजतनदुरावौं ॥ ।
परप्रेरितइरषावसकबहुंककियोकछुसुभसोजनावौं ॥ विप्रद्रोहजनुबांटपर्योहठि

३२ सबसौंबयरबढावौं॥ताहूपरनिजमतीबिलाससबसंतनमांझगनावौं॥निगमसेषसारद
37 निहोरिजोअपनदोषकहावौं॥तौनसिराहिकलपसतलगिप्रभुकहाएकमुखगावौं॥जोक
रनिआपनीबिचारौंतौकिसरणहौंआवौं॥म्रदुलसुभावसीलरघुपतिकोसोबलमनही।
देषावौं॥तुलसिदासप्रभुसोगुननहीजेहिसपनेहुतुमहिरिझावौं॥क्रपानाथभवसिंधु।
धेनुपदसमजोजानिसिरावौं॥१४३॥सुनहुराममरघुवीरगुसांई।मनअनीतिरतमेरो।
चरणसरोजबिसारितिहारेनिसिदिनफिरतअनेरो॥माननतनहीनिगमअनुसासनत्रा
सनकाहूकेरो॥भूलीसूलकरमकोल्हूनतिलज्यौंबहुबारनपेरो॥जहंसतसंगभक्तिमाध
वकीसपनेहुकरतनफेरो॥लोभमोहमदकामक्रोधरतितिनसौंनेहघनेरो॥परगुनस्र
ननदाहबहुलपरदोषबहुतेरो॥आपुपापकेनगरबसावतसहिनसकतपरषेरो॥साधन
फलश्रुतिसारनामतवभवसरिताकहुंवेरो॥सोपरकरकाकिनीलागिसठबेचिहोतहठ
ठिचेरो॥कबहुंककहुंसंगतिसुभावतेंजाउंसोमारगनेरो॥तबकरिक्रोधसंगकुमनोरथ
देतकठिनभटभेरो॥एकहौंदीनमलिनहीनमतीबिपतिजालअतिघेरो॥हारिपस्यौंक
रिजतनबिबिधिबिधितातेंहौंकहतसबेरो॥तापरसहिनसकौंकरुणामयमनकोदुसह ३२
दरेरो॥तुलसिदासकीत्राससमिटैजबबसहुहृदयमहुंडेरो॥१४४॥सोधौंकोजोनाम

लज्यातें नहिं राघरबुबीर॥ कारुनीक दिनुकार नहिं हरि हरी बिषम भय बीर॥ वेद विदित जग
विदित अजामिल विप्र बंधु अघ राप धाम॥ घोर अजामील जाननि वारयौ सुत हीन सुमिरत
नाम॥ पसुपाव र अभिमान सिंधु गज ग्रास्यो॥ आई जब ग्राह सुमिरत सकल सपदि आयो र
विहस्यौं रूसहज रदाह व्याध निषाद गीध गनिकादिक अगनित अवगुन मूल॥ नाम ओट तें
राम कृपानिधि दूरि करी सब भूल॥ केहि आचरन घाटि हौं तिन्हतें रघुकुल भूषन भूपसी
दन॥ तुलसिदास निसिवासर पर्यौं भीम तम कूप॥१४४॥ कृपासिंधु जन दीन दुआरे दादि
न पावत काहे॥ जब जेहि तुमहिं पुकारत आरत तब तिन्ह के दुख दाहे गज प्रहलाद पंडु।
सुत कपि सब को रिपु संकट मेट्यो॥ प्रनत बंधु भय विकल विभीषण उठि सो भरत ज्यों भेंट्यो
॥ मैं तुम्हरो लै नाउँ गाउँ एक उर आपने बसावौं॥ भजन विवेक विराग लोग भले करम क
रम करि ल्यावौं॥ सुनि रिसि भरे कुटिल कामादि करहिं जोर बरिआई॥ तिन्हहिं उजारि नारि अ रि
रि धन पुर राखहिं राम गोसाईं॥ सम सेवा छल दान दंड हौं रचि उपाय पचि हार्यौ॥ विन कार
न को कलह बड़ो दुख प्रभु सों प्रगट पुकार्यौं॥ सुर स्वारथी अनीस अलायक निठुर दया चि
त नाहीं॥ जाउँ कहां को विपति निवारक भव तारक जग मांही॥ तुलसी यदपि पोच तउ तुम्हा
रो और न काहू केरो॥ दीजै भक्ति बांह बारक ज्यों सुबस बसै अब खेरो॥१४५॥ हौं सब विधि

३८ भयोच हतनामग्रावगोचेरो ॥ ठोरठोरसाहीहोत हैप्यालकालकलिकेरो ॥ कालकर्मतेंद्वै विष सुभाव
38 यगाहकगनछेरो ॥ हौंनकबूलनवांधिकेमोलकरतकरेरो ॥ वंदीछोरवलेरानामहेविरदैतवडे गुरा
रो ॥ मैकद्यौनवकुलश्रीपतिकेमारयोउरडेरो ॥ नामग्रोटग्राजलोवाच्योमलजगजयजेरो ॥ ग्र
वगरीव निवाजीएपाईवोनहेरो ॥ जेहिकोतकवगस्यानकोप्रभुग्यावनीवेरो ॥ तेहिकोत।
कंकहि कृपालतलसीतमेरो ॥ १५० ॥ कृपासिंधुताते रहौंनिसिदिनमनमारें ॥ माहाराज
लाजग्रापुहिनिजजांघउघारें ॥ मिलेरहेमारयोचहेकामादिसंघाति ॥ मोविनुरहहिनमति
ग्रेजारहि कलिकाती ॥ वसतहृदयहितजानिमेसवकीरुचिपाली ॥ कियाकथीककोदंड क
हौंजड कामउचाली ॥ देषीसुनीनग्रजुलोग्रपनाईतिग्रेसी ॥ करहिसवैसिरमेरेईसव
परैग्रनेसि ॥ वडेग्रलेषलषिपरपरिहरैनजांही ॥ ग्रसमंजसमेमगनहौंलीजेगहिवांही
वारकवलीग्रवलोकीयेकौतककजननीयके ॥ ग्रनायासमिटिजाहिंगेसंकटतुलसीके
१५१ ॥ कहौंकौनमुषलाईकेरघुवीरगुसाईं ॥ सकुचतसमुझतग्रापनेसवसाईंदोहाईं ॥ से
वतवसस्वमिरतसषासरणागतसोहौं ॥ गुनगनसीतानाथकेचितकरतनहौंहौं ॥ कृपासिं
धुदीनवंधुकोग्रौरनहितकारी ॥ प्रणतपालविरदावलीसुनिजानिविसारी ॥ सेईनधर्ईनसुमि ३८
रिकैपदप्रीतिसुधारी ॥ पाईसुसाहेवराममसोभरिपेटविगारी ॥ नाथगरीवनेवाजहैमैंगही।

नगरीबी॥तुलसीप्रभुनिजआरतेंबनिपरैसोकीबी॥१४९॥कहांजाउंकासोंकहूंऔरठौ
रनमेरे॥जनमगवायोतेरेईद्वारेंकिंकरतेरें॥मैंतोबिगार्योनाथसोंआरतकेलीन्हें॥तोहीकृपा य
निधिक्योंबनैमेरीसीकीन्हें॥दिनदूरदिनदिनदूरदसादिनदुखदिनदूषण॥जौलौंतूनबि
लोकिहैरघुबंसविभुषन॥दईपीठिबिनुडीठिहौंतोबिस्वबिलोचन॥तोसोंतुहीनदूसरो
नतसोचबिमोचन॥पराधीनदेवदीनहौंस्वाधीनगोसाईं॥बोलनहारेसोंकरैबलिबिनेकि
झाईं॥आपुदेखिमोहिदेखियेजनमानियेसांचो॥बड़ीओटरामनामकीजेहिलईसोबांचो॥
रहनिरामरावरीरीतिहियेहुलसीहै॥ज्योंभावैत्योंकरकृपालतेरोतुलसीहै॥१५०॥रामभद्र
है मोहिआपनोसोचैअरनाहीं॥जीवसकलसंतापकोभाजनजगमाहीं॥नातोबड़ेसमर्थसों
एकअवरकिधोंतूं॥तोकोंमोसेअतिघनेमोकोंएकैतूं॥बड़ीगलानिहियहानिहै॥सरबग्य
गुसाईं॥कूरकुसेवककहतहैसेवककीनांई॥भलोपोचकहैरामकोंमोकोसबनरनारी॥बि
गरेसेवकस्वानसोंसाहिबसिरगारि॥असमंजसमनकोमिटैसोउपावनसूझै॥दीनबंधुकी
जैसोईबनिपरेजोबूझें॥बिरदावलिबिलोकिएतिन्हमेंकोउहौंहूं॥तुलसीप्रभुकोपरिहर्यो
सरणागतसोंहौं॥१५१॥जोपैचेराईरामकीकरतोनलजातो॥तोतूंदामकुदामज्योंकरकर
नबिकातो॥जपतजीहरघुनाथकोनामनहीअलसातो॥बाजीगरकेसूमज्योंखलखेहन।

३५ बातो॥ जो तूं मन मेरे कहें राम नाम कमातो॥ सीतापति सनमुख सुखी सब ठांव समातो॥ राम
सुहाते तोहि जो तूं सबहि सुहातो॥ काल करम कलि कारनी कोउ न कोहातो॥ राम नाम अनुरा
गही जिय जो रतिआतो॥ स्वारथ परमारथ पथी तोहि सब पतिआतो॥ सेई साधु सुनि समुझि
35 कै परपीर पिरातो॥ जनम कोटि को कांदलो हद हृदय थिरातो॥ भवमग अगम अनंत है बि
नु श्रमहि सिरातो॥ महिमा उलटे नाम की मुनि कियो किरातो॥ अमर अगम तनु पाइ जो जड़
जाइ न जातो॥ होतो मंगल मूल तो हि अनुकूल विधातो॥ जो जन प्रीति प्रतीति सों राम नाम
हि रातो॥ तुलसी राम प्रताप तें तिहुं ताप न तातो॥ १५१॥ राम भलाइ आपनी भल कीयो न का
को॥ जुग जुग जानकीनाथ को जग जागत साको॥ ब्रह्मादिक विनती करी कहि दुख बसुधा
को॥ रविकुल कैरव चंद भो आनंद सुधा को॥ कोसिक गरत तुसार ज्यों तकि तेज तिया को॥
प्रभु अनहित हित को दीयो फल कोप कृपा को॥ हस्यो पाप आपु जाइ कै संताप सिला को
॥ सोच मगन काढे सही साहब मिथिला को॥ रोषरासि भृगुपति धनी अहमिति ममता को
चितवत भाजन करि लीयो उपसम समता को॥ मुदित मानि आयसु चले बन मात पिता को
धरमधुरंधर धीरधुर गुन सील जिता को॥ गुह गरीब गत ज्ञाति हूं जिहि जिउ न भखा को॥ पायो
पावन प्रेम तें सनमान सखा को॥ सदगति सबरी गीध की सादर करता को॥ सोच सिव सु ३५

श्रीवकोसंकटहरनाको॥राषिविभीषनकोसकतअसकालगहाहाको॥आजविराजतराज
हेदसकंठजहांको॥वालीसवालीअवथकेहूकिणनषाको॥तेपारयहुंचेतहेंजहंमुनिमनणा
को॥गतिभलहैरामनामसोंअसविधिसिरिजाको॥सुमिरतकहतप्रचारिकेवल्लभगिरि
जाको॥अकनिअजामिलकीकथासानंदनभाको॥नामलेतकलिकालहुंहरिपुरहिन
गाको॥रामनाममहिमाकरैकामभुरूहआको॥साषिवेदपुरानहेतुलसीतनतनको॥१५३
मेरेरावरोगतिहैरघुपतिवलिजाउ॥निलजनीचनिर्गुनिनिर्धनकहजगदूसरोनठाकुरठाउ
॥हेघरघरखडूभरेसुसाहिवसुकृतसवनआपनोदाउ॥वानरवंधुविभीषणहितवीनुको॥
शलपालनकहूंसमाउ॥प्रणतारतभंजनजनरंजनसरणागतपविपंजरनाउ॥कीजैदास
दासतुलसीअववहपासिंधुविनुमोलविकाउ॥१५४॥देवदूसरोकोदीनकोदयालसीलनिधा
नसुजानसिरोमनिसरणागतप्रियप्रभुप्रणतपाल॥कोसमरथसर्वज्ञसकलप्रभुशिव
सनेहमानसमराल॥कोसाहिवकिणमीतप्रीतिवसषगनिसिचरकपिभीलभाल॥नाथ
हाथमायाप्रपंचसवजीवदोषगुनकर्मकाल॥तुलसीदासभलपोचरावरोनेकुनिरषिकी
जैनिहाल॥१५५॥विश्वासएकरामनामको॥माननतनहिंप्रतितिअनतऐसोसुभाउमनवा
मको॥पढिवोपर्योनछठीछमतरगुजजुसअथर्वणघूमको॥ब्रततीरथतपसुनिसहं।

रा गसौरं ग

कौ ऐ

३. मनपचिमरैंतनकामको॥ कर्मजालकलिकालकठिनआधीनसुसाधितदामको॥ ज्ञानबै
रागजोगजपतपभयलोभमोहमदकामको॥ सबदिनसबलायकभयगायकरघुनायक
४० गुनग्रामको॥ बैठेनामकामतरुतरडरकवनघोरघनघामको॥ कोजानैकोजैहैजमपुरको
सुरपुरपरधामको॥ तुलसीबहुतभलोलागतजगजिवनरामगुलामको॥ १५६॥ कलिना
मरामकोकामतरुदलनहारदारीददुकालदुखदोषघोरघनघामको॥ नामलेतदाहिनो
होतमनबामविधाताबामको॥ कहतमुनिसमहेसमहातमउलटेसीधेनामको॥ भलोलो सो
परलोकतासुजाकेहैबलललितललामको॥ तुलसीहुँजगजानियतनामहिनीचनकू
चमुकामको॥ १५७॥ सेइयेसुसाहिबरामसो॥ सुखदसुजानसुशीलसूरसुचिसुंदरकोटि
ककामसो॥ सारदसेससाधुमहिमाकेहैगुनगनगायकसामसो॥ सुमिरिसप्रेमनामजा
सोरतिचाहतचंद्रललामसो॥ गवनविदेसनलेसकलेसकोसकुचतसकृतप्रनामसो॥ सा
षीताकोविदितविभीषणबैठोअविचलधामसो॥ टहलसहलजनमहलमहलजागतचा जग
रिउजुगजामसो॥ देषतदोषनषिजतरिझतसुनीसेवकगुनग्रामसो॥ जाकेभजेत्रिलोकति
लकभयत्रिजगजोनितनतामसो॥ तुलसीऐसेप्रभुहिभजैजोनताहिविधाताबामसो ५.
१५८॥ कैसेदेंउनाथहिषोरिकामलोलपभ्रमतमनहरिभक्तिपरिहरितोरि॥ बहुतप्रीतिपु

ये
जाइबे पर पूजिबे पर थोरि॥ देत सिष सिषयो न मानत मूढ़ता असि मोरि॥ किए सहित सनेह
जे अघ हृदय राषे चोरि॥ संग बस किए सुभ सुनाए सकल लोक निहोरि॥ करौं जो कछु धरौं
सचि पचि सुकृत सिला बटोरि॥ पैठि उर बरबस दयानिधि दंभ लेत अंजोरि॥ लोभ मनही
नचाव कपि ज्यों गरें आसा डोरि॥ बात कहौं बनाइ बुध ज्यों बर बिराग निचोरि॥ एतेहू पर तु
म्हरो कहावत लाज अंचई घोरि॥ एहि निलजता पर रीझि रघुबर लेहु तुलसिहि छोरि॥
१५८॥ हे प्रभु मेरोइ सब दोस॥ सील सिंधु कृपाल नाथ अनाथ आरत पोस॥ बेष बचन बिराग
मन अघ औगुननि को कोस॥ राम प्रीति प्रतीति पोली कपट करतब ठोस॥ राग रंग कुसंग
ही सों साधु संगति रोस॥ चहत केहरि जसहि सेइ सृगाल ज्यों षरगोस॥ संभु सिषवन रसना
हू नित राम नामहि घोस॥ दंभहू कलि नाम कुंभज सोच सागर सोस॥ मोद मंगल मूल अति
अनुकूल निज निरजोस॥ राम नाम प्रभाव सुनि॥ तुलसि परम परितोस॥ १५९॥ मैं हरि पतित
पावन सुने मैं पतित तुम पतित पावन दोउ बानिक बने॥ ब्याध गनिका गज अजामिल सा
षि निगमनि भने॥ और अधम अनेक तारे जात कापै गने॥ जानि नाम अजानि लीन्हे नरक जम
पुर मने॥ दास तुलसी सरन आयो राषिए आपने॥ १६०॥ तो सो प्रभु जो पै कहूं कोउ होतो॥ तौ
सहि निपट निरादर निसि दिन रटि लटि ऐसो घटि को तो॥ कृपा सुधा जलदान मांगिबो क

राग मारू

६२ हौं सो सठ निसोतो ॥ ख्यालि सनेह सलिल सुख चाहत चित चातक सो पोतो ॥ काम करभ ब-
समन हूं मनोरथ द्रुव हूं कबहूं कछु भोतो ॥ ज्यों सुरसरि मय बसि मीन बारि तजि जिउ कछु भिभ भरि ले-
५१ तो गोतो ॥ जेतो हू ताव दास तुलसी उर क्यों कहि आवत ओतो ॥ ते रौंज राय रसरण के लयो ब-
यो बिनु जोतो ॥१६२॥ ऐसो को उदार जग माँही ॥ बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर राम सरिस कोउ
राजसार नाँही ॥ जो गति जोग बिराग जतन करि नहि पावत मुनि ज्ञानी ॥ सो गति देत गीध सबरि-
ठा कहुं प्रभु न अधिक करि मानी ॥ जो संपति दस सीस अरपि करि रावण शिव सों लीन्ही सो इ सं-
पदा बिभीषण जन कहूं अति सकुच सहित प्रभु दीन्ही ॥ तुलसिदास सब भांति सकल सुख जो
चाहसि मन मेरे ॥ तो भजु राम काम पद पूरण पावहि कृपा निधि तेरे ॥१६३॥ जानै प्रीति रीति
रघुराई ॥ नाते सब हाते करि राखत राम सनेह सगाई ॥ नेह निबाहि देह तजि दसरथ कीरति
अचल चलाई ॥ ऐसे हूं पितु ते अधिक गीध पर ममता गुन गरुआई ॥ तिय बिरही सुग्रीव सखा
लखि प्राण प्रिया बिसराई ॥ रण पर्यो बंधु बिभीषण ही को सोच हृदय अधिकाई ॥ घर गुरु गृह
प्रिय सदन सासुरे भई जब जब पहुनाई ॥ तब तब कहि सबरी के फलन की रुचि माधुरी न पा-
ई ॥ सहज सरूप कथा मुनि बरनत रहत सकुचि सिर नाई ॥ केवट मीत कहे सुख मानत बानर ५१
बंधु बड़ाई ॥ प्रेम कनौड़ो राम सो प्रभु त्रिभुअन तिहुँ काल न भाई ॥ तेरो रिनिया हौं कह्यो कपि

सोंऐसीमानिहैकोसेवकाई॥तुलसीरामसुभावशीललखिजोनभगतिउरआई॥तौतोहि
जननिजाउजननीजडतनतरुनतागवांई॥१६४॥एकैदानिसिरोमनिसांचौ॥जेहिजाचि
सोजाचकताबसफिरिबहुनाचननाचो॥सबस्वारथीअसुरसुरनरमुनिकोउनदेतबि
नुपांये॥कोसलपालकृपालकल्पतरुद्रवतसकृतसिरनांये॥हरिहुंऔरअवतारअप
नेराखीवेदबडाई॥लैचावरनिधिदईसुदामहिजद्यपिबालमिताई॥कपिसबरिसुग्रीवबि
भीषणकोनहिकीयोअजाचि॥अबतुलसीहिंदुखदेतदयानिधिदारुणआसपिसा
ची॥१६५॥हौंरघुवररावरोकहाई॥निदरिगनिआदरगरीवपरकरतकृपाअधिकाई॥था
केदेवसाधनकरिसवसपनेनहिदियेदेषाई॥केवटकुटिलभालुकपिकौणपकियेसकल
संगभाई॥मिलिमुनिवृंदफिरेदंडकवननसोचरचौनचलाई॥वारहीवारगीधसेवरिकीवर
ननप्रीतिसोहाई॥स्वानकेहेतेंकेयोपुरवाहेरजतीगयंदचढाई॥तियनिंदकमतिमंदप्रजार
जुनिजनयननगरवसाई॥यहीदैवैनदीनदिनकनिकरैरीतिसदाचलीआई॥दीनदयालदी
नतुलसीकीकाहूनसवारनिकराई॥१६६॥ऐसेरामदीनहितकारी॥अतिकोमलकरुणानि
धानविनुकारणपरउपकारी॥साधनहीनदीननिजअघवससिलभईमुनिनारी॥गृहते
गवनिपरसिपदपावनघोरसापतेंतारी॥हिंसारतनिषादतामसवपुपसुसमानवनचा

४२ री॥ भेंट्यो हृदय लगाइ प्रेमबस नहि कुल जाति बिचारी॥ जद्यपि द्रोह कियो सुरपति सुत कहो
न जात अति भारी॥ सकल लोक अवलोकि सोक हत सरण गए भय टारी॥ बिहंग जोनि आ
मिष अहार पर गीध कौन ब्रत धारी॥ जनक समान क्रिया ताकी निज कर सब भांति संवारी
अधम जाति सबरी जोषित सठ लोक बेद तें न्यारी॥ जानि प्रीति दै दरस कृपानिधि सोउ रघुनाथ
उधारी॥ कपि सुग्रीव बंधु भय ब्याकुल आयो सरन पुकारी॥ सहि न सके जन को दारुन दुख
हत्यो बाली सहि गारी॥ रिपु को अनुज बिभीषण निसिचर कौन भजन अधिकारी॥ सरण ग
ए आगे ह्वै लीन्हो भेंट्यो भुजा पसारी॥ असुभ होत जिन्ह के सुमिरे तें बानर रिछ बिकारी॥ बेद
बिदित पावन भये ते सब महिमा नाथ तुम्हारी॥ कहँ लौं कहौं दीन अगनित जिन्ह की तुम
बिपति निवारी॥ कलिमल ग्रसित दास तुलसी पर काहे तें कृपा बिसारी॥१६७॥ रघुपति भ
क्ति करत कठिनाई॥ कहत सुगम करनी अपार जानै सोई जेहि बनि आई॥ जो जेहि कला कु
सल ता कहँ सोई सुलभ सदा सुखकारी॥ सफरी सन्मुख जल प्रवाह सुरसरी बहै गज भा
री॥ ज्यों सरकरा मिलै सिकता महुँ बल तें न कोउ बीलगावै॥ अति सूक्ष्म रसज्ञ पयीलका बि
नु प्रयास सोई पावै॥ सकल दृश्य निज उदर मेलि सोवै निद्रा तजि जोगी॥ सोइ हरिपद अनुभवै ४२
परम सुख अतिसै द्वैत बियोगी॥ सोक मोह भय हरष दिवस निसि देस काल तहँ नाही॥ तुल

सीदास यह दुसाही नसंसय निर्मूल न जाही ॥१९८॥ जो पै राम चरन रति होति ॥ तौ कत त्रिवि
ध सूल निसि वासर सहते विपति निसोति ॥ जो संतोष सुधा निसि वासर सपनेहु कबहुं क ।
पावै ॥ तौ कत नम्र गज जल लहुय विषय कारन निसि वासर धावै ॥ जो श्रीपति महिमा बिचारि उ
र भजते भाव बढाय ॥ तौ कत द्वार द्वार कूकर ज्यों फिरते पेट षलाए ॥ जे लोलुप भय दास आ
स के ते सब ही के चेरे ॥ प्रभु विस्वास आस जिन जीती ते सेवक हरि केरे ॥ नहि एकौ आचरन भजन ती
को बिनै करत हैं ताते कीजे कृपा दास तुलसी पर नाथ नाम के नाते ॥१९९॥ जो पै मोही राम
लागते मीठे ॥ तौ नव रस षट रस रस अनरस ह्वै जाते सब सीठे ॥ बंचक विषय विविधि तन विधि
धरि अनुभए सुने अरु डीठे यह जानत हौं हीयें आपने सपने न अघाय उबीठे ॥ तुलसीदास प्रभु सो ए सुपने
कै बल बचन कहत अति ढीठे ॥ नाम की लाज राम करुणाकर केहि न दिए कर चीठे ॥२००॥ यो मन
कबहुं तुमहि न लाग्यौ ॥ ज्यौं छल छाडि सुभाय निरंतर रहत विषय अनुराग्यौ ॥ ज्यौं चितई प
रनारि सुने पातक प्रपंच घर घर के ॥ त्यौं न साधु सुरसरि तरंग निर्मल गुनगन रघुबर के ॥ ज्यौं
२ नासा सुगंध रस बस रसना षटरस रति मानी ॥ राम प्रसाद माल जूठन लगि त्यौं न ललकि
ललचानी ॥ चंदन चंद्र बदनि भूषण पट ज्यौं चहै पाव रपर स्यौ ॥ त्यौं रघुपती पद पदुम परस कौं ॥
तनु पातकीन तरस्यौ ॥ ज्यौं सब भांति कदेव कुठाकर सेए वपु बचन ॥ हिए हूं त्यौं न राम सुकृत

४३ तनजे सुकृत न सकृत प्रणाम की एकुं चंचल चरन॥ लोभ लगि लोलुप द्वार द्वार जग बागे॥ राम
43 सीय आश्रम न चलत न सपने मे श्रमित अभागे॥ सकल अंग पद बिमुख नाथ मुख नाम कि ओ
ट लई है॥ है तुलसी हि परतीति एक प्रभु मूरति कृपामई है॥ १७१॥ कीजे मो कों जम जातनाम
ई॥ रा मत वसे सुचित हरदेसा हि वहि मे सरुपी ठि दई॥ गर्भ बास दस मास पालि जननि पितु रूप
तु म कीन्हो॥ जड़ अविवेक अशील बल हि अघ पवाधि हि आदर दीन्हो॥ कपट अंत रजामि कुतें करै
अघ व्यापिक हि दूरावौं॥ ऐसे कुमत कुसेवक पर रघुपतिन कियो मन बावौं॥ उदर भरो किंकर
कहाय बेच्यो बिषयन हाथ हि यो है॥ मो से बंचक कों कृपाल छल छाडि के छोह कियो है॥ पल
पल के उपकार राख रे जानि हू कि सुनि नीके॥ मिथ्यो न कलि सहते कठोर चित कबहूं नेह सिय पि
य के॥ स्वामी के सेवक हित नासब कछु निज सांई द्रोहाई॥ मेमति तुलानो लि देषि भई मेरि हि दि
सि गरु आई॥ एते हू पर हित ना थ करत मेरो कुरि आय अरु कहि हौ तुलसि आपनी और जानि
पत प्रभु हि कनोड़े भ वि हौ॥ १७२॥ कबहुँक हौं एहि रहनि रहौंगो॥ श्री रघुनाथ कृपाल कृपा
ते संत सुभाव गहौंगो॥ जथा लाभ संतोष सदा काहू सौं कछू न चहौंगो॥ परहित निरत निरं
तर मन क्रम बचन न नेह निवहौंगो॥ परुष बचन अति दूसह श्रवन सुनि तेहि पावक न दहौंगो ४३
बिगत मान सम सील मान नि पर गुन न हि दोष कहौंगो॥ परिहरि मोह जनित चिंता दुख सुख

समबुद्धिगहौंगो॥तुलसिदासप्रभुएहिपथरहिअविचलहरिभक्तिलहौंगो॥१७४॥ना
हिनआवतऔरभरोसो॥एहकलिकालसकलसाधनतरुहैश्रमफलनिफरोसो॥व्रत
तीरथउपवासदानमखजोजेहिरुचैकरोसो॥पाइहैपैजानिबोकरमफलभरिभरिवेद
परोसो॥आगमविधिजपजागकरतनरसरतनकाजखरोसो॥सुखसपनेहुनजोगवि
धिसाधनरोगवियोगधरोसो॥कामक्रोधमदलोभमोहमिलिज्ञानविरागहरोसो॥विगर
तमनसंन्यासलेतजलनावतआमघरोसो॥बहुमतिमुनिबहुपंथपुराननजहांतहांझ
गरोसो॥गुरुकह्योरामभजननीकोलागतराजडगरोसो॥तुलसीविनुपरतीतिप्री
तिफिरिफिरिपचिमरैमरोसो॥रामनामवोहितभवसागरचाहैतरनतरोसो॥१७५॥जा
केप्रियनरामवैदेही॥सोत्यागियेकोटिवैरिसमजद्यपिपरमसनेही॥तज्योपिताप्रहला
दविभीषणबंधुभरतमहतारी॥हरिहितगुरुवलिपतिव्रजवनितनभयसवमंगलकारी॥
नातेनेहरामजीकोमनियतसुहृदसुसेव्यजहांलौं॥अंजनकहाआंखिजोफूटैबहुत
ककहौंकहांलौं॥तुलसीसोइआपनोसकलविधिपूज्यप्राणतेंप्यारो॥जातेंहोइसनेहरा
मसोंएतौमतोहमारो॥१७६॥जोपैरहनिरामसोंनाहीं॥तेनरखरकूकरसूकरसेवृथा
जियतजगमांही॥कामक्रोधमदलोभमोहभयतृष्णाव्याप्तसबहोवै॥मनुजदेहसुरसा

५५ यसराहत सो तो नेह सियपियको ॥ मूलसुज्ञान सपत सुलदा लागा नियत गुन गरुआई ॥ विनुह
रिभजन इंद्राइन के फल मिटत नहीं करुआई ॥ कीरति कुलकरतूति भूति भलि सील सरूप सलो
55 ने ॥ तुलसी प्रभु अनुराग रहित जे सो सालन साग अलोने ॥ १२६ ॥ रा घो राम सें स्वामी सों नीच ने
ह न नातो पते अनादर हूं तो हित ते न हानो जोरे नप नाते नेह फोंटक फीको ॥ देह के दाहक गाहक
जियके आपने आपनि को सब चाहत नीको ॥ मूल हूं हैं को इयाल हूल हुलसी को ॥ जीव को जी
वन प्राण को प्यारो सुख हूं हैं को ॥ तुलराम सों ते विसारो कियो करै कै रै गो तो सब ले को भलो ॥ औ
से सुसाहिब सों तो ऊचालीके पोच लो ॥ तुलसी तें री भलाई अजहूं हकै ॥ रानुराव न होत फिरिकै
जू कै ॥ १२७ ॥ जो तुम त्यागो राम हूं तो न त्यागौं परिहरि पाय का हि अनुरागो ॥ सुखद सुप्रभु त
मसों जग माहीं ॥ श्रवन नयन मन गोचर नाहीं ॥ हौं जन्म जी व ईस रघुराया ॥ तुम माया पति हौं
वस माया ॥ हौं तौ कुजाचक स्वामि सुदाता हौं कुपूत तुम पितहित माता ॥ जो तो कहूं को उप्र
कृत वा तो ॥ तो तुलसी विनु भूल विकातो ॥ १२८ ॥ भएहूं उदास राम मेरे ॥ आसरावरी आरत
स्वारथी सब कहै वात बावरी ॥ जीवन को दानी पानी कहत नाहि चाहिए ॥ प्रेमनेम के निवाहें चा
तक सराहिए ॥ मीन तें न लाभले स पानी पुन्य पीन को ॥ जल विनु थलक हा मीच विनु मीन को ॥ ५५
५ वरे ही की आर वलि वाचि आप छो टेहै ॥ चलत घरे के समाज होत हा घो टे हैं ॥ पहीद र वार भलो

साहिनोरेरामको॥मोकोंसुभदायकभरोसोरामनामको॥कहतनसानीहूंहेहियमाहिनी
कीहै॥जानतकृपानिधानतुलसीकेजीकीहै॥१७४॥कहांजोउकासोंकहौंकौनसुनैदीनकी
॥त्रिभुवनतूहीगतिसबअंगहीनकीजगजगदीससबसुखरचनेरहे॥निराधारकोआधा
रगुनगननेरहे॥गजराजकाजखगराजतजीधायोको॥मोसेदोसकोसपोसेंमोसेमा
याजायोको॥मोसेकूरकायरकपूतकौडीआधको॥किएबहूमोलतहूँकैरआगीधआध
को॥तुलसीकीतेरेहीबनाएबलिबनैगी॥प्रभुकीबिलंबअंबदोषदूखजनैगी॥१७५॥वार
कबिलीकबिलिकीजेमोहिआपनोराईदसरथकेतूउथपनथापनो॥साहिबसरनपा
लसबलनदूसरो॥तेरोनामलेतहीसुखेतहोतऔसरो॥वचनकरमतेरेमेरेमनगड़ेहे॥
देखेसुनेजानेमेंजहानजेतेबड़ेहैं॥केसेकियोसमाधानसनमाननसिलाको॥भृगुनाथ
सोरिसजितेआकौनलिलाको॥मातपितबंधुहितलोकवेदपालको॥बालकोअंचल
नतकारतनिहालको॥संग्रहेसनेहबसअधमअसाधको॥गीधसेवरीकोकहोकरीहसा
धको॥निराधारकोआधारदीनकोदयालको॥मीतकपिकेवटरजनीचरभालको॥रं
कनिरगुनिनीचजेजेतैनिवाजेहीं॥महाराजसुजनसमाजतेविराजेहैं॥साचीबिरदाव
लिनबढिकहिगईहै॥पीलसिंधुछीलतुलसीकीवारभईहै॥१७६॥कहेंभांतिकृपानिधा

४५ नमेरे रिझ्यो रहे रीये॥ मोकों अब रनठौर न स्टेक पकनेरीये॥ सहस सिलासों अति मतिजड़ भई
45 है॥ कासों कहौं कवन गति याह न हिंदई है॥ पदराग जाग चाहों कौसिक ज्यों कीयो हों॥ कलिम
सबल देखि भारि भीति भयो हों॥ करम कपिस बालि बलि त्रास त्रस्यो हों॥ चाहत अनाथ ना
थ तेरी बाह बस्यो हों॥ महा मोह रावन विभीषण ज्यों हयो हों॥ त्राहि तुलसीस त्राहि तिहूं ता पा
पतयो हों॥१७८॥ नाथ गुनगाथ सुनि होत चित चाउ सो॥ राम रीझिबे को जानों भक्ति न भाउ
सो॥ करम सुभाउ काल ठाकुर न ठाउ सो॥ सुधन न सुतन न मन सुआउ सो॥ जाचों जल
जाहि कहे अमीय पिआउ सो॥ कहा कहों कहूं सों न बढत ही आउ सो॥ बाप बलि जाउ आपु करि
ये उपाउ सो॥ तेरे ही निहारे परे हारे हू सुदाउ सो॥ तेरे ही बुझाए बुझै अबुझ बुझाउ सो॥ तेरेही
सुझाये सूझै असुझ सुझाउ सो॥ नाम अवलंब मीन दीन मन राउ सो॥ प्रभु सों बनाइ कहे जी
भ जरि जाउ सो॥ सब भांति बिगरी है एक सो बनाउ सो॥ तुलसी सुसाहब हि दियो है जनाउ है
१७९॥ राम प्रीति की रीति आप नीके॥ जानीयत नहैं बड़े की बडाई छोटे की छोटाई दूरि करै ऐ
सी॥ अवाबरी बलि मनियत हे गीध काक स्यो सराध भीलनी के फल साउ साधु सभा
भलि मनियत हे॥ राबरे आदरे लोक कहूं आदरियत जोग जानु बड़ो तेग रू बनियत हे॥ प्रभुकी ४५
कृपा कृपालु कठिन कलि कालहू महिमा समुझि उर अनियत हे॥ तुलसी पराए बस भ

वेद हे

परसग्रनरससीनबंधुद्वारेंहठठनियतहे॥१८४॥रामनामकेजपेजेजरजीयकीजरनि॥
कलिकालअपरउपायतेअपायभएजैसेंतमनासबेकोचित्रकेतरनि॥करमकलापपरि
तापपापसानेंसबज्योंसफूलफूलेफोकटफरनिदंभलोभलालचउपासनाबिनासनि८
कें॥सुगतिसाधनभईउदरभरनि॥जोगनसमाधिनिरुपाधिनबिरागग्यानबचनबेषबिशे
षकहूंनकरनि॥कपटकुपथकोटिकहनिरहनिखोटिसकलसराहे॥नीजनिजआचरनि
मरतमहेसउपदेसहैकहाकरतसुरसरीतीरकासीधरमधरनि॥राननामकोप्रतापह
रकहेंजपैंआपुजगजगजानैंजगबेदहूंबरनि॥मतिरामनामसोंरतिरामनामसोंगति
रामनामकीहेबीपतिहरनि॥रामनामसोंप्रतीतिप्रीतिराखेंकबहूंकरामढरहिंगेढल
सीआपनिढरनि॥१८५॥लाजनलागतदासकहावतसोआचरनबिसारी॥सोचतजोः
जोहरितुमकहंभावत॥सकलसंगतजीजाहिभजतमुनीजपतपजाहिवतावतमो
सममंदमहाखलपांवरकवनजतननेंहिपावत॥हरिनिर्मलमलग्रसितहृदयअस
मंजसमोहिजनावत॥जेहिसरकाककंकबकसूकरक्योंमरालनहांआवत॥जाकीः
कवि सरणजायकोबिददारुणत्रयतापबुझावत॥तहंगयमदमोहलोभअतिसर्गहुंमिट
तनसावत॥भवसरिताकहूंनावसंतयहकहिऔरनसमझावत॥हौंतिनसोंहरिपर

सबैरककरितमकोमलोमनावत॥नाहिनऔरगतिमोकहँतातेंहठिनातोलावत॥राखोसरणउ
दारचूडामणितुलसीदासजनसरणावत॥१८५॥कौनजतनबिनतीकरिये॥निजआचरणबि
चारिहारिहियमानिजानिडरिये॥जेहिसाधनहरिद्रवहुजानिजनसोहठिपरिहरिये॥जातें
विपतिजालनिशिदिनतेंहोइसोईअनुसरिये॥जाननहौंमनवचनकरमहितकीन्हेंनतरिये॥
सोइबिपरीतितिरैखियपदबुबिबिनुकारनहिंजरिये॥श्रुतिपुराणसबकोमतयहसतसंगसोंदृ
ढकरिये॥निजअभिमानमोहइरषावशतिनहिंनआदरिये॥संततसोइप्रियमोहिंसदाजाते
भवनिधिपरिये॥कहौंअवनाथकोनजतनतेंभवसागरतरिये॥जबकबनिजकरुणास्वभाव
तें॥द्रवहुतौतरिनिस्तरिये॥तुलसिदासविस्वासआननहिंकतपचिपचिमरिये॥१८६॥नाहीनें
हौंआयोसरणसबेरे॥ज्ञानविरागभक्तिसाधनकछुसपनेहूनाहिनमेरें॥लोभमोहमदक्रोध
बोधरिपुफीरतरैनिदिननेरें॥तिनहिंमिलेंमनभयोकुपथरतफिरैतिहारेहिफेरें॥दोष
निलयपयहबिषयसोकप्रदकहतसंतश्रुतिठेरें॥जानतहूंअनुरागतहांअवसोंउहरितरेफ
रेंरें॥बिषपीयूषसमकरहुअगिनिहिमितारिसकहुदिनुबेरें॥तुमसमईसकृपालपरमहितपु
निनपाइहौंहेरें॥यहजीयजानिरहेउसबतजिरघुबीरभरोसेंतेरे॥तुलसिदासयहबिपति
वागुरातमसेंबनेनिबेरें॥१८७॥निनिन्दामदेतऊदोऊ॥अकनियाकेकपटकरतवअमितअ

नयअमाई॥ स्वद्रोह रिपु रघुपति होन परीछित नहि पछि नाई॥ कृपासिंधु विलोकिये जन मन
की सासति की साई॥ सरण आयो देव दीन दयाल देषन पाई॥ निकट बोलि न बरजिए बलि जा
उंह रिय न हाई॥ देषिहहि हनुमान गोमुष नाहरन को न्याय अरुण मुष लषि विकट पिंगल नय
न रोष कषाई॥ वीर सुमिरि समीर को हटिहै चपल चित ता चाई॥ विनय सुनि विहसे अनुज सो
वचन के कहि भाई॥ भली कही कह्यो लषन हूं हसि बने सकल बनाई॥ दई दीनहि दादि सो सु
नि होत सरन बधाई॥ मिटे संकट सोच पोच प्रपंच पाप निकाई॥ पेषि प्रीति प्रतीति जन पर
अगुन अनघ अमाई॥ दास तुलसी कहत मुनिगन जयति जय उरगाई॥ मैं तोहि अब जान्यो संसा
र बांधि न सकहु मोहि हरि के बल प्रगट कपट आगार॥ देषत ही रमनीय कछु नाहिन पु
नि किए विचार॥ ज्यों कदलीतरु मध्य निहारत नाहिन निकसै सार॥ तेरे लिए जनम अ
नेक मैं फिरत न पायो पार॥ महामोह मृगजल सरिता महं बोर्यो मोहि बारंबार॥ सुनु षल छल ब
ल कोटि किए बस होहि न भगत उदार॥ सहित सहाय तहां बसु अब जेहि हृदय न नंदकुमार
॥ तासों करहु चातुरी जो नहि जानै मरम तुम्हार॥ सो परि डरै मरै रजु अहि तें बूझै नहि व्योहा
र॥ निज हित सुनु सठ हठ न करहि जो चहै कुसल परिवार॥ तुलसिदास प्रभु के दासन्ह त
जि भजहि जहां मद मार॥ १८८॥ राम कहत चलु राम कहत चलु राम कहत चलु भाई रे॥ ना

रागगौरी

४७ हित भवबागारि परिहो छुटत अति कठिनाई रे ॥ बांस पुरान साज सब अठकठ सरल त्रिकोन
खटोला रे ॥ हमहि दिहल करि कुटिल करमचंद मंद मोल बिनु डोला रे ॥ विषम कहार मार म
दमाते चलहि न पाउ बटोरै रे ॥ मंद विलंद अभेरा दलकन पाउअ दुख झकझोरै रे ॥ कांट कु
राइ लपेटनि लोटनि ठांहि ठांउ वझाउ रे ॥ जस जस चलिय दूरि तस तस निज वास न भेट ल
गाउ रे ॥ मारग अगम संग नहि संबल नाउ गाउ कर भूला रे ॥ तुलसीदास भवत्रास हरहु अ
व होहु राम अनुकूला रे ॥ १८९ ॥ सहज सनेही राम सों तैं कियो न सहज सनेह ॥ तातें भव भाज
न भयो सुनु अजहू सिषवन देहु ॥ ज्यों मुख मुकुर विलोकिये अरु चित न रहत अनुहारि ॥ त्यों
सेवतहू न आपने मात पिता सुत नारि ॥ दै दै सुमन तिल वासिकै अरु खरि परिहरि रस लेत ॥
स्वारथ हित भूतल भरे मन मेचक तन सेत ॥ जासों सब नाते फुरै तासों न करी पहिचानि ॥ ता
तें कछु समझ्यो नही कहा लाभ कहा हानि ॥ सांचो जान्यो झूठ को झूठे कह सांचो जानि ॥ को न गयो
को न जाय है को न जैहै है ॥ करि हित हानि करि बीत्यों अब करत है करिबे हित मीत अपार कबहूं
न कोउ रघुवीर सो ॥ नेह निवाहनिहार ॥ वेद कहत बुध कहत है ॥ अरु हौं हूं कहत हूं टेरि ॥ तुल
सी प्रभु सांचो ही ॥ तू तै हिय की आंखिन्ह हेरि ॥ १९० ॥ एक सनेही साचिलो ॥ केवल कोसलपा ४७
ल ॥ प्रेम कनौडो राम सो नहि दूसरो दयाल तन साथी ॥ सब स्वारथी सुर व्यौहार सुजान

47

आरत अधम अनाथ को हित को रघुवीर समान नाद निठुर समचर सीखी सलिल सनेह
न सूर रसा छिास रोज रहित करव गोपद प्रेम पथ घू कूर ॥ जाको मनु जासों बिध्यो ताको सु
खदायक सोइ ॥ सरन सील साहब सदा सीतापति सरिस न कोइ ॥ सुनि सेवा सह को करै ॥ परि
हरै को दूखन देखि ॥ के हि दिवान दीन दीन को ॥ आदर अनुराग विसेषि ॥ खग सबरि पितु मातु
ज्यों माने कपि को कीये मीत केवट भेटो भरत ज्यों ऐसो कहु को पतित पुनित ॥ देव अभा
गे ही भाग को राखे सरन सभीत ॥ वेद विदित विदीव लीक बिका विदगावत ॥ मीत के सो पाव
र घात की जे हि लेई नाम की ओर ॥ गांठि बांध्यो राम सों परख्यो परो न खोट ॥ मन मीलें न क
लि कलि विषि होत जा सूल काजु सोउ ॥ तुलसी कीयो आपनो रघुवीर गरीब निवाज ॥ १५२
जो पै जानकीनाथ सों नातो नेह न नीच स्वारथ परमारथ कहा कलि कुटिल बिगोगो वि
च ॥ यमवरन आश्रम न रुके पैयत पोथिन हि पुरान करत तव विन विषदे खि ॥ पज्यों सरीर दि
न आणा केद विदित सधन सब सुनियत फल दायक चारी राम प्रेम बिनु जानिये ॥ ज्यों सरिस रिता
विन वारि ॥ नाना पथ्य निर्वान के नाना विधान बहु भांति ॥ तुलसी मेरे कहै जपु राम नाम मदि
न राति ॥ १५३ ॥ आजु आपने राम के करत वस सुफन हित होई कहत लेकहुं को शालधनी तो
॥ कों कहा कहत न सब कोउ ॥ रीकी नेवाज्यो क वहि तह खीजी दरकव मा दिरपान वदन निहा

रिवै सुविचारि मानि हिय हारि॥ विगरि जन्म अनेक की सुधरत न लगै पल आध पाछि कृपा
निधि प्रेम सों कही को न राम कियो साधु वालमीक के वदे कथा कपि भालु भील सम मानस
निसन सुख तोन राम सों तेहि को उपदेसै ज्ञान का से वा सुग्रीव की का प्रीति रीति निर्वाह॥
जासु वंधु वध्यो व्याध ज्यों सो सुनत सुहात न काहू॥ भजन विभीषण को कहा फल कहा दियो र
घुराज राम गरीव निवाज के वडे निर्वाह वोल की लाज॥ जप हि राम रघुनाथ को वरु चाहू सरीन
चाल सुख लेस सपनेहु सुखसाहिव सुभी समरथ कृपाल न तो पाल सजल नयन गद्गद गिरा गहव
रमन पुलक सरीर गाव त गुन गन राम के केहि की न मिटी भव भीर प्रभु कृत तुलसी वेत्त हैं परि
हरि पाछिली गलानि॥ तुलसी तो सों राम सों कछु नई न जान न पहिचानि॥ १९४॥ जो अनुरा
गन राम सनेही सों॥ तो लयो लाभ कहा नरदेही सों॥ जो तन धरि हरि पद सुख भए सुम
ति राम अनुरागी सो॥ तन पाइ अघाइ कीये अघ औगुन अथ म अभागी॥ ज्ञान विराग जोग
जप तप मख जग मद मग नहि थोरे॥ राम प्रेम विनु नेम जाइ जैसें म्रग जल जलधि हलो
रें॥ लोक विलोकी पुराण वेद सुनि समुझि वूझि गुरु ज्ञानी॥ प्रीति प्रतीति राम पद पंकज स
कल सुमंगल खानी॥ अजहू जानि जिय मानि हारि हिय होइ पलक महं नीको॥ सुमिरु स ४८
नेह सहित सीतापति मानि मतो तुलसी को॥ १९५॥ वलि जाउ हो राम गुसांई की॥ जे कृपा।

आपनिनोइपरमारथ्यस्वारथ्यसाधनसबबसरघुरविपुलवडाइ॥कलिसकोपलोपेस्वचाली
निजकठिनकुचालबलाइ॥जहजहचितबतहितवतहनितनवविषादअधिकाई॥रुचिभा
वतीभभरिभागहिसमुहाहिअमीतअनभाई॥आधिमगनमनव्याधिविकलतनवचन
मलिनझूंठाई॥एतेहूपरतुमतेतुलसीकेप्रभुसकलसनेहसगाई॥१५६॥काहेकोफिरत
मनुकरतबहुतजतन॥मिटैनदुःखविमुखरघुकुलवीरकीजेजोकोटिउपाइत्रिविधिता
पनेसाइ॥कसोजोभुजउठाइमुनिवरकीर॥सहजटेवविसारिनहियेदिविचारिमीले
नमथतवारिहतविनुछिर॥समुझीतजहिभ्रमभजहि॥उमसेवतसुगमगुननगहनगं
भीर॥आगमनिगमग्रंथरिषिवरनतसुनिसरसंतसवहिकोएकमतहनुमतिधीर॥तु
सठ लसीदासप्रभुसमरैपसुप्रभुविनजथापिहेसुरसरीतीर॥१५७॥नाहिनचरणरतिताहीतें
सहौंविपतिविषयविरतकहतश्रुतिसकलसुमतिधीर॥वसेजोप्रभुपुरउडगसुर्वहिवा
दितकुरंगताहिकिभवमनिरषिरविकरनीर॥सुनेनानापुरानमीटतनहीअज्ञानपढे
नसमुझेजिमिखगकीर॥वेधतविनहियामसेमरसमनआसकरतचरितहेफलविनु
हीर॥कछूनसाधनसिद्धिजानौनिगमविधिनहिजपतपवसनमीर॥तुलसीदाससभरो स
सेपरमकरुणाकोप्रभुहरिहेभवविषमभीर॥१५८॥मनपछितैहौओसरवितेंदुर्लभ

७५ देहपायहरिपदभजुमनक्रमवचअरुहीतें॥सहसबाहुदसवदनआदिनृपवचेनकाल
बलीते॥हमहमकरिधनधामसंवारेअंतचलेउठीरीतें॥सुतवनितादिजानिस्वारथरतन
49 करुनेहसवहीते॥अंतेहुतोहीतेजहिगेपांवरतूंनतजैअवहीते॥अवनाथहिअनुरागुजा
गुजडत्यागुदूरासाजीतें॥बुझैनकामअगिनितुलसीकहुंविषयभोगवहूघीतें॥१९९॥
काहेकोंफिरतमूढमनधायो॥तजीहरिचरणसरोजसुधारसभविषयवहूरवागमनला
यो॥त्रिजगदेवनरअसुरअपरजगजोनिसकलभ्रमीआयो॥ग्रहवनितासुतवंधुभएव
हुमातपिताजीन्हजायो॥जातेंनिरैनिकायनिरंतरसोइनतोहीसिषायो॥तवहितहोइ
कटैभववंधनसोमगतवनवतायो॥अजहूंविषयहितजतनकरतजद्यपिवहूविधिडहका
यो॥पावककामभोगघृततेसठकेसेंपरतवुझायो॥विषयहीनदुखमिलैविपतिअति
सुषसपनेहूनहिंपायो॥उभयप्रकारप्रेतपावकज्योंधनदुषप्रदश्रुतिगायो॥छिनछि
नछीनहोतजीवनदुर्लभतनवृथागवायो॥ ॥तुलसीदासहरिभजहिआसतजि
कालउरगजगषायो॥२००॥तांवेसोपीठिमनहूतनपायो॥नीचमीचजानतनसीसपर
ईसनिपटविसरायो॥अवनिरवनिधनधामसुहृदसुतकोनईनहिंअपनायो॥काके ७५
भएगएकाकेसंगसवसनेहछलछायो॥जिन्हभूपनिजगजीतिवांधिजमअपनिवा

हिव साये॥ नेई काल कलेई कीन्हो तं हू बान तिक व आयो॥ देखु बिचारि सारु का साँचो कही
निगम निजु गायो॥ भजहि न अजहु समुझि तुलसी तेहि जेहि महेस मन लायो॥२०१॥ ला
भ कहा मानुष तन पाये॥ काय बचन मन सपनेहू कबहूक घटत न काज पराये॥ जो सुख
सुरपुर नरक गेह बन आवत बिनहि बोलाये॥ तेहि सुख कहँ बहु जतन करत मन समुझत न
हि समुझाये॥ परदारा परद्रोह मोह बस कीये मूढ मन भाये॥ गर्भवास दुखरासी जातन
ना तिव्र बिपति बिसराये॥ भय निद्रा मैथुन आहार सबके समान जग जाये॥ सुर दुर्लभ तन
धरि न भजे हरि मद अभीमान गवाये॥ गई न निज पर बुद्धि सुद्ध ह्वै रहे न राम लव लाये॥ तु
लसीदास बिनेहि अवसर का पुनि कि पछिताये॥२०२॥ काज कहा नर तन धरि सार्‍यो
पर उपकार सार श्रुति को सो तो धोखेहु न बिचार्‍यो॥ द्वैत मूल भय सूल सोक फल भवतरु
टरै न टार्‍यो॥ राम भजन तीछन कुठार लै सो नही काटी निवार्‍यो॥ संसय सींधु नाम बोहित भजि
निज आतमा न तार्‍यो॥ जन्म अनेक बिबेकहीन बहु जोनि भ्रमत नहि हार्‍यो॥ देखि आन की सह
ज संपदा द्वेष अनल मन जार्‍यो॥ सम दम दया दीन पालन सीतल हिय हरि न संभार्‍यो॥ प्रभु
गुर पिता सखा रघुपति सो मन क्रम बचन बिसार्‍यो॥ तुलसीदास एहि आस सरण राखिहि
जेहि गीध उधार्‍यो॥२०३॥ श्री हरि गुरु पद कमल भजहु मन तजि अभिमान॥ जेहि सेवत पाइ

५०

52

यहरि॥ सुखनिधान भगवान न पहिचाना प्रथम प्रेम विनु रास मील हिंगे हूरि॥ जद्यपि निकट हृद
य निज रहे सकल भरि पूरि रहे जन्ह तमतक्षा स्थिर रैम हि मंदलधीर॥ विगत मोह माया मद
हृदय सदा रघुवीर॥ तीज त्रिगुन पर परम पुरुष श्री राम मुकुंद॥ गुन सभाव त्यागे विन दुर्ल
भ परमानंद॥ चौथि चारि परिहरो बुधि मन चित हंकार॥ विमल विचार परम पद निज सु
ख सहज उदार॥ पाचै पाच परस रस शब्द गंध अरु रूप॥ इन कर कहा न कीजे वहरि परव भव
भकूप॥ छठि षड वरग करहु जय जनक सुता पति लागी॥ रघुपति कृपा वारि विनु नहि
वुझाए लोभागि॥ सातैं सप्त धातु निर्मित तनु करिय विचार॥ तेहि तन कर फल एक अब कीजे
परउपकार॥ आठैं आठ प्रकृति पर निर्विकार श्री राम॥ केहि प्रकार पाईये हरि हृदय बस
हि वहु काम॥ नौमी नव द्वार॥ पुर वसि हिन आप न भल कीन्ह॥ ते नर जोनि अनेक न्ह भ्रमीसर
मलीन हणहू लेदीन्हौं॥ दसमी दसहु कर संजम जो न करै जिअ जानि॥ साधन वृथा होइ सव मिल
हि न सारंग पानि॥ एकादसी एक मन वस के सेवहु करि जाई॥ सोई व्रत को फल पावै आवाग
मन नसाई॥ द्वादसि दान देहु अस अभय होइ त्रैलोक॥ पर हित निरत सो पारन वहुरि न व्यापै
सोक॥ तेरसि तीनि अवस्था तजहु भजहु भगवंत॥ मन क्रम वचन अगोचर व्यापक व्याप्य ५०
अनंत॥ चौदसि चौदह भुवन अचर चर रूप गोपाल॥ भेद गए विनु रघुपति अति हरहि जे

जाल॥ बुझ्यो परम भक्ति मम सहृदिर सजान हितदास॥ समसीतल गतमान ग्यानरत विषय
उदास॥ त्रिविधि सूल होलि जारे विलै असि फास॥ जो जीय चाहसि परम सुखतौ पही मा
रग लागु॥ श्रुति पुरान बुध सम्मत चाचरि चरित मुरारि॥ करि विचार भव तरै परै कबहुन
जमपारि॥ संसय समन दमन दुख सुखनिधान हरि एक॥ साधु कृपा विनु मिलहिं न
हि करिय उपाय अनेक॥ भवसागर कहँ नाव सुध संतन के चरन॥ तुलसीदास प्रयास
विनु मिलहिं राम दुखहरन॥२०४॥ जो मन लगै रामचरन अस देह गेह सुत वित कल
त्र मह मगन होत विनु जतन कीए जस॥ द्वंद्वरहित गतमान ग्यानरत विषय विरत खटा
य नाना रस॥ सुखनिधान सुजान कोसलपति ह्वै प्रसन्न कहु क्यों न होहि वस॥ सर्वभू
त हित निर्व्यलिक चित भक्ति प्रेम दृढ नेम एक रस॥ तुलसीदास यह होइ तब हि जब
द्रवै ईस जेहि हत्यौं सीस दस॥२०५॥ ज्यो मन भज्यो चहै हरिसुरतरु॥ तौ तजि विषय
विकार सार भज अजहूँ जो मै कहौं सोइ करु॥ सम संतोष विचार विमल मन सतसं
गति एचारी दृढ करि धरु॥ काम क्रोध अरु लोभ मोह मद राग॥ द्वेष विसेषि के परिहरु
श्रवन कथा मुख नाम॥ हृदय हरि सिर प्रनाम सेवा कर अनसरु॥ नयन निरषी
कृपासमुद्र हरि अगजग रूप भूप सीतावर॥ एहि भक्ति वैराग्य ग्यान यह हरितोषन एव

५१ हृसुभव्रतआचरु॥ तुलसीदासशिवमतमारगयहचलतसदासपनेहनाहिनडरु॥२०६॥न
हिकोउअवरसरणलायककुजोश्रीरघुपतिसमविपतिनि॥ निवारनकाकोसहजसुभावसेव
51 कवसकाहिप्रणतपरप्रीतिअकारनजनगुन॥ अल्पमेरुकरिमाननआगुनकोटीविलोकी
विसारन॥ परमकृपालभक्तिचिंतामनी॥ विरदपुनितपतितजनतारन॥ सुमिरनसुल
भूदासदुखसुनीहरिचलतततुरतनपटपितसंभारन॥ साधिपुरानजीगमसवजाननदुपदसु
ताअरुवानर॥ जाकोजसगावितकविकोविदजीनकेलोभमोहमदसंरन॥ तुलसीदासत
जीआपासकलभजुकोसलपतिमुनिवधूउधारन॥२०७॥ भजिवेलायकसवसुखदायकर
घुनायकसरससरनप्रदअघभूहजोनाहिन॥ आनेरमवनहुलवदनपैकपमनरमारमनय व
ननतसिराहिन॥ आजअधमअजातिकुटिलखलपतीतसभीतकतहूजोसमाहिन॥
सुमीरतनामविवसहूवारकपावतसोपदजहंमुनिजाहिन॥ जाकेपदकमललुब्धम॥
नमधुकरविरतजेपरमसुगतिहूलोभाहिन॥ तुलसीदाससठतेहीभजेकसनहिकारु
नीकजोअनाथनदाहिन॥२०८॥ नाथसोकोनकरिविनेसुनावों॥ त्रिविधिअन[illegible]तिनअव
लोकिअघसापनेसरणसनसुखसुकृचिपीशनावों॥ विरचिहरिभक्तकोवेषवरवा॥ ५१
टिकाकपटदलहरितपल्लवनकछावों॥ नामलगिलाइलसालललीतवचनकहीविषयवि

ॐ हैंगनव[?]वौ॥कुटिलसतकोटिमेरेरोमपरवारियेसाधुगनतिमेपहिलेंगनावौं॥परम
वरवरषर्वगर्वपरवतचढ्योअग्यसर्वज्ञजनमनजनावौं॥साचुकिधौंझुठमोकोंकहतकोउ
कोउरामरावरोहौंहूकहावौं॥विरदकिलाजकरिदासतुलसीदेवलेहुंअपनाइअजनिदेहुंवा
वौं॥२०५॥नाहीनेनाथअवलंबमोहिआनकी॥करममनवचनप्रणसत्यकरुणानिधेएक
ति कगँरामभवदीयपदत्रानकी॥कोहमदमोहममतायतनजानिमनवाँतनहिजानकहिज्ञान
नविज्ञानकी॥कामसंकल्पउरनिरषिभववासनहिआसनहिएकहीआंकनिर्वानकी॥वेदबो
धितकरमधरमविनुअगमअतिजदपिजियलालसाअमरपुरजानकी॥सिद्धसुरमनु
जदनुजादिसेवनकठिनद्रवैहठिजोगवलीभोगदिवप्राणकी॥भक्तिदूर्लभपरमशंभुशुकमु सु
निमधुपप्यासपदकंजमकरंदमधुपानकी॥पतितपावनसुनतनामविश्रामकृतभ्रमत
पुनसमझीचितग्रंथिअभीमनकी॥नर्कअधिकारममघोरसंसारतमकूपकहैभूपमोहिसक्ति
आपनकी॥दासतुलसीसोउत्रासनहीकरतउरसमझिगुहगीधगतिज्ञातिहनुमानकी॥२०६॥
औरकहठौररघुवंशमनिमेरेपतितपावनप्रणतपालअसरणसरणवांकरेविरदविरदेत
कहिकरे॥समुझिजियदोषअतिरोषकरिरामकैकरतनहिकानविनतिवदनफेरें॥तदपि
ह्वैनिडरहौकहौकरुणानिक्यौंअवरहिजातसुनिवातविनुहेरे॥मुख्यरुचिहोतवसिवेकोंपु

५२ बखा बैरै ॥ नाथ्यतेहि हृचिह्निकामादि हैरें ॥ अगनगअयव गैअक खगीसु कृतै कफलनामवलको
बसों जनमगरनेरैं ॥ कतहूं ठांउ कहूं जाउ कों घालनाथ दिनदिन हि नविकलबिगुरेरैं ॥ दासतुल
52 सीवासदेहू अवकरी कृपा बसतगज गीयथ्या धादिजे हि बेरैं ॥ २२१ ॥ कबहू रघुबंसमनि सा कृ
पाकरिहूगे ॥ जेहि कृपाव्याधगजविप्रखलनरतरे ॥ तिनहि सममानी मोहि नाथ्य आदरहूगे
जोनीबहु जनमकिए कर्मखलविविधिविधिअधमआचरणकलहू हृदय निहिधरहूगे ॥ दीन
हितअजितसर्वज्ञसमरथ्य प्रणतपालचितमृदुलनिजगुननअनुसरहूगे ॥ मोहमदमान
कामादि खलमंडलीसकलनिर्मूलकरि दुसह दुख हरहूगे ॥ जोगजपज्ञानविज्ञानतेअधिक
अतिअमलद्रिढभक्तिदेपरमसुखभरहूगे ॥ मंदजनमोलिमनिसकलसाधनहिनकुटिलमन
मलिनजियजानजोडरहूगे दासतुलसीवेदविदितविरदावली विमलजसनाथ्य केहि भांति
विसरहूगे ॥ २२२ ॥ रघुपतिविपतिदवन ॥ दीनदयालप्रणतप्रतिपालकपतितपावन ॥ क्रूर
कुटिलकुलहीनदीनअतिहि नमलिनजवन ॥ सुमीरतनामराम पठएसबआपनेभवन ॥
गजपिंगलाअजामिलसेखलगनहि दक्षकवन ॥ तुलसिदासप्रभुकेहि नदीनगतिजानकीर
वन ॥ २२३ ॥ हरिसमआपदाहरणनहि को उ सहजकृपालदुसहदुखसागरतरनगाजनिजबल ५२
अवलोकी ॥ कमलगहिगयेजोसरण ॥ दीनवचनसुनिचलेगरुडतजिसुनाभआयुधधरन

द्रुपदसुताकहंलग्योदुसासननगनकरन॥ हाहरिपाहिकहतपूरेपटबिबिधीबरनएहीजा॰
निसुरनरमुनिकोबिदसेवतचरन॥ तुलसिदासप्रभूकौनअभयकीयोनागगजतरनॅ॥२१४॥ ऐ
सीकोनप्रभूकीरीतिबिरदहेतपुनितपरिहरिपावरनूपरप्रीति॥ गईमारनपुतनाकुचकाल
कूटलगाइ॥ मातकीगतिदईताहिकृपालयादवराय॥ काममोहीतगोपिकनपरकृपाअ
तुलीतकीन्ह॥ जगतपीताबिरंचिजिन्हकेचरनकीरजलीन्ह॥ नेमसोंसिसुपालदिन॥ प्रति
देतगनिगनिगारिकीयोलीनसो॥ आपुमेहरिराजसभामझारि॥ ब्याधचितदैचरनमार्योमू
ढमतिमृगजानि॥ सोसदेहस्वलोकपठयोप्रगटकरिनीजबानि॥ कौनतिन्हकीकहेजीन्हकें
सुकृतअरुअघदोउप्रगटपातकरूपतुलसिसरणराख्योसोउ॥२१५॥ श्रीरघुबिरकीयहबा
नि॥ निचहूसोंकरतनेहसुप्रीतिमनअनुमानि॥ परमअधमनिषादपावरकोनताकीकानि
लियोसोउरलाइ॥ सुतज्योंप्रेमकीपहिचानि॥ गिद्धकौनदयालजोबिधिरच्योहिंसासानीज
नकज्योंरघुनाथजाकोंदियोजलनिजपानि॥ प्रकृतमलिनकुजातिसेबरिसकलऔगुणखानि
॥ खाततांकेदिएफलअतिरुचीबखानिबखानि॥ रजनिचरअरुरिपुबिभीषणसरणेआयोजा
नि॥ भरतज्योंउठिताहिभेंटतदेहदसाभुलानि॥ कौनसुभगसुसीलबानरजिनहिसुमिर
तहानि॥ कीयेतेसबसखापूजेभवनअपनेआनि॥ रामसहजकृपालकोमलदीनहितदिन

५२ दानभंजेहरिश्रेसप्रभूतलसीकपरकुटिलनम्राानि॥२१६॥हरीतजिश्रोरभजिएकाही॥नाहि
53 नेकोउराममममताप्रणतपरजाहि॥कनककस्यपविरंचिकोजनकमैमनअरुबात॥सु
तहीदूषवतविधिनवरज्योकालकेघरजात॥शंभुसेवकजानजगबहुबारदेदससीस॥क
रतरामविरोधसोउपसनेहनहटक्योईस॥श्रोरदेवनकीकहोकास्वारथहिकेमीत॥कबहुं
काहूनराषिलियोकोउसरणगयोसभीत॥कोनसेवतदेतसंपतिलोकहूंयहरीति॥दा
का सतुलसीदीनपरएकरामहीकीप्रीति॥२१७॥जोपेदूसरोकोउहोउ॥तोहौबारहिबारप्रभुकत।
दूखसुनावोरोइ॥काहिममताहीनपरकाकोपतितपावननामपापमूलअजामिलहिकों
दियोआपनोधाम॥रहेसंभुविरंचिसुरपतिलोकपालअनेक॥सोकसरिबूडतकरिसहि।
दईकाहूनटेक॥विपुलभूपतीसदसिमहनरनारिकह्योप्रभुपाहि॥सकलसमरथरहेकाहू
नवसनदीनोताहि॥एकमुखक्योकहोंकरुणासिंधुकेगुनगाथ॥भक्तहितधरिदेहकाहान
कीयोकोशलनाथ॥आपुसोंकहूसोंपिएमोहिजौपेअतिहिघिनात॥दासतुलसीश्रोरविधि।
क्योचरणपरिहरिजात॥२१८॥कबहूदेषाईहोहरिचरणसमनसकलकलेषकलिम
लसकलमंगलकरण॥सरदभवसुंदरतरुनतलअरुणवारिजवरण॥लछिलालितल ५३
लितकरतलछबिअनुपमधरन॥गंगजनकअनंगअरिप्रियकपटवटुवलीछरणविप्र

तियम्रगवधिककेहूखदोषदारिदहरनसिंधुसुरमुनिहेदवेदितसघदसवकहूसरण॥स
हितउरआनतजिनहिजनहोततारनतरन॥कृपासिंधुसुजानरघुवरप्रणतआरतहर॰
नहरसआसपियूंस॥तुलसीदासचाहतसरन॥२१९॥द्वारेहौंभोरहीकोआजु॥रटतर॰
रिहारारिआरनकौंरहीसोंकाजु॥कलीकरालदुकालदारुणसबकुभातिकुसाजु॥
नीचजनमनऊचजैसेकोढहूमैंघाजु॥हहरिहियेमेसदयबूझ्योजायसाधुसमाजु॥मोहि ५
सेकहूकतहूकोउतिन्हकह्योकोसलराजु॥दीन [illegible] दारिददलनकोंकृपावारिदवाजु॥पे
टभरितलसिहिजेवाइयेमनिसथासनाजु॥२२०॥करियसम्हारकोपालराइओरठौ
रनओरगतिअवलंवनामविहाय॥वूझिअपनेआपनोहितआपुवायनमाय॥रामराउ
रनामगुरस्वरस्वामीसघासहाइ॥रामराजनचलतमानसमलिनकेछलछाइ॥कोपते
हिकलिकालकायरमोहिघालतघाइ॥लेतकेहरिकोवयरजनुभेकहनिगोमाइ॥ल्यों
हिरामगुलामजानिनिकामदेतकुदाइ॥अककनियाकेकपटकरतवअमितअनयअपाइ
सुखीहरिपुरवसतहोतपरीछितहिपछिताइ॥कृपासिंधुविलोकियेजनमनकीसा॰
सतिसाइ॥सरणआयोदेवदीनदयालदेषनपाइ॥निकटवोलिनवरजिएवलिजोउहू॰
नियनहाइ॥देषहेहनुमानगोमुखनाहरनकोन्यायअरुणमुखभ्रुविकटपिंगलनय
दानिदसरथरायकेवानैतमैसिरताजु जन्मकोभूषोगरीवहोंतूगरीवनिवाजु ६

५४ नरोषकृपाइ॥ विरदमिसिसमीरकोअवटिहैचपलचितचाइ॥ विनयसुनिविहसेअनुजसों
वचनकेकहिभाइ॥ भलिकहिकह्योलखनहूंहसिवनेसकलवनाइ॥ दईदीनहिदादिसोसु
54 निहोतसदनवधाइ॥ मिटेसंकटसोचपोचप्रपंचपापनिकाइ॥ पेषिप्रीतिप्रतीतिजनपर
अगुनअनघअमाइ॥ दासतुलसीकहतमुनिगनजयतिजयउरगाइ॥ २२०॥ नाथकृपा
हीकोपंथचितवतदीनहौंदिनरातिहोइदेहुंकेहिकालदीनदयालुजानिनजाति॥ सु
गुनज्ञानविरागभक्तिसुसाधननकीपांति॥ भजेविकलविलोकिकलिअघअौगुननन(
थाती॥ अतिअनीतिकुरीतिभइभुइंतरनिहूतेताति॥ जाउंकहंवलिजाउंकहूंनठाउंमति
अकुलाति॥ आपसहितनआपनोकोउवापकठिनकुभांति॥ स्यामघनसींचियेतुलसि
सालिसफलिसुखाति॥ २२१॥ वलिजाउंऔरकासोंकहौं॥ सदगुनसिंधुस्वामिसेवकहि
नकहूंनकृपानिधिसोलहौं॥ जहंजहंलोभलोललालचवसनिजहितचितचाहनचहौं
तहंतहंतरनितकतउलूकज्योंभटकिकुतरुकोटरलहौं॥ कालसुभावकरमवि
चित्रफलदायकसुनिसिरधुनिरहौं॥ मोंकोंसकलसदाएकरसदुसहदाहदारुनद(
हौं॥ उचितअनाथहोइदुखभाजनभयोरामकिंकरनहौं॥ अवरावरोकहायनतूकियस ५४
रणपालसाहतिसहौं॥ महाराजराजिवलोचनमगनपापसंतापहौं॥ तुलसीप्रभुजव
तौ

नवजेहि तेहि विधि राम निबाहें निरबहौं ॥२२३॥ आपनो कबहुं करि जानिहौं ॥ राम गरिबने
वाज राजमनि विरद लाज उर आनिहौ सील सिंधु सुंदर सब लायक समरथ सदगुन खा
निहौ ॥ पालिहो पालत पुनि पालहुगे ॥ प्रीति रीति पहिचानिहौ ॥ बेद पुराण कहत जग जा
नत दीन दयाल दिन दानिहौ ॥ कहि आवत बलि जाउ मनहु मेरि वार विसारें वानिहौं ॥
आरत दीन सनाथन के हित मानत लौकिक कानिहौ ॥ है परिनाम भलो तुलसी का सर।
णागत भय भानिहौं ॥२२४॥ रघुवरहि कबहूं मन लागिहै ॥ कुपथ कुचाल कुमत कुमनोरथ
कुटिल कपट सब त्यागिहै ॥ जानत गरल अमी विमोह बस अमी गनत करि आगिहै ॥ उलटी
रीति प्रीति अपनि की तजि प्रभुपद अनुरागिहै ॥ आखर अरथ मंजु मृदु मोदक राम प्रेम
पगि पागिहै ॥ ऐसे गुन गाइ रिझाइ स्वामी सो पाइहै ॥ जो मुह मागिहै ॥ तू एहि विधि सुख सै।
न सोइहै जिय की जरनि भूरि भागिहै ॥ राम प्रसाद दास तुलसि उर राम भगति जोग जागी
राग का है ॥२२५॥ भरोसो औरु आइहै उरताके की कहूं लहै जो राम सो साहिब की अपनो है बल जा
की कें ॥ की कलिकाल कराल न सूझत मोह मार मद छाके ॥ की सुनि स्वामी सुभाव न रह्यो चित
जो हित सब अंग थाके ॥ हौं जानत भली भांति अपनपो प्रभु जी सुन्यो न साके ॥ उपल भालु ख
ग मृग रजनिचर भले भय करतब काके ॥ मोकों राम नाम सुरतरु सो राम प्रसाद कृपाल

५५ कृपा के॥ तुलसि सुखी निसोच राज ज्यौं बालक माय बबा के॥२२५॥ भरोसो जाहि दूसरो सो क
55 रौ॥ मोको तो राम को नाम कल्पतरु कलि कल्यान फरो॥ करम उपासन ज्ञान वेद मत सो सव भां सव
ति षरो॥ मोहि तो सावन के अंधे ज्यों सूझत रंग हरो॥ चाटत रह्यो स्वान पातरि ज्यों कबहूं न पे
ट भरो॥ सो हौं सुमिरत नाम सुधारस पेषत परुसि धरो॥ स्वारथ हू परमारथ हू को नही कुंज
रो नरो॥ सुनियत सेतु पयोधि पषानन करि कपि कटक तरो॥ प्रीति प्रतीति जहां जाकी तहं
ताको काज सरो॥ मेरें माउ बवा दुइ आषर हौं सिसु अरनि अरो॥ संकर साषि जो राषि क
हौं कछू तौ जरि जीभ गरो॥ अपनो भलो राम नामहि सों तुलसिहि समुझि परो॥२२६॥ नाम
राम रावरो हित मेरें॥ स्वारथ परमारथ साथिन्ह सों भुज उठाइ कहौं टेरें॥ जननि जनक तज्यौं जन
मी करम बिनु विधि सिरज्यो अवडेरें॥ मोहु से कोउ कोउ कहत राम को सो प्रसंग केहि केरें॥
फिरो ललात विन नाम उदर लगि दुषउ दुषीत मोहि हेरें॥ नाम प्रसाद लहत रसाल फ
ल अव हौं बबुर बहेरें॥ साधन साधु लोक परलोक हि सुनियत जतन घनेरें॥ तुलसि के अ
वलंब नाम हि की एक गांठि कोइ फेरें॥२२७॥ प्रीय न राम नाम तें जिहि रामौं॥ ताको भलो क
ठिन कलिकाल हू आदि मध्य परिनामो॥ सकुचत समुझि नाम महिमा मद लोभ मोह को ५५
ह कामो॥ राम नाम जपि निरत सुजन पर करत छांह घोर घामो॥ नाम प्रसाद सहि जो क

हैकोउसिलासरोरुहजामो॥ जोखनिसुमिरिभागभाजनभइसुकृतसीलभीलभामो
॥वालमीकअजामीलकेकछुहुतोनसाधनसामो॥ उलटेपलटेनाममहातमगुंजनि
जित्योंललामो॥ रामतेअधिकनामकरतवजिनकीयनगरगतग्रामो॥ भएवजाइदाहि
नोजोजपितुलसीदाससेवामो॥२२८॥ मेरेरावरीजीभजोकहौंऔरकोहों॥ जानकीजी
वनजनमजनमपालेतिहारेकोरकोहों॥ तीनिलोकतिहूंकालनदेषोसुहृदरावरेजोर
कोहो॥ तुमसेकपटकरिजनमजनमकुमहेंहौं कअब्बोरकोहों॥ कहाभयोजोमन
मलीनकलिकीयोभौतुवाभोरकोहों॥ तुलसिदाससीतलनितवहीवलबड़ेठकाने
ठोरकौहों॥२२९॥ अकारनकोहितूऔरकोहै॥ विरदगरिनेवाजकोनकोंभोहजासु॥ व
जनजोहै॥ कोटेवड़ेचहतसवस्वारथजोविरंचिविरच्योहै॥ कोलकुटिलकपिभालुपा
लिवोकोनकृपालहिसोहै॥ काकोनामअनखआलसकहेंअघअवगुननविछोहै॥ कोए
तुलसीसेकुसेवकसंग्रहसटसवहिनसोरदोहहै॥२३०॥ मेरेऔरकोहैकाहिकहि
हौं॥ रंकराजज्योंमनकोमनोरथजेहिसुनाइसववलहिहौं॥ जमजातनाजोनिसक
रसवसहेहै॥ हृसहअरुसहिहौं॥ मोकोंअगमसुगमतमकोंप्रभुतवफलचारिनच
हिहो येललिदेकोंषगमृगतरुकिंकरह्वैरावरोरामहौंरहिहौं॥ एहिनातेनरकहूसचु

५९ पैहौयाविनयपरमपदहूंहूंबदहहिहौ ॥ एतनीजियलालसादासकेकहतपानहिआगहिहौं ॥ ही
दीजैवचनकिहिएआनियतुलसीकोपननिरवहिहौं ॥ २३१ ॥ दीनबंधुदूसरोकहंपावौं ॥ को
तुमबिनुपरपीरपाइहैकेहिदीनतासुनावौं ॥ प्रभुअकृपालकृपालअलायककहंकेहिकहिचि
58 तहिडोलावौं ॥ एहिसमुझिसीरहौं ॥ मौननहिकहिभ्रमकहागवावौं ॥ गोपदबूडिबेजोगक॰
रमकरिबातनजलधिथहावौं ॥ अतिलालचीकामकिंकरम [illegible] मुखरावरोकहावौं ॥
तुलसिप्रभुजियकीजानतसबअपनोसोककहिनजनावौं ॥ सोकरिजेजेहिभातिछांडिक॰
लद्वारपरोगुनगावौं ॥ २३२ ॥ मनकोमनोरथहैएकभांतिचाहतमुनिमनअगमसुकृ
तसुखमनसाअचननसपनातिकरमभूमीकलिजनमकुसंगतिमतिविमोहमदमाती ॥
करतकुजोगकोटिकैंयौं ॥ पैयतपरमारथपथसांतिसहसाधुगुरुसहनिपुरानअक्रुतिकृजो
रागवाजिनोति ॥ तुलसीप्रभुसुभावसुरतरुकोसोज्योंदरपनमुखकांति ॥ २३३ ॥ जनम
गयोवादीहीवरविनी ॥ परमारथपालेनपस्योकछुअनुदिनअधिकअनितपेलनबातल रा
तिकपनगोचलिजोबनजुवतिलियोजीतितिरागवियोगसोगश्रमसंकुलबडिवयहृथ
ह्रीअतिती ॥ रागरोगइर्षाविमोहबसरुचेनसाधुसमीति ॥ कहेनसुनेगुनेगनरघुवरकेभ ५९
ईनरामपदप्रीति ॥ हृदयदहतपछितातिअनलरवसुनतदुसहभवभीति ॥ तुलसीप्रभु

सोंहोरहोकीवी॥ समुझिविरदकीरीति॥२३४॥ऐसेहिंजनमसमूहसिरानें॥प्राणनाथर
घुनाथस्वामीतजिसेवतचरणविरानें॥जेजडजीवकुटिलकायरखलकेवलकलिमल
सानें॥विलषतवदनप्रसंसततिनकहंहरितेंअधिककरिमानें॥सुखहितकोटिउपा
यनीरंतरकरतनपायपिरानें॥सदामलिनपंथकेजलज्योंकवहूनहृदयथिरानें॥य
हदीनतादुरिकरिवेकहूंअमितजतनउरआनें॥तुलसीचितचिंतानमीटैविनुचींतामनि
पहिचानि॥२३५॥जोपैजियजानकीनाथनजानें॥तोसवकर्मधर्मश्रमदायकऐसेइकह
तसयानें॥जेसुरसिद्धमुनिसजोगविदवेदपुरानवषानें॥पुजालेतदेतपलटैंसुखहानि
लाभअनुमानें॥काकोनामधोषेहूंसुमीरतपातकपुंजसिरानें॥विप्रवधिकगजग्री
धकोटिखलकोनकेपेटसमानें॥मेरुसेदोषदूरिकरिजनकेरेनुसेगुनउरआनें॥तुलसी
दासतेहिसकलआसतजिअजहूनभजहिअयानें॥२३६॥काहेनरसनारामहिगावहि॥
निसिदिनपरअपवादभेकज्योंरटिरटिरागवढावहि॥नरमुषसुंदरमंदीरपावनवसि
जिनिताहिलजावहि॥ससिसमीपरहित्यागिसुधाकतरविकरजललयलावहि॥काम
कथाकलिकैरवचंदनीसुनतश्रवनदैभावहि॥तिनहिहटकीकहहरिकलकीरतिकर
नकलंकनसावहि॥जातिरूपमतिजुक्तिरुचिरमनिरचिरचिहारवनावहि॥सरणसु

५० खेद रविकुल सरोज रवि राम नृप हि यहि रावहिं ॥ बाद विवाद स्वाद तजि हरि भज सरल चरि
त चित लावहिं ॥ तुलसीदास संभव तरै नित हूं पुर लै पुनि तन सपावहिं ॥ २३३ ॥ आपनो हित रावरे
57 सों जो पै सूझै तौ जन तनु पर सीस अछत सुधि क्यौं कबंध ज्यौं जूझै ॥ निज अवगुन गुन राम रा
वरे लखि सुनि मति मन रूझै रहनि कहनि समुझनि तुलसी की को कृपालु बिनु बूझै ॥ २३४ ॥ जा
को हरि दृढ करि अंग कर्यौ सो सुसील पुनीत वेद विद विद्या गुननि भर्यौ ॥ उतपति पांडुसुत
न की करनि सुनि सतपंथ डर्यौ ॥ ते त्रैलोक्य पूज्य पावन जस सुनि सुनि लोक तर्यौ ॥ जो निज ध
रम वेद वोधित सो करत न कछु विसर्यौ ॥ विन अवगुन कृकलास कूप मज्जित कर गहि उधर्यौ ॥
ब्रह्म विसिष ब्रह्मांड दहन छम गर्भ न नृपति जर्यौ ॥ अजर अमर कुलिसहु नाहिन वध सो पु
नि फेन मर्यौ ॥ विप्र अजामिल अरु सुरपति तें कहा जो न हि विगर्यौ ॥ उनको कियो सहाय ब
हुत उरको संताप हर्यौ ॥ गनिका अरु कंदरप तें जग महं अघ न करत उवर्यौ ॥ तिनको चरित
पवित्र जानि हरि निज हृद भवन धर्यौ ॥ केहि आचरन भलो मानैं प्रभु सो तौ न जानि पर्यौ
॥ तुलसिदास रघुनाथ कृपा को जोवित पंथ खर्यौ ॥ २३५ ॥ सोइ सुकृती सुचि सांचो जा
हि राम तुम रीझे ॥ गनिका गीध वधिक हरिपुर गए लै कासी प्रयाग कब सीझे ॥ कवहूं न डि
ग्यौ निगम मगतें पग नृग जग जानि जिते दुख पायो ॥ गज धौं कौन दीछित जाके सुमिरत

लिएसुनामबाहनतजिधायो॥ सुरमुनिबिप्रबिहायबडेकुलगोकुलजनमगोपगृहलिन्हो॥
॥ बारबारहियहरिभवकोरीतिमोजननजाईबिदुरघरकीन्हो॥ मानतभलेभावभगतन्हको
कछूककरिनियारथ्यनजाई॥ तुलसीसहजसुभारामसबसुरसबेजलकीचिकीनाई॥ १४०॥
तबतममोहिसेमेकेसेहूं नामलीयोकोउपावरसुनिसादरआगेह्वैलेते॥ पापषानिजिय
जानिअजामिलजमगनतममकीनसताकाँभेते॥ लियोछडाइएकरमीजनतपिसनदीनग
एरिससेते॥ गोतमतियगजगीधबिटपकपिहैनाथमिकेमालुसुतेते॥ जिनजिनकाजसाः
धुसमाजतजीकृपासिंधुतबतबउठिनहंगेते॥ अजहूँअधिकआदरएहिद्वारे॥ पतितहु[illegible]सदनको
हू[illegible]नहींयेतो॥ मेरोपासंघ्योनअजिहेहूगएहेहानेपलजेते॥ होअवलों
करतूतितावरिचितवतहैंतोनरावरेचेते॥ अवतुलसीपूतरांबांधिहेसहिनजाईमोसोंपरि
हसपते॥ १४१॥ तुमससमदीनबंधुनदीनकोउमोसमसुनहूनृपतिरघुराई॥ मोसमकुटी
लमोलिमनिनहिजगतुमसमहरिनहरनकुटिलाई॥ होमनबचनकरमपातकरत
तुमकृपालपतितनगानिदाई॥ होंअनाथतुमप्रभुअनाथहितचितवहसुरतिबिसरिज
निजाई॥ होआरतआरतिनासनतमकीरतिनिगमपुराननगाई॥ होंसभीततुमहरनस
कलभयकारनकवनकृपाबिसराई॥ तुमसुखधामरामश्रमभंजनहोंअतिदुखीबिबि

पतितद्वा
तहौतपु
नितको
केते॥
७

सेसत
नको
हैंठिग
ति

विधि श्रमपाइ ॥ यह जिय जानि दास तुलसी कहं राघव हूं सरण समुझि अपनाई ॥ २४३ ॥ एही ज्ञान
५८ चरनै चित लायो ॥ नाहिन नाथ अकारन को हितु तुम सम आन पुरान श्रुति गायो ॥ जननि जन-
58 क सुत दार बंधु जन भए बहुत जहं जहं जायो ॥ सब स्वारथ हित प्रीति कपट चित काहूं न हरि करि कृपा
जुड़ायो ॥ जतन अनेक किए सुख कारन हरिपद विमुख सदा दुख पायो ॥ अब थाक्यो जलहि-
न नाव ज्यों देखत विपति जाल जग छायो ॥ मो कहं नाथ बूझिये यह गति सुख निधान निज प-
सु विसरायो ॥ अब तजि कोप करहु करुणा हरि तुलसी दास सरण नत आयो ॥ २४४ ॥ एहि ते मै
हरि ज्ञान गवायो ॥ परिहरि हृदय कमल रघुनाथहि बाहर फिरत विकल भयो धायो ॥ ज्यों कुरं-
ग निज अंग रुचिर मद अतिमति मंद मरम नहि पायो ॥ खोजत गिरि तरु लता भूमि बिल परम सुगं-
ध कहां ते आयो ॥ ज्यों सर विमल वारि परिहरि तृन पर कच्छू सेवारन न छायो ॥ जारत हियो ताहि-
न जी सों सठ चाह तन एहि विधि चित्र धाव डरायो ॥ व्यापत त्रिविधि ताप तन दारुण तापर दुसह दरि-
वि द्र सतायो ॥ अपने धाम नाम सुरतरु तजि विषय बबूर बाग मन लायो ॥ तुम सम ज्ञान निधान न ग
मोहि सम मूढ़ न आन पुरानन गायो ॥ तुलसी दास प्रभु यह विचारि जिय कीजै नाथ उचित म-
न भायो ॥ २४५ ॥ मोहि मूढ़ मन बहुत विगोयो ॥ याके लिये सुनहु करुनामय निधि मैं जग जा- ५८
नमि जनमी हु खरोयो ॥ सीतल मधुर पियूष सहज सुख निकट हि रहि नहू विन जुबोयो ॥ वह

भांति भ्रम करत मोह वस हृथा में समति वारि विलोयो ॥ कमठ की पीठ जिय जानि सानि चित चाहत
कुटिल मन हि मल थायो ॥ तृषा वंत सुरसरि विहाय सठ फिरि फिरि विकल अकास निचायो
॥ तुलसिदास प्रभु कृपा करहु अब मैं निज दोस कछू न हि गोयो ॥ डासत ही गई वीति निसा सव
कवहू न नाथ नीद भरि सोयो ॥ २४६ ॥ लोक वेद हूं विदित वात सुनि समुझि मोह विकल म
२ ति थिर न लहत छोटे वडे षोटे षरे मोटे हू दूवरे राम रावरे निवाहे सव ही की निरवहत ॥ होतो जो अ
पने वसर हतो एक ही वस हू नीन हरष सोक सासनि सहत ॥ चहतो जो ई जो ई लहतो सो ई सो ई
कहू भांति काहू की न लालसा रहत ॥ करम काल सुभाउ गुन दोष जीव जग माया सो सभय भौं
ह चं[illegible]न चहत ॥ ईसान दिगीसन जोगीसन मुनीसन हू छोडत छोडाए तें गहाए ते गहत ॥
सतरंज को सो साज काठ को सव समाज महाराज वाजी रची प्रथम न हत ॥ तुलसी प्रभु के हा
थ हारिवो जीतिवो नाथ वहू वेष वहूं मुख सारदा कहत ॥ २४७ ॥ राम जपु जीह जानि प्रीति (
सो प्रतीति मानि राम नाम जपे जाइ जीव की जरनि ॥ राम नाम सों रहनि राम नाम की कहिने
कुटिल कलि मल सोक संकट हरनि ॥ राम नाम के प्रभाउ पूजीयत गणराउ कियो न दूराव
कही आपनि करनि भव सागर को सेतु कासी हूं सुगति हेतु जपत सादर संभु सहित घरनि ॥
वालमीक व्याध हे अगाध अपराध निधि राम नाम जपे पूजे मुनि अमरनि रोक्यो विंध्य सो (

५५ छ्या सिंधु घट जन्म हू नाम बल हारो हिय षारो भयो भूसुर रुरनि॥ नाम महीमा अपार शेष शुक वा
र वार मति अनुसार बुध वेद हूं वरनि॥ नाम रति काम धेनु तुलसी हूं को काम तरु राम नाम हि।
ए है विमोह तिमिर तरनि॥ २४७॥ पाहि पाहि राम पाहि राम भद्र पाहि राम चंद्र सुजस श्रवन सु
नि आयो हों सरन॥ दीन बंधु दीनता दरिद्र दाह दोष दुष दारुन दुसह दर दरप हरन॥ जब जब
जग जाल व्याकुल करम काल सब षल भूप भए भूतल भरनि तब तब तन धरि कृपाल भू।
55 मि भार हरि कियो थापे मुनि सुर सरनि॥ लोक वेद सव साषी काहू की न रती राषी रावन की वंदि
लागे अमर मरन लोक दए शोक गए लोकनाथ राम राज भयो धरम चारिहू चरन॥ सिला ग्रह
गीध कपि भील भालु रातिचर ष्याल लही हां पाल किए हारन तरन॥ पील उधरन सील सिंधु ढी
ल देषि तोहि सिसे चाहत गलानि गरन॥ २४८॥ भली भांति पहिचाने जाने साहेव जहां लौं ज
ग जूड होत थोरे थल ठौर रहिगा रम॥ प्रीति न प्रवीन रीति हीन रीति के मलीन माया धीन सव
की॥ ऐं काल हूं करम॥ दान वद न जब ढे महामूढ मडु चढे जीते लोक नाथ नाथ वल नि।
भर मदी किये कि दिए वरषी कि षी कि घाले घर आपने ने वाजे कितो काहू न सरम से वा सा
वर्थ नि तूं सुजान सम रथ साचो सब गुन धाम राम पावन परम॥ शुरु षसु सु वेए करसथे क। ५५
रूप तोहि विदित विसेषि घट घट के मरम॥ तोसो न दयालु न तपालन कें गाल मो सो दयामें।

वसनदेवसकलथरम॥ रामकामनरुक्रोहचाहेरुचिमनमाहरुतुलसीविकलवलिकलि
कुथरम॥ २५०॥ तौहौंवारवारप्रभूकीकोविकैविजावनोनजोपैमोकोंहोनोकहूठाकुरठहरु
श्रीतुलसीअभागीमोसेंनैकृपालपालेपोसेराजामेरेराजारामअवधसहरु॥ सेयेनदिनेसन दि०॥स
गनेसनगौरिहितकैनमानेविधिहरिऔनहरु॥ रामनामहीसोंजोगक्षेमनेमप्रेमपनसु
धासोभारोसोयहरूसरोजहरुसमाचारसाथकेअनाथनाथकासोंकहौंनाथहीकेहाथ
सबचारपोपहरु॥ निजकाजसरकाजआरतकेकाजरामरूकियेविलंवकलकरतगहरु री
तिसुनिरावरीप्रतीतिप्रीतिरावरेसोंडरतहौंदेषिकलिकालकोकहरु॥ कहेहीवनैगीकी।
कहाऐरामवलीजाउंतुलसीतुमेरोंहैहिएनहरु॥ २५१॥ रामरावरोसुभाउगुनसीलम।
हिमाप्रभावजान्योहरहनुमानलषनभरत॥ जिनकेहिएसुथलरामप्रेमसुरतरूलसत
सरससुषदफूलतफरत॥ आपमानेस्वामीकेसषासुभायभायपतितेसहेनेहसावधा।
नरहतडरत॥ साहवसेवकरीतिप्रीतीपरमितिनितिनेमकोनिवाहएकटकनटरतसु
कसनकादिप्रह्लादनारदादिकहैरामकीभगतिवडीविरतिनिरति॥ जानेविनाभगतिन
जानिवोतिहारेहाथसकलसयानेनाथपगनिपरत॥ छमतविमतपुरानपथएकमतने
तिनेतिनिगमकहत॥ औरनिकीकाहाचलीएकेवातभलेभलीरामनामलीयतुलसीहूसे

९॰ तरत ॥ २५२ ॥ बापआपनेकरतमेरीघनिघटीगईहै ॥ लाललबिल्वारकीसुधारीयेवारकबलि
60 रावरिभलाईसबहीकीभलिभई ॥ रोगबसतनकुमनोरथमलीनमनपरअपवादमिथ्यावा
दबानिहई ॥ साधनकीऐसीविधिसाधनबिनानहिसिधिबिगरिसम्हारैकृपानिधिकीकृपानई ॥
पतितपावनहितआरतअनाथनकोनिराधारकोआधारदिनबंधुदई ॥ इनमेंएकोनभयो
बूझीनजूझैनजयोताहीतेंत्रितापतयोलुनियतबई ॥ स्वांगसुधोसाधुकोकुचालिकलि
तेंअधिकपरलोकफीकीमतिलोकरंगरई ॥ बडेकुसमाजराजआजुलोंजोपायोदीनकेहू
भांतिमहाराजनामआटलईरामनामकोप्रतापजानियतनीकेआपुमोकोगतिदूसरीनवि
धिनिरमई ॥ खीझिबेलायककरतबकोटिकटुरिझिबेलायकएकतुलसीकीनिलजई ॥
२५३ ॥ रामराखिएसरणराखिआएसबदिन ॥ विदिततिलोकतिहूकालनदयालदूजोआरत
प्रणतपालकोहैप्रभुबिनलालेपालेपोषेतोषेआलसीअभागीअघीनाथपैअनाथन
सोंभएनउरिन ॥ स्वामीसमरथऐसोहोंतिहारोजैसोतैसोकालचालिहेरिहोतहीयघनि
छिनरिझिबिझिबिहसिअनखहूंतेंएकबारतुलसीतूंमेरोप्रभुकहियतकिन ॥ जाहिसुलनर
मूलहोहिसुखअनुकूलमहाराजरामरावरीसोंतहिछिन ॥ २५४ ॥ रामरावरोनाममेरोमात ९॰
पितहैसुजनसनही ॥ गुरुसाहेबसखासुहृदरामनामप्रेमपनअविचलवितहे ॥ सतकोटि

चरितअपारदधिनिधिमथिकाढ़िलीयोवामदेवनामघृतहै॥नामकोभरोसोवलचारि
फलहूको॥फलसुमीरियेछाडिछलभलोजानतहै॥स्वारथसाधकपरमारथदायकनाम
नामसारीघिनऔरहितहै॥तुलसीसुभायकहीसाचीपरैगीसहीसीनानाथनाथनके॥वि
नहूकोचितहै॥२५५॥रामराबरोनामसाधुसुरतरुहै॥सुमिरत्रिविधितापहरनेहूवनका
मसकलसुकृतसरसिजहूकोसरुहै॥लाभहूकोलाभसुखहूकोसुखसर्वसुपतितपाव
ननडरहूकोडरुहै॥निचेहूकोईचेहूकोरंकहूकोरायहूकोसुखदसुलभअपनोसोघरुहै॥वे
दहूपुरानहूपुरारिहूपुकारिकह्योनामप्रेमकारीफलहूकोफरुहै॥ऐसेरामनामसोन
प्रीतिप्रतीतिमनमेरेजानवेरसोनरखरुहै॥नामसोनमातुपितहितमीतवंधुगुरसाहेव
सहीसुशीलसुथाकरुहैनामसोनिवाहूनेहूदीनकोदयालदेहुदासतुलसीकोवलिवडो
वरुहै॥२५६॥कहेविनरह्योनपरनकहेंरामरसैनरहत॥तुमसेसुसाहवकीओटजाई॥
खोटोघरोकालकोकरमकीकुसासनिसहत करतविचारसारपैयतनकहूकछूसकल
वडाईसवकहांतेलहत॥नाथकीमहीमासुनिसमुझिआपनिओर॥हारिकैहहूहियदे
यदुदहतसखानसुसेवकनसुतियनसुप्रभुआपुमाइवापतहीसांचीतुलसीकहतमेरी
तोथोरीहैसथरिहैगीविगरीजुवलिरामरावरसोरहिरावरिचहत॥२५७॥दीनवंधुदूरि

कीयदीनकों नदुसरी सरण आपुकों भले हैं सब आपनेकों कोउ कहूं सबकों भले हे राम रावरे बन
६१ पाहन पसु पतंग कोल भील निसिचर षल कांच तें कृपानिधान कीन्हे सुबरन ॥ दंउ कपुं ही मिपा
61 यपर रसि प्रनिते भए उकटे उकाठ लागे फूलन फरन ॥ पतितपावन नाम बाम हूं दाहीना देव हूं निन
हूं सह हूं बिणदलन ॥ शील सिंधु तो सीं ऊंची नीची जो कहत सो भा भलो तो सों तेंही तुलसी कों आ
रत हरन ॥ २५८ ॥ जानियें चानि मैं बिसारे हो कृपानिधान एते मान ढीठ हो उलटो देत षोरि हो ॥ क
रन जलन जा सों जोरिवो कों जोगी जन तासों क्यों हूं जुरे सो अभागो बेठो तोरि हो ॥ मोसो दोस को
स को भुअन को सदूसरो न आपनि समुझि हूं कि आयो टक को रि हो गाड़ि के षान की नाई माया
मोह की बड़ाई छिन हीन जीत छिन भजनत बहो रिहो ॥ बड़ो सांई दोहू न बेरावरि मेरि को कुनाथ की स
पथ की ए कहत करा रिहों ॥ हूरि की जे हारं तें लवार लाल चि प्रपंची पाच सुथा सो सलिल सकरि
ज्यां गंहं जो रिहों ॥ राषिये निकें सुधारि नीच के डारिये मारि हूं ओर के विचार अवन नी हो रिहों
तुलसि कही है सांचि रेष बार बार षोची ची ढील की एनाथ महिमा की ना बबो रिहो ॥ २५९ ॥ प्रभु
को उदास भाव जनको पाय प्रमाय हूं हूं भांति दीन बंधु दीन दूष दहे गो ॥ मे नो दियो छाती पवि लियो
कलिकाल दबि सासति सहत सुपरबस को न सहेगो रावरि सुधारि जो बिगारि बिगरेगी से रिक ६१
हों बलि बेद कीन लोक हा कहेगो ॥ वां की बिरदावली बनें गी पाले ही कृपाल अंत मेरो हाल हे रि

के

बौनमनरहैगो॥करमीधरमीसाधुसेवकविरतरतआपनभलाईभलकहांकोनलहैगो॥तेरे॰
मुहफेरेंमोसेकायरकपूतकूरलटेलटपटेकोकौंनपरिगहैगो॥कालिपायफेरनदेखादयाल
सबहीकेलोहिबिनमोहीकबहूंनकोईचहैगो॥करमवचनहिएकहौंरामसोंहकिएतुलसी॰
पैनाथकेनिबाहैंनिरवहैगो॥२६०॥साहबउदासभएदासषाससीमहोतमेरिकहाचलीहैं
वनाउजाइसेहौं॥लोकमैनठौउपरलोककाभरोसोकोनहैंतौवलिजाउरामनामहिते॰
लहौंहौं॥करमसुभावकालकामकोहलोभमोहअतिहीनराहनगरिवगाछैगसेहौं॥को
दिवेकोमहाराजवाधिवेकोकोटीभटपाहिप्रभुपाहितिहूंतायदयौहौं॥रीझिबूझिसबकीप्र
तीतिप्रीतिएहीद्वारदूधकोजरयौसोपियतफूंकिफूंकिमयौहौं॥अननतचयौनभलोसुपथ॰
सुचालचलौनीकेंजिवजानिइहाभलोअनचयौहौं॥तुलसीसमुझिसमुझायोमनवारवा
रआपनेसुनाथसोंहौंकहिनिरवयौहौं॥२६१॥मेरीनवनेवनोपमेरेकोटीकलपलौरामरा
वरेवनाएवनैपाउपलमै॥निपटिसीयानोहोंकृपानिधानकहाकहौलिएवेरवदलीआमोल
मनिआउमे॥मानसमलीनकरतवकलिमलपीनजीहहूंनजयोनाउवक्योआउवाउमें॥कु
पथकुचालचल्योभयोनभूलेहूंभल्योवालदसाहूंषेल्योचलीनसुभउमें॥देषीदेषासंततेंकी
देअतेंभरेभलाईप्रगटजनाईकीयेहूरिनहूवाउमें॥रागरोषदोषपोषेगोगानसमेतमनहीको
ईन॰

६२ भगतिकीनिसेनीहीकोभाउमैं॥आगिलेपिछिलेअबहूकेअनुमानहीतेंबूझियतगतीकछूकी
न्हौतौनकाउमैं॥जनकहैरामकोप्रतीतिप्रीतितुलसीहैझूठेसाचेआसरोसाहेबरघुराउमैं॥२६२
कसोनपरलविनकहैंनरप्रेमपरतवदेषासुखवडेसोंकहतेवलिदिनता॥प्रभुकीवडीवडाईआपनि
छोटीछोटाईप्रभुकीपुनितताईआपुपापपिनताहूहैंआरसमुझिसकुचीसहमतमनहान्मु
खहोतलोनसुनिस्वामीसमीचीनता॥नाथगुनगाथगाएहाथजोरीमाथनायनीचेउनिवा
जेप्रीतिरीतिकीप्रविनता॥एहीदरवारगर्वतेसऊलहानिलाभजोगछेमकोगरीवीमिसकीन २३
ता॥मोयेइसकंठसोनहूवरोविभीषणसोहूझिपरिरावरेकीप्रेमपराधीनता॥ईहाकेसयान
एअयानएसहसमसत्यभायकहेसेतिमिटैमनकीमलिनता॥गिद्धसिलासवरीकीसुधि
सवदिनकिएंहोंयगीनस्वामीसोंसहेनहेतहीनता॥सकलकामनादेतनामनेरोकामतरुसु
मीरतहोतकलिमलछलछिनता॥करुणानिधानवरदानतुलसिचहतसीतापतिभक्तिसु
रसरिमनमीनता॥२६३॥नाथनीकेकैजानविठीकजनजीयकीरावरोभरोसोनाहिकेसुप्रे
मनेमरुचीरहनिकहनी॥गतिमतितियकीहूःखातसुकृतवससवहिसोंसंगपरखोपरषीप
राईगतिआपनेहूंकियकीमेरेमलेकोगोसांईपोचसोचहों॥होंहीसकलकीएकहौसाहसां ६२
चीसीयपिकी॥सानहूंगिराकेस्वामीवाहेरअंतरजामी॥ईहाक्योहूरगीवातनुखकीओहि

यकी॥ तुलसीतिहारोतुमहीपैतुलसीकेंहितराषकैकहैंनेंकछूद्दूहेमाषीहीयकी॥ २६४॥
मेरोकह्यौसुनजीयपुनीभावेसोईकरुसो॥ च्यारिहूविलोचनविलोकुतूतीलोकमहेतेरोतिहू
कालकहूकोहेहितूहरिसो॥ नएनएनेहअनुभएदेहगेहवसपरषेप्रपंचीप्रेमपरतउघरिसो
सुहृदसमाजदगावाजिहिकोसोदासूतजवजाकोकाजतवमिलैपायपरिसोविवुधसयाने
पहिचानेकीयोंनाहीनीकेंदेतएकगुनलेतकोटिगुनभरिसो॥ करमधरमश्रमफलरघुवरविनुरा
षकोसोहोमउसरकोसोवरषो॥ आदिअंतविचारलोकरेसवहिकोनाकोजसलोकवेदरष्योहेग
रिसो॥ सीतापतिसारिषेनसाहेवदयानिधानकेसकलपरैररटिवैठोसावीसरिसो॥ जीवकोजी
वनप्रानप्रानकोपरमहीतप्रीतमसुनितहातनिचननिदरिसो॥ तुलसीतोकोकृपालजोकी
योकोपालपालचित्रकूटकोचरित्रचेतनचेतकरिसो॥ २६५॥ तनसुचीमनरुचिमुखकहोहोत
जनहोसियपीयको॥ किहिअभागजानोनहीजोहोइनाएसोनातोनेहननिको॥ जलचा
हतपावकलहौंजलहोतअमीको॥ कलीउचालसंतनकोफीसोसहीमोहिकछूकहमन
नरनितमीको॥ जानिअंधअंजनकहैवनवाघिनिद्दीको॥ सुनीउपचाररविचारकरोचित
चीतवुथीवलदहरिहीको॥ प्रभुसोकहतसकुचातहौंपरोजिनफिरिफीको॥ निकटवोलि
वलिवरजीयपरेहहिष्यालअवतुलसीदासजडजियकों॥ २६६॥ ज्योंज्योंनिकटभयोचह

६३ तरुपाल त्यों त्यों हू दिपस्यौ हौं ॥ तुम बहू जु गरस एक राम हौं हूं राव रोज यपि अब ओगुन न भस्यौ
हौं ॥ बीच पाई नि चवीच हू नरक रनिकस्यौ हौं ॥ हौ सुदवन कुवरन की योन्ह पतं भिषारि कु रिसु म
63 लिनं कुमति कस्यौ हौं ॥ अगि नित मिरिका ननफिस्यौ बिन आगि जस्यौ हौं ॥ चित्रकूट मैं मेल षी
कलि कुचालि सब अपरूर निठुस्यौ हौं ॥ माथु नाई ह्वा थजो रिनाथ सो कहौं ॥ षरो हौं चीन्हो चा
रजीय मारि हेत तुलसी सो कथा सुनि प्रभु सो कही गुदरि निवस्यौ हौं ॥ २५७ ॥ प्रनु करि हौं हु
ठी आजु सौं राम द्वार पस्यौ हौं ॥ तू मेरो यह बिनु कहे उठी हौं न जनम भरि प्रभु की सौं हु करि नि
वस्यौ हौं ॥ दै दै धका जम भटथके टास्यो न टस्यौ हौं ॥ उदर दूसह सासति सही बहु बार जनमी जग
नरकनि दरि निकस्यौ हौं ॥ हो माच ललले कूटि हौं जेहि लागि बिगस्यौ हौं ॥ तुम दयाल बनि है दयं
बलि बील बनकी जे जात गलानि गस्यौ हौं ॥ प्रगट कहत जो सकुची ये अपराध भस्यौ हौं ॥ तौ
मन मैं अपना इये तुलसी कृपा करी कलि बिलोकी भभस्यौं हौं ॥ २५८ ॥ तुम अपनो तब जानि
हौ जब मन फिरि परिहै ॥ जिहि सुभाय बिषयनि लगो तेही सहज नाथ सो नेह छाडि छल क
रिहै ॥ सुत की प्रीति प्रतीति मीत की न्टप ज्यौं डर डरिहौं ॥ अपनो स्वारथ स्वामी सौं चहूं विधि चा
तक ज्यौं एक टक सौं नहिं टरिहै ॥ हरषि है न हि अनिआदरौं नि दरें न जरि मरिहै हानि लाभ दूख ६३
सुख सबै समहित चित अनहित कलि कुचाली परिहरिहै ॥ प्रभु गुन सुमी रेह र षि है नीर नैन

ढरिहै॥तुलसीदाससभयोरामकोविसासप्रेमलषिआनंदउमगिउरभरिहै॥२६९॥रामक
कवहूंप्रीयलागीहोजैसेनीरमीनकों॥सुखजीवनकोमनिज्यों॥फनिकेहितज्योंधनलोभ
लीनको॥ज्योंसुभायप्रीयलागतनागरीनारनवीनकों॥त्योंमेरोमनलालसाकरैकरु ग
णाकरुपावनप्रेमपीनकों॥मनसाकोदाताकहैश्रुतिप्रभुप्रवीनकों॥तुलसीदासको
भावतोवली॥जाउदयानिधिदीजैदानदीनकों॥२७१॥कवहूंकृपाकरिरघुवीरमोहूंचिते
हो॥भलोवुरोजनजानीदयानिधिअोगुननचितैहो॥जनमजनमहौमनजीत्योअवमोहि
जितैहो॥हौंसनाथह्वैहौंसहितुमहूंअनाथपतिजोलघुतेहिनभीतैहो॥विनयकरोअघ
भयतेतुमपरमहितैहो॥तुलसीदासकासोंकहैतुमहिसवमेरेप्रभुगुरुमातुपितैहो॥
२७२॥जैसोहौंतैसोरामरावरोजननिजनिपरिहरिए॥कृपासिंधुकोसालधनिसरणागतपा
लकढरनिआपनीढरिए॥हौतोविगरायलअौरकोविगरोनविगरिए॥तुमसुधायाविआ
यसदासवकीसवहीविधिअवमेरिउसुधरिए॥जगहसिहैमेरेसंग्रहहेंकतएहिडरडरिए
कपिकेवटकीन्हेसषा॥जेहिपुलिसरलचिततेहिसभायअनुसरिए॥अपराधीतोआप
नोतुलसीनविसरिए॥टूटीवांहगलेपरैफूटेंहूंविलोचनपीरहोतहितकरिए॥२७३॥तु
मजनिमनमैलोकरहूंलोचनजनिफेरो॥सुनहूरामविनरावरेंलोकहूंपरलोकहूंको

९४ उमेपरमहितमेरे। अगुनअबलायकआलसीजानिअधमअनेरो॥ स्वारथकेसाथीन्हतज्यौंतिज
राकोसोटोटकअवचटउलटीनहेरी॥ भक्तिहिनवेदवाहिरोलषिकलिमलयेरो॥ देवनहूदेवपरि
हस्यौअन्यावनतिनकोहौंअपराधीसवकेरो॥ नामकीओटपेटभरतहूंपैकहावतचेरो॥ जगत
विदितवातह्वैपरिसमुझियेधौंअपनेलोककिवेदवडेरो॥ ह्वैहैजवहितवतुमहितेंतुलसीको
भलेरो॥ दीनदिनहूंदिनविनारहैवलिजाउविलंवकीयअपनाइयेसवेरो॥२७३॥ तुमतजीहूंका
सोंकहोंऔरकोहीतमेरें॥ दीनवंधुसेवकसखाआरतअनाथपरसहजछोहकेहिदेरें॥ वहूत
पतितभवनिधितरेविनतरनिविनुवेरें॥ कृपाकोससतिभायहूंधोषेहूतिरछेंहूंरामतिहारेहे
रे॥ जेहिचितवनिसोंधीलगेचितैयेसवेरें॥ तुलसिदासअपनाइयेकीजेनढीलअवजीवन
अवधिनितनेरें॥२७४॥ जाउकहांठोरहेकहांदेवदुषीनदिनको॥ कोकृपालस्वामीसारिषोरघु
पतिसरणागतसवअंगवलविहीनको॥ गनहीगुनहीसाहेवचेहेसेवासमीचीनको॥ अध
मअगुनआलसीकोपालिवोफलिआयोरघुनायकनवीनको॥ मुखकेकाहाकहोंविदि
तहेजियकीप्रभुप्रवीनको॥ तीहूंकालतिहूंलोकमेंएकटेकरावरीतुलसीसेमनमलीनको
२७५॥ द्वारद्वारदीनताकहीकाढिरदपरिपाहूं॥ हेंदयालदुनीदसादिसादुषदोषदलनछ ९४
मीकीयोनसंभाषनकाहूं॥ तनुयातजनतकुटिलकीटज्योंतज्योंमातपिताहूं॥ काहेकोरोसदोस

मेरो ईस्र भाग मो सों सठ ऊचत अव कूस्र तक्का हूं ॥ दूखित देषि संतन कह्यो सोचै जनि मन माहूं ॥
तो सो पसु पावरपानत की परिहरे न सरण गए रघुपति ओर नीवाहूं ॥ तुलसि तिहारो भयो सु
खि प्रीति प्रतीति विनाहूं ॥ नाम की महिमा षील नाथ को मेरो भलो विलोकि अवत सउचा
उ सिहा हूं ॥ २७६ ॥ कहां न गयो कहा न कीयो पीस का हिन नया ॥ राम रावरो विन भए जन ज
नमी जनमी जमहू खद सह दिसी पायो ॥ श्रीम विव सषा सदास ह्वै नीच प्रभु न जनायो ॥ हाहा
करि दीनता कहि द्वार द्वार वार वार परि न छार मुह वायो ॥ असन वसन विन वावरो जह तह उ
ठीयायो ॥ मही मान प्रीय प्राण ते तजी वोली षल न आगे षिन षिन पेट षलायो ॥ नाथ हाथ
कछू नहि लग्यो लाल च लल चायो ॥ सो च कहों नाच को न सो जो न मोहि लोभ लघु निल
जन चायो ॥ श्रवन नयन मन अगमल गे सव थल पतितायो ॥ मूढ मारि हिय हारि कै हित हे
रि फेरि अव चरण सरण तकि आयो ॥ दसरथ के समरथ तु ही त्रीभवन जस गायो ॥ तुलसि
नमित अवलोकी ये वलि यां हू वोल दै विरदावलि वुलायो ॥ २७७ ॥ राम राए विन रावरें मेरे
को हित सांची स्वामी सहित सव सों कहूं सुनि गान विसेषि को उरे षष्हू सरि सांचो ॥ देह जीव जो
ग के षषा म्रषा टांच निटांचो ॥ कीए विचार सार कदली ज्यों मनि कनक संग लघु लसन वि
च विच कांचो ॥ विनय पत्रीका दीन की वाप आपु ही वांचो ॥ हिये हेरि तुलसी लिषी सो सुभाय

९५ सहीकरिबहूरिहिएहरिबोपांचो॥२७८॥पवनसुवनरिपुदवनभरतलाललषनदीनकी॥निज॰

निजअवसरसुधिकिएबलिजाउदासआसपूजीहैखासखीनकी॥राजद्वारभलेसबकहैसाध

समीचीनकी॥सुकृतसुजससाहिबकृपास्वारथपरमारथगतिभईगतिविहीनकी॥स

मयसंभारिसुधारिवीतुलसीमलीनकी॥प्रीतीरीतीसमुझाईप्रणतपालकृपालहिपरमि

सी तिपराधीनकी॥२७९॥मारुतिमनरुचीभरतकीलषिलषनलालकहीहै॥कलिकालहू॰

नाथनामसोंप्रीतीप्रतीतिएककिंकरकीनिवहीहै॥सकलसभासुनिलैउठीजानिरीतरही

है॥कृपागरिबनेवाजकीदेषतगरीबकोंसाहसांबाहगहीहै॥विहसिरामकह्योसत्यहीसु

धिमैंहूंलहीहै॥मुदितमाथनावतबनितुलसीअनाथकीपरिरघुनाथकहीहै॥२८०॥

इतिश्रीतुलसीदासकृतविनयपत्रीकासंपूर्णसमाप्तम्॥ शुभं ॥ श्रीराम ॥ श्रीराम

९५

कोटि पतंग समाहीं ॥ ईस उदार उमापति परिहरि ॥ अनत जो जाचन जाहीं ॥ तुलसिदास ते मूढ़
मांगने ॥ कबहूं न पेट अघांहीं ॥४॥ बावरो रावरो नाह भवानी ॥ दानि बड़ो दिन देत ॥ दये बिनु बेद
बड़ाई भानी ॥ निज घर की बर बात बिलोकहु हो तुम परम सयानी ॥ शिव की दई संपदा लिख
त ॥ श्रीसारदा सीहानी ॥ जिनके भाल लिखी लिपि मेरी ॥ सुख की नहीं निसानी ॥ तिन रंकन कौ की
नाक सवांरत हौं ॥ आयो नकवानी ॥ दुखदीनता दुखी इनके दुख जाचकता अकुलानी ॥ यह
अधिकार सौंपिये औरहिं ॥ भीष भली मैं जानी ॥ प्रेम प्रसंसा विनय व्यंग्य जुत ॥ सुनि विधि की ब
र बानी ॥ तुलसी मुदित महेस मनहीं मन ॥ जगत मातु मुसुकानी ॥ ५ ॥ मांगिये गिरिजाप रागरामक
ति कासी ॥ जासु भवन अनिमादिक दासी ॥ अवढर दानी द्रवत पुनि थोरें ॥ सकत न देखि दी
न कर जोरें ॥ सुख संपति मति सुगति सुहाई ॥ सकल लाभ संकर सेवकाई ॥ गये सरन आर सु
त के लीने ॥ नीरषि निहाल निमिषहि महु कीन्हे ॥ तुलसिदास जाचक जस गावै ॥ विमल भगति
रघुबर की पावे ॥६॥ कस न दीनपर द्रवहु उमावर ॥ दारुन विपति हरन करुनाकर ॥ वेद पुरा
स न कहत उदार हर ॥ हमरि बेर कस भयउ कृपिनतर ॥ कौन भगति कीन्ही ॥ गुननिधि द्विज ह्वै प्रस
न्न दीन्हो शिव पद निज ॥ जो गति अगम महामुनि गावे ॥ तव पुर कीट पतंगौ पावें ॥ देहु काम रि
पु राम चरन रति ॥ तुलसीदास प्रभु हरहु भेद मति ॥ देव बड़े दाता बड़े संकर बड़े भोरे ॥ कि एउ।

विहरत बन बन केलि निर्त्ति नकर जोरे॥ सेवा सुमिरन पूजन जी वो पावै धन पावै॥ दरस जगजननी लगि संच। श्री
२ दास रत बिनगवन थन जोरे॥ गाउ बसौं बाम देव मैं कबहूं न निहोरे॥ अधि भौतिक बाधा भइ ते किंकर
२ तोरे॥ बेगि बोलि बलि बरजिये करतूति कठोरे॥ तुलसी दलि रुंध्यो चहै सठ साष सिहोरे॥ ८॥
सिव शिव होइ प्रसन्न करु दाया करुणामय॥ उदार कीरति बलि जाउं हरहु निजमाया॥ जल।
जा जनैन गुण अयन मैन रिपु महीमा जान न कोई॥ बिन तव कृपा राम पद पंकज सपने हू भक्ति न हो
ई॥ रिषय सिद्ध मुनि मनुज दनुज सुर अपर जीव जग मांही॥ तव पद विमुख न पार पाव कोउ कलप
कोटि चलि जाही॥ अहि भूषन दूषन रिपु सेवित देव देव त्रिपुरारी॥ मोह निहार दीवाक
र शंकर सरन शोक भयहारी॥ गिरिजा मन मानस मराल कासीस मसान निवासी॥ तुलसी
दास हरी चरन कमल बर देहु भक्ति अविनासी॥ ९॥ देव मोहतम तरनि हर रुद्र शंकर स। दंडक
रण हरण मम शोक लोकाभिरामं॥ बाल शशि भाल सुविसाल लोचन कमल काम सत को।
टी लावन्य धामं॥ १०॥ देव कंबु कुंद इंदु कर्पूर विग्रह रुचिर तरुन रवि कोटि तनु तेज भ्राजै॥ भस्म
सर्वांग अर्धंग शैलात्मजा व्याल नृकपाल माला विराजै॥ २॥ देव मौलि संकुल जटा मुकुट
विद्युच्छटा तटनि बर बारि हरि चरन पूतं॥ श्रवन कुंडल गरल कंठ करुणाकंद सच्चिदानंद वं। २
देवयुते॥ ३॥ देव सूल सायक पिनाक असि कर शत्रु बन दहन इव धूमध्वज वृषभ जानं॥ व्याघ्र ग

जयरमवरीध्यानविज्ञानहृनस्थिरस्त्वस्तुनिमनुजसेव्यमाने ॥४॥ देवनांदविनतन्त्यपरडमरु
डिमिडिमिकवरग्रस्तभईव भातिकल्यानराशी ॥ महाकल्पांतब्रह्मांमंडलदवनभवनकै- दु
क लासआसीनकासी ॥५॥ देवनत्तसर्वज्ञयत्तेशास्त्रव्युतविभोविश्वभवंदसंसभवधुरारी ॥ ब्र
ह्मेंद्रचंद्रार्कवरुणाग्निवस्तमरुतजमआर्चिभवदंघ्रिसर्वाधिकारी ॥६॥ देवअकलनिरूपा-
यिनिर्गुणनिरंजनवस्तुकमेयपथ्थमेकमजनिर्विकारं ॥ अखिलविग्रहउग्ररूपाशिवस्वरूपस्त्व
सर्वगतसर्वसर्वोपकारं ॥७॥ देवज्ञानवैराग्यधनयमकैवल्यस्तवस्तभगसौभाग्यशिवसानु-
न कूलं ॥ दयिनरमूढआरूढसंसारपथ्थभ्रमतभवविमुखेतवपादमूलं ॥८॥ देवनष्टमतिदुष्ट-
अतिकष्टरतखेरगतिदासतुलसीप्रभूसरनआया ॥ बहुदेहकामारीश्रीरामपदपंकजेभ
क्तिभवहरनीगतघेदमाया ॥९॥ देवभीषणाकारभैरवभयंकरभूतप्रेतप्रमथाधिपतिविप
तिहरता ॥ मोहमूषकमार्जारसंसारभयहरणतारणतरणक्रूरनकमा ॥१०॥ देवअनलवलवि
विस्तार पुलविग्रहगौरअमलअतिधौलधरनीधराभं ॥ सिरसिसंकुलितकलकूटपिंगलजटाप
सत टलकोटीविद्युल्लछटाभं ॥११॥ देवविभ्राजविबुधापगाआपपावनपरममौलिमालेवसोभावि वि
चीत्रं ॥ ललीतललाटपरराजरजनीसकलकलाधरनोमिहरधनदमित्रं ॥१२॥ देवईंदुपावक
भानुनेनमर्दनमैनज्ञानगुणअैनविज्ञानरूपं ॥ रवनगिरिजाभवनभूधराधिपसदाश्रवन

३ कुंडलवदनस्कविभ्रमुपे ॥४॥ देवचर्मभश्रसीमूलधरस्तमकसायकचायजानहृषभेसकहृताणानि
धाने ॥ जरतस्तरभ्रसुवनरलोकसोकाकुलमहडलचितभ्रजिलहृतनरलपने ॥५॥ देवभस्मन
नभूषणंव्याघ्रचर्माबरंउरगनरमौलिउरमालधारी ॥ डाकनीसाकिनीखेचरंभूचरंमंत्रभंजन यंत्र
3 प्रवलकल्मषारी ॥६॥ देवकालश्च निकालकलिकालव्यालादघगत्रिपुरमर्दनभीमकर्मभा
री ॥ सकललोकांतकल्पांतसूलाग्रहतदिग्गजाव्यक्तगुननिर्विकारी ॥७॥ देवपापसंताप
घनघोरसंसारदीनभ्रमतजगजोनिनहिकोपित्राता ॥ पाहिभैरवरूपरामरूपीकद्रवंधुगु
रुजननकजननिविधाता ॥८॥ देवयस्यगुनगननगुनतविमलमतिसारदानिगमनारदप्रमुखब्र
ह्मचारी ॥ शेषसर्वेसयासीनश्रानेस्वनप्रणततुलसीदासत्रासहारी ॥९॥ सदासंकरंसंप्रदंसं देव
च्चिदानंदंसैलकन्यावरंपरमरम्यं ॥ कामभदमोचनंतामरसलोचनंवामदेवंभजेभावगम्यं ॥
१ ॥ देवकंबुकुंदेंदुकरगौरं ॥ शिवंसुंदरंसच्चिदानंदकंदं ॥ सिद्धसनकादियोगीद्रवृंदारि
काविस्तुविधिविंधचरणारविदं ॥२॥ देवब्रह्मकुलवल्लभंसुलभमतिदुर्लभंविकटवेषविभुं
वेदपारं ॥ नौमीकरुणाकरंगरलगंगाधरंनिर्मलंनिर्गुनंनिर्विकारं ॥३॥ देवलोकनाथविशो
स्तवनं कसूलनिर्मूलिनंमोहतमभूरिभानुं ॥ कालकालंकलातीतमजरंहरंकठिनकलिकालका ३
ननकृसानुं ॥४॥ देवतज्ञमज्ञानपाथोधिघटसंभवंसर्वगंसर्वसौभाग्यमूलं ॥ प्रचुरभवभंजने

प्रनतजनरंजनं॥ दासतुलसीसरनसानुकूलं॥५२॥ रागबसंत॥ सेवहुसिवचरनसरोजरे
नु॥ कल्यानअखिलप्रदकामधेनु॥ कर्पूरगौरकरुनाउदारसंसारसारभुजगेंद्रहार॥ सुखजन्मभू स्मार
मिमहीमाअपार॥ निर्गुनगुननायकनिराकार॥ त्रयनैनमैनमर्दनमहेस॥ अहंकारनिहारउ
दितदिनेस॥ बरबालनिसाकरमौलिभ्राज॥ त्रैलोकसोकहरप्रमथराज॥ जिनकहँबिधिसु
गतीनलीषीभाल॥ तिन्हकहँगतिकासीपतिकृपाल॥ उपकारीकोपरहरसमान॥ सुरअसु
रजरतकृतगरलपान॥ बहुजन्मउपायकरीअनेक॥ बिनसंभुकृपानहीभवबिबेक॥ बिज्ञान
भवनगीरिसुतारमनकहे॥ तुलसीदासममत्राससमन॥५३॥ देषोदेषोबनबन्योआजुउमाकं
त॥ मनोदेषनतुम्हहीआईरीतुबसंत॥ जनुतनदुतिचंपककुसुममाल॥ बरबसननीलनूत
नतमाल॥ कलकदलीजंघपदकमललाल॥ सूचतकटीकेहरीगतिमराल॥ भूषनप्रसून
बहुबिबिधरंग॥ नूपुरकिंकिनिकलरवबिहंग॥ करनवलवकुलपल्लवरसाल॥ श्रीफलकु
चकंचुकलताजाल॥ आननसरोजकचमधुपपुंज॥ लोचनबिसालनवनीलकंज॥ पिकब
चनचरितबरबरहीकीर॥ सितसुमनहासलीलासमीर॥ कहतुलसीदाससुनीसिवसुजा
न॥ उरबसिप्रपंचरचेपंचबान॥ करिकृपाहरीयभ्रमफंदकाम॥ जेहीहृदयबसहिसुखरासिरा
म॥५४॥ रसहदोषदुखदलनिकरुदेबिदाया॥ बिस्वमूलासिजनसानुकूलासिकरसूलधा

५ रसि महामूलमाया ॥ तडित गर्भांग सर्वांग सुंदर लसत दिव्य पट भव्य भूखण विराजे ॥ बालमृ-
गमंजुखंजन विलोचनि चंद्रवदनि लखि कोटि रति मार लाजे ॥ रूप सुख सील सीमासि भीमासि
5 रामासि वामासि वर बुधि बानी ॥ छमुख हेरंब अंबासि जगदंबिके शंभुजायासि जय जय भवानी
॥ चंड भुजदंड खंडनि बिहंडनि महिस मुंड मद भंग कर अंग तोरे ॥ सुंभ निसुंभ कुंभीस रण केस-
सरी क्रोध वारीस अरि वृंद बोरे ॥ निगम आगम अगम गुर्वि तव गुन कथन उर्विधर करत जे-
हि सहसजीहा ॥ देहि मा मोहि प्रण प्रेम यह नेम निज राम घनस्याम तुलसी पपीहा ॥ १४ ॥ जय ज-
य जगजननि देवि सुर नर मुनि असुर सेवि भुक्ति मुक्ति दायनी ॥ भय हरनि कालिका ॥ मंगल
मुद सिधि सदनि सर्व सर्वरीस वदनी ताप तिमीर ॥ तरुण तरनी किरनिमालिका ॥ वर्म चर्म क-
र कृपाण सूल सेल धनुष बाण धरनि दलनि दानव दल रन करालिका ॥ पूतना पिसाच प्रेत
डाकिनि साकिनि समेत भूत ग्रह बेताल षग मृगालि जालिका ॥ जय महेस भामिनि अनेक रूप
रूप नामिनि ॥ समस्त लोक स्वामिनी हिमसैल बालिका ॥ रघुपति पद परम प्रेम तुलसी चहै
अचल नेम देहु ह्वै प्रसन्न पाहि प्रणत पालिका ॥ १५ ॥ जय जय भगीरथ नंदनी मुनिचय चकोर
चंदनी नर नाग विबुध वंदनि जय जन्हु बालिका ॥ विष्णु पद सरोज जासि ईस सीस पर वि- ५
भासि त्रिपथगासि पुन्य रासि पाप छालिका ॥ विमल विपुल वहसि वारि सीतल त्रय-

पत्त

नापहारीभवरवरविहंगनतरतरंगमालीका॥ पुरजनपुंजोपहारसोभीतससीघोल
थारभंजनीभुभारभक्तिकल्पथालीका॥ नीजतटवासीविहंगजलथरचरपसुपतंगकीटज
टिलतापससवसरीसपालीका॥ तुलसीनवतीरतीरसुमीरतरघुवंसवीरविचरतम
तीदेहीमोहमहीषकालीका॥ १७॥ जयतिजयसुरसरीजगदखिलपावनि॥ विस्नुपद
कंजमकरंदइवअंवुवरवहसिदुखदहसीअघवृंदविद्रावनी॥ मिलतजलपात्रअजजुक्त
हरीचरणरजविरजवरवारीत्रीपुरारीशिरधामिनि॥ जह्नुकन्याधन्यपुंन्यकृतसगरसुत
भूधरद्रोणविद्दरनिवहुनामिनि॥ यक्षगंधर्वमुनिकिंनरोरगदनुजमनुजमज्जहीसुकृ
तपुंजजुतकामिनि॥ स्वर्गसोपानविज्ञानज्ञानप्रदेमोहमदमदनपाथोजहिमजामि
नि॥ हरीतगंभीरवानीरदुहुँतीरवरमध्यधाराविसदविस्वअभिरामीनि॥ अमीतमहिमा
अमितरूपभूपावलिमुकुटमनिवंदतेलोकत्रयगामिनि॥ देहीरघुवीरपदप्रीतीनिर्भर
मातदासतुलसीत्रासहरनिभवभामिनि॥ १८॥ हरणसकलपापत्रीविधितापसमीर
नसुरसरीत॥ विलसतमहीकल्पवेलिमुदमनोरथफलीत॥ सोहतससिधोलधारसुधा
सलिलभरित॥ विमलतरतरंगलसतरघुवरकैसेचरित॥ तोविनुजगदंवगंगकलीमलका
करित॥ घोरभवअपारसिंधुतुलसीकैसेतरीत॥ १९॥ ईसशीशवससीत्रीपथलससिनभ

रागबिलावल

रागललित

बनालयरनि॥मुनिसुरनरनागसिधसुजनमंगलकरनि॥देषतदुखदोषदुरितदाहदारिदहर ५
नि॥सगरसुअनसासतिसमनजलनिधिजलभरनि॥महिमाकीअवधिकरसिवहुविधिषि
ऽ हरिहरनि॥तुलसीकरुविमलवानिविमलवारीवरनि॥२०॥जमुनाज्योंज्योंलागीवाढनत्यों
सु त्योंसुकृतभटकलि॥भुपहीनिदरीवाहलागेकढनज्योंज्योंजलमलिनत्योंत्योंजमगन।
ल मुखमलीनहै॥आढनतुलसीदासजवासदेसजनुअनघआगीलागेडाढन॥२१॥सेईयेस रागभैरव
भ हीतसनेहदेहभरीकामधेनुकलीकासी॥समनसोकसंतापपापरुजसकलसुमंगलरासी॥
मरजादाचहुंओरचरनवरसेवितसुरपुरवासी॥तीरथसवसुभअंगरोमसिवलींगअमि
तअविनासी॥अंतरऐनऐनभलथनफलवछवेदविस्वासी॥गलकंवलवरुणाविभाती
जनुलूमलसतसरीतासी॥दंडपानीभैरवविषानमलरुचिषलगनभयदासी॥लोलदि
नेसत्रीलोचनलोचनकरनघंटघंटासी॥मणीकरणीकावदनससिसुंदरसुरसरीसु।
खसुखमासी॥स्वारथपरमारथपरीपुरणपंचकोसमहिमासी॥विस्वनाथपालककृ
पालचितलालतनितगीरीजासी॥सिद्धिसचीसारदपुजैमनजोगवतरहतरमासी॥पंचा
क्षरीप्राणमुदमाधवगव्यसुपंचनदासी॥ब्रह्मजीवसमरामनामदोउआषरविस्वविगासी ५
चारीनचरीनकरमकुकरमकरीमरतजीवगनघासी॥लहतपरमपदपयपावनजेहीच

व२

हीनप्रपंचउदासी॥कहतपुरानरचीकेसवनिजकरतूतिकलासी॥तुलसीवसीहरपुरी
रामजपुजोभयोचहेसुपासी॥२२॥रागवसंत॥सवसोचविमोचनचित्रकूटकलीहर
व नकरनकल्यानवूट॥सुचिअवनीसुहानीआलवालकाननविचित्रवारीवीसाल॥
मंदाकनिमालिनिसदासीच॥वरवारीविषमनरनारीनीच॥साषासुसृंगभूरूहसुपा
त॥निर्झरमधुकरमृदुमलयवात॥सुकपिकमधुकरमुनीवरविहारु॥साधकप्रसून
फलचारि॥चारुभवघोरघामहरसुषदछाह॥थप्योथीरप्रभावजानकीनाह॥साधक
सुपथीकवडेभागपाई॥पावतअनेकअभीमतअघाई॥रसएकरहतगुनकर्मकाल॥
सीयरामलषमनपालककृपाल॥तुलसीजोरामपदचहसीप्रेम॥सेवहिगिरिकरि
निरूपाधिनेम॥२३॥अवचीतचेतचित्रकूटहीचलु॥कोपितकलीलोपितमंगलमगवि
राजक्रान लसतवढतमोहमायामलु॥भूमीविलोकिरामपदअंकितवनविलोकीरघुवरवि
९३ हारथलु॥सैलसृंगभवभंगहेतुलषिदलनकपटपाषंडदंभदलु॥जहजनमेजगजन
कजगतपतिविधिहरीहरपरीहरीप्रपंचछलु॥सकृतप्रवेसकरतजेहिआश्रमविगत
विषादभयेपारथनलु॥नकरुविलंवविचारुचारुमतिवरषपाछिलेसमअगिलेपलु॥
मंत्रसोजाईजपहिजोजपिभएअजरअमरहरअचईहलाहलु॥रामनामजपजागकर

ज

९ तनितमज्जनययपावनथिवतजल्ल॥ कहिहहीरामभावतीजीकोसुखसाधनअनयासमहा
रागधना फल॥ कामरसनिकामचाकलबनतकसोजगज्जुगजागतजगजितलत॥ तुलसीतोहीविसेषि
श्री हरि बुझीयैएकप्रतितप्रीतीएकैबल॥ २६॥ जयतीअंजनीगर्भअंभोधिसंभूतविधुविबुधकुलके
क रवानंदकारी॥ केसरीचारुलोचनचकोरकसुखदलोकगनसोकसंतापहारी॥ १॥ जयति ।
बालकपिकेलीकौतुक॥ उदितचंडकरमंडलग्रासकर्ता॥ २॥ राहुरविशक्रपविगर्वखर्वी
करणसरणभयहरणजयभुवनभर्ता॥ जयतिरनधीररघुवीरहितदेवमनिरुद्रअव
तारसंसारपाता॥ विप्रसुरसिद्धमुनिआसीषाकारवपुषविमलगुनबुद्धिबारीधिबिधा
ता॥ ३॥ जयतिसुग्रीवसीक्षादिरक्षननिपुनबालिबलसालिबधमुख्यहेतू॥ जलधिलंघ
नसिंहसिंहिकामदमथनरजनीचरनगरउत्पातकेतू॥ ४॥ जयतिभूनंदनीसोचमोच
नविपिनदहनघननादबसविगतसंका॥ लूमलीलानल[illegible]ज्वालमालाकलीतहो
लिकाकरनलंकेसलंका॥ ५॥ जयतिसौमीत्रीरघुनंदनानंदकररिक्षकपिकटकसंघ
टविधायी॥ बंधिवारीधिसेतुअमरमंगलहेतुभानुकुलकेतुरनविजयदाई॥ ६॥ जयतिव
रव ज्रतनदसननखमुखविकटचंडभुजदंडतरुसैलपानी॥ समरतैलकजंत्रतिलतमिचर ६
निकरपेरीडारेसुभटघालिघानी॥ ७॥ जयतिदसकंठघटकरनवारीदनादकदनकार

स

नकालनेमिहंता॥ अघट घट घटना सुघट विघटनी विकट भूमी पाताल जल गगन गंता।
८॥ जयति विश्व विख्यात बानैत बीरदावली विदुष बरनत वेद विमल बानी॥ दास तुलसी त्रा
स समन सीता रमन संग सोभित राम राजधानी॥ ९॥ जयति कर्कटाथी समर राज विक्रम
माई देव मुद मंगलालय कपाली॥ मोह मद क्रोह कामादि खल संकुला घोर संसार निसि
किरिनिमाली॥ १॥ जयति लसदंजनादितिज कपिकेसरी कस्यप प्रभव जगदार्तिहर्ता॥ लो
शोकहर क लोकप कोक कोकनद सोक हर हंस हनूमान कल्यान करता॥ २॥ जयति सुविशाल विकराल विग्र
ह वज्रसार सर्वांग भुजदंड भारी॥ कुलीस नख दसन वर लसत वालधि बृहद बीर सस्त्रास्त्र
धर कुधर धारी॥ ३॥ जयति जानकी सोक संताप मोचन राम लछमनानंद वारिज विगासी
॥ कीस कौतुक केली हेली लंका दहन दलन कानन तरुन तेज रासी॥ ४॥ जयति पाथोधि पा
षान जलजान कर जातुधान प्रचुर हरष हाला॥ दुष्ट रावन कुंभकरन पाकारि जित मर्म भि-
द कर्म परिपाक दाता॥ ५॥ जयति भुवनैक भूषन विभीषन वरद विहित कृत राम संग्राम सा-
का॥ पुष्पकारूढ सौमित्रि सीता सहित भानुकुल भानु कीरति पताका॥ ६॥ जयति पर यंत्र मंत्रा-
भिचार ग्रसन कारमन कूट कृत्यादि हंता॥ साकिनि साकिनी पूतना प्रेत वैताल भूत प्रमथ-
जूथ जंता॥ ७॥ जयति वेदांत विद विविध विद्या विसद वेद वेदांग विद ब्रह्मवादी॥ ज्ञान विरा

न विज्ञानभाजन विभो विमल गुन गुनत सुक नारदादी ॥ ४ ॥ जयति काल गुन कर्म माया मथन
७ नश्चल ज्ञान व्रत सत्यरत धर्मचारी ॥ सिध सुर वृंद जोगींद्र सेवित सदा दास तुलसी सरन भय
तमारी ॥ ५ ॥ २६ ॥ जयति मंगलागार संसार भारापहर वानराकार विग्रह पुरारी ॥ राम रोषा
नल ज्वाल माला मिसि ध्वांत चर सलभ संहारकारी ॥ १ ॥ जयति मरुदंजना मोद मंदिर नत ग्रि
वसुग्रिव दुःखैक बंधो ॥ जातुधानोद्धता क्रोध कालाग्निहर सिद्ध सुर सज्जनानंद सिंधो ॥ २
नी जयति रुद्राग्रनी विश्व वंद्याग्रनी विश्व विख्यात भट चक्रवर्ती ॥ ३ ॥ साम गाताग्रनी कामजेताग्रनी रा
म हित राम भक्तानुवर्ती ॥ जयति संग्राम जय राम संदेस हर कौसला कुशल कल्यान भाषी ॥ रा नी
म विरहार्क संतप्त भरतादि नर नारि सीतल करन कल्प साखी ॥ ४ ॥ जयति सिंहासनासीन सीता
रवन निरखि निर्भर हरष नृत्यकारी ॥ राम संभ्राज सोभा सहित सर्वदा [illegible] तुलसी मानस
रामपुर विहारी ॥ ५ ॥ २७ ॥ जयति वात संजात विख्यात विक्रम ब्रहद बाहु बल विपुल बालधि
विशाल जातरूपाचलाकार विग्रह लसत लोम विद्युल्लता ज्वालमाला ॥ १ ॥ जयति बालार्क
वर वदन पिंगल नयन कपिस कर्कस जटाजूटधारी ॥ विकट भ्रकुटी वज्र दसन नख वैरि मद मत्त कुं
जर पुंज कुंजरारी ॥ २ ॥ जयति भीमार्जुन व्याल सूदन गर्व हर धनंजय रथ त्राण के ७
तू ॥ भीष्म द्रोण कर्णादि पालित काल दृक सुजोधन चमू निधन हेतू ॥ ३ ॥ जयति गत राजदा

तारहूं तारसंसारसंकटदनुजदर्पहारी॥ ईतिभीतिग्रहप्रेतचौरानलव्याधीबाधासमनघो
रमारी॥४॥ जयतिनिगमागमव्याकरणलिपकाव्यवेदांतकौतुककलाकोटिसिंधोसाम
श्री गायकभक्तकामदायकवामदेवश्रीरामप्रीयप्रेमबंधो॥ जयतिधर्मांसुसंदग्धसंपातिनौपक्ष ति
लोचनदिव्यदेहदाता॥ कालकलिपापसंतापसंकुलसदाप्रणततुलसीदासतातमा
ता॥११॥ जयतिनिर्भरानंदसंदोहकपिकेसरीकेसरीसुवनभुवनैकभर्ता॥ दीव्यभूम्यं
जनांबुजलाकरमणीभक्तसंतापचिंतापहर्ता॥१॥ जयतिधर्मार्थकामापवर्गदविभोब्रह्म
लोकादिवैभवविरागी॥ वचनमानसकर्मसत्यधर्मव्रतीजानकीनाथचरनानुरागी॥२
जयतिविहंगेसबलबुद्धिवेगातिमदमथनमनमथमथनऊर्द्धरेता॥ महानाटकनिपु
नकोटीकविकुलतिलकगानगुनगर्वगंधर्वजेता॥३॥ जयतिमंदोदरीकेसाकर्षणवि
द्यमानदशकंठभटमुकुटमानी॥ भूमीजादुःखसंजातरोषांतकृतजातनाजंतुकृत
जातुधानी॥४॥ जयतिरामपदपद्मश्रवणसंजातरोमांचलोचनसजलसिथिलवानी॥ रा
मपदपद्ममकरंदमधुकरपाहीदासतुलसीसरनसूलपानी॥२९॥ जाकीगतीहैहनुमा रागसारंग
नकीताकीपयजपुरीआईयहहरेखाकुलीसपषानकी॥ अघटघटसुघटविघट
निऐसीविरदावलीनहीआनकी॥ सुमीरतसंकटसोचविमोचनमूरतीमोदनिधान

कीना ञापरसानकुल गिरिजाहररामलषमनश्रहनुमानकी ॥ तुलसीकपिकीकृपाविलो ८
कनिधानीसकलकल्यानकी ॥ ३ ॥ ताकीहैतमकीताकीश्रारकोजाकेहैंसवभातीभरोसोक
8 पिकेशरीकीसोरको ॥ जनरंजनश्ररीगनगंजनमुखभेजनषलवरजोरको ॥ वेदपुरानप्रग
टपुसोरथ्यसकलमुभटसीरमोरको ॥ उथ्यपेथ्यपनथ्यपेउथ्यपनकरविबुधहृदवंदिछोर
को ॥ जलधिलंघिदहीलंकप्रवलदलदलनी साचरहोरको ॥ जाकोवालविनोदसमुझ
िजीयडरतदिवाकरभोरको ॥ जाकीचिवुकचोटचूरणकीयोरदमदकुलीसकठोरको
लोकपालअनकुलविलोकवोचहतविलोचनकोरको ॥ सदाअभयजयमयमंगलमय
जोसेवनकरनेरोरको ॥ भक्तकामतरूनामरामपरीहरणीवेदचकोरको ॥ तुलसीफलचा
रउकारतलजसगावतगईवहोरको ॥ ३१ ॥ श्रेसीतोहीनवुझीयेहनुमानहटीले ॥ साहेव
कहूंनरामसेतमसेनउसीले ॥ तेरेदेषतसिंघकेसीसमेढकलीले ॥ जानतहूंवलीतेरउमा
नोगुनगनकीले ॥ हाकसुननतदसकंधकेभयवंधनढीले ॥ सोवलगयोकिधोंभयश्रव
गवगहीले ॥ सेवककोपरदाफटोतसमरथ्थसीले ॥ अधिकआपुतेआपनोसनमानस
हीले ॥ सासततुलसीदासकीदेषीसुजसतहीले ॥ तिहुंकालतिनकोभलोजेरामरंगीले ८
३२ ॥ समरथ्थसुअनसमीरकेरघुवीरपिश्रारे ॥ मोपरकीविनोहीजोकरिलेहीभीयारे ॥ ते

रागविलावल

रीमनही मांतेचलै चिंछिनीत्रीयारे अप्रियारे॥ मेरीवारकोंत्रीभुवनउजिआरे॥ केहीकरनी
जननजानि कैसनमानकियारे॥ केहीऔगुनतेंआपनोकरीडारीदियारे॥ खाईबोचीमागी
मैतेरोनामलीयारे॥ नेरेवलवलिआजलौजगजागीजीयारे॥ जोतोसोहोतोफिरोमेरो
हेतहीयारे॥ तोकोंवदनदेषावनोकहीवचनहयारे॥ तोसोज्ञाननिधानकोसर्वज्ञवियारे
होसमुजनसांईदोहकीगतिछारहक्रियारे॥ नेरेस्वामीरामसेस्वामीनिसीयारे॥ नहतु
लसीकहकोंनकीकाकोनकीयारे॥३३॥ अतिआतुरअतिस्वारथीअतिदिनदुषारी॥ इन
कोविलगनमानीयेवोलहिनविचारी॥ लोक रितिदेषिसुनीव्याकुलनरनारी॥ अति
वरषेंअनवरषेहूदेहीदेवहीगारी॥ नाकहीआएनाथसोभयेसासतिभारी॥ कहिआए
कीविक्षमानीजओरनिहारी॥ समयेसोकरेंसुमिरियेसमरथहीतकारी॥ सोसवविधि
उपकारककेंअपराधविसारी॥ विगरीसेवककीसदासाहीवहीसुधारी॥ तुलसीपरतें
रोकृपानिरुपाधिनिनारी॥३४॥ कटुकहिएगाढेपरेसुनीसमुजीसुसांईकरहीअनभ
लेकोंभलोआपनिभलाईसमरथसुभजोपावहीटेरपीरपराई॥ ताहितकेसवज्योंनदी
सागरनवोलाई॥ आपआपनेकोंभलोचाहेलोगलुगाई॥ भावेजोजेतेहाहीभजेसुभअ
सुभसगाई॥ वाहावोलदेषाधियेजोनिजवरीआई॥ विनसेवासोपालिएसेवककीना

५ ३॥ सुकच पल नामे रियै तम लोभ लाई॥ होन चहैं छीठ है अति मिच ली चाई॥ वेदी बोर विर
दावली निगमागम गाई॥ नीको तुलसीदास को तेरियै निकाई॥ ३४॥ मंगल मुरति मारुत नं मागारी
दन सकल अमंगल मुल नीकंदन॥ पवन तनय संतन हीत कारी॥ हृदय विराजत अवध
१ विहारी॥ मात पीता गुर गन पती सारद॥ शिवा समेत संभु सुक नारद॥ चरण वंदि विं
नवौ सब काहू देहु राम पद नेह निवाहू॥ वंदौं राम लषन वैदेही॥ जे तुलसी के परम सने
ही॥ ३५॥ लाडिले लषन लाल हीत हो जन के॥ सुमिरें संकट हारी सकल सुमंगल का
री॥ पालक कृपाल आपने के पन के॥ धरनी धरन हार भंजन भुभार अवतार साहसी स
हसफ निके॥ सत्य संध सत्य व्रत परम धरम रत निरमल करम वचन अरु मन के॥ रूप के नि
स धान धनुवान पानि तून कटी माहा वीर विदित जीतैया वडे रन के॥ सेवक सुषदायक सब
लायक जानकी नाथ गुन गन के॥ भावते भरत के सुमीत्रा सीया के॥ दुलारे चातक चतु
र राम स्याम घन के॥ वल्लभ उरमीला के सुलभ सनेह वस धनी धन तुलसी से नीरधन के॥ ३७
जयति लषमणानंत भगवंत भुधर भुजग राज भुवनेस भु भार हारी॥ प्रलय पावक महा
ज्वाल माला वमन समन संताप लीला कारी॥ १॥ जयति दासरथी समर समर्थ सुमित्रा सुव ५
न सत्रुसूदन विषात राम भरत वंधो॥ चारु चंपक वरन वसन भुषन धरन दिव्य तर भव्य लाव

सर्व

न्यसिंधो॥२॥जयतिनिगमागेयगोतमजनकविज्ञनकविश्वकंटककुटिलहेता॥वचनः	८१कंज
चयचान्रोषरसपरगर्वहरसर्वदारामभद्रानुगंता॥३॥जयतिसीतेसंसेवासरसविषयर
सविरसयुरथरमधारी॥विपुलवलमूलसार्दूलविक्रमजलदनंदसहेनभीमकमभारी
४॥जयतिसंग्रामसागरभयंकरतरनरामहीतकरनवरवाहुसेतू॥उर्मिलारमनकल्या
नमंगलभवनदासतुलसीदोषदवनहेतू॥५॥३८॥जयतिभूमीजारमनपदकंजमकरं
दरसरसीकमधुकरभरतभूरीभागी॥भवनभूषनभानुवंसभूषनभूमिपालमनीरामच
न्द्रानुरागी॥१॥जयतिविबुधेसधनदादिदुर्लभमहाराजसंभ्रीजसुखपदविरागी॥ख
न्डुपारावृतीप्रथमरेखाप्रगटसुद्धमतिजुवतिमतिप्रेमपागी॥२॥जयतिनिरूपाधिभ
क्तिभावंजंत्रीनहृदयवंधुहीतचित्रकूटाद्रीचारी॥पादुकान्रृपसचिवपुहमीपालकपरं
मधीरगंभीरववीरभारी॥३॥जयतिसंजीवनीसमयसंकटहनुमानधनुवानमहीमा
वखानी॥वाहुवलविपुलपरमितिपराक्रमअतुलगूढगतिजानकीजानजानी॥४॥
जयतिरणअजीररघुनाथवेगनगर्वहरफेरिकियेरामगुनगाथगाता॥मांडविचीतचा
तृकनवंबुदवरनसरनतुलसीदासअभयदाता॥५॥३९॥जयतिजयशत्रुकरीकेसरीश
त्रुहनशत्रुतमतुहीनहरकिरिनिकेतु॥देवमहीदेवमहीधेनुसेवकसजनसिद्धमुनिसं

कलकल्याण हेतू ॥ १ ॥ जयति सर्वांग सुंदरा सुमित्रा स्वअनंद भुवनविख्यात भरतानुगामी ॥ वर्म-
१० वर्मासी पुनुवानन नीरथ रक्षात्रु संकट समन जन्यना मी ॥ २ ॥ जयति लव नांवु निथी ऊं भ संभव
माहाट नुजहुरजनदर्पे हू सित हारी ॥ लक्ष्मणानुज भरत राम सीता वर नरेन्द्र भूषित भाल ति-
10 लकधारी ॥ ३ ॥ जयति श्रुतिकीर्ति वल्लभ सदुलभ महानमतनमंद भक्त अभय दाता ॥ दास
तुलसीचरन सरन सीदत विभो पाहीदीनार्ते संताप हाता ॥ ४ ॥ ४० ॥ जयति श्री जानकी
भाउकूल भानुकी प्राण प्रियवल्लभा भवतरनी श्रेये ॥ रामआनंद चैतन्य घन विग्रह शक्ति
अल्हादनी निज सा रूपे ॥ १ ॥ चित वत्तानचरन चिते हीं यरत हूं हरि हू का मभय कोहम
द मोह माया ॥ रुद्र विधि विष्णु सुर सिद्ध वंदित पदे जयति सर्वेश्वरी राम जाया ॥ २ ॥ कर्मज
पयोग विज्ञान वैराग्य लहिं मोक्ष रहित जो ग जे प्रभु मनावें ॥ जयति वैदेहि सब शक्ति पि-
र भुवण ते नित्व हि दृष्टि विनु कव हू पावें ॥ ३ ॥ कोटि ब्रह्मांड जग ईस कोई पाजे हि निगम
मन वुधि तें अगम गावें ॥ विदित यहू गाथ अह दान अति माध्य सो नाथ तव दान ते हाथ
आवें ॥ ४ ॥ दिव्य धात व र्षै जय थ्थान जे वाहि वध स्यो तें वें राम गुर रूप मिलि पद्य वता यो चि-
तय हिं तलीन लखी कृपा कि न्हीं तवै दे वि अति हुलस भ तव दरस पायो ॥ ५ ॥ जयति श्री स्वा १०
मिनी सीय स्वभना मिनि राम निको टी हुति देह दशै ॥ ६ ॥ दिव्य आदि देय मन गज गामिनी

देखभामिनिदेवतनवपायपरसे ॥ ४२ ॥ दुखितलखिमकोविनदरासुनिजरुपतनवजजननजयज
ननतेंसबलभनाई ॥ कृपापायरिपूर्लीनवकंजदललोचनाप्रगटभईजनकन्दपअर्जिरमाही
७ ॥ रमितनवविधिनिप्रियप्रेमप्रगटैकरनलंकपतिव्याजकछुषेलठान्यो ॥ गोपिकाक्लस
वतनतल्पवद्रुज्जतनकमिलेतहिमिलेठग्रानंदमान्यो ॥ ४ ॥ हीनतनवसंभुवेसंगरहीरंकसो
विभुखजोदेवनहीनाहानेरो ॥ अयमकहूरनिपहजानिगहिसरनतनवदासतुलसीभयोअ
इचेरो ॥ ५ ॥ ४२ ॥ कबहूकअंबअवसरपाइमेरीयोसुधिद्याइबीकछुकरुणाकथाचलाई ॥ दी
नसबअंगहीनछीनमलीनअघीअघभराइ ॥ नामलेभरीउदरएकप्रभुदासिदासकहाइ ॥ बुझ
हुँसोहेकवनकहिबीनाममरसाजनाई ॥ सुनतरामकृपालकेमेरिविगरियोबनिजाई ॥
जानकीजगजननिजनकोकीएवचनसहाई ॥ दासतुलसीतरैभवनाथगुनगननगाई ॥ ४१ ॥ केहू
समैसुधिद्याइबिमेरीमातजानकीजनकहाइनामलेतहोंकियपनचातकज्वोंप्यासप्रेम
पानिकी ॥ सरलप्रकृतिआपुजानिएकरुणानिधानकी ॥ निजगुनअरिकृतअनहीतोदा
सदोषसुरतिनरहतिचितदिनदानकी ॥ बानिबिसरावनसीलहेमानरअमानकी ॥ तुलसीदा
सनबिसारीएमनबचनकर्मजाकेसपनेहूगतिनआनकी ॥ ४३ ॥ जयतिसच्चिद्व्यापकानं
श्री दपरब्रह्मविग्रहव्यक्तलीलावतारी ॥ विकलब्रह्मादिसुरसिद्धसंकोचवसविमलगुननगे ।

११ हुनरदेहधारी॥१॥जयतिकोसलाधीसकल्यानकोसलसुताकुसलकैवल्यफलचारुचारी॥
॥वेदबोधितकर्मधर्मधरनीधेनुविप्रसेवकसाधुमोदकारी॥२॥जयतिऋषिमखपालसमनसज्जन
॥ सालसापवसमुनिवधुपापहारी॥भंजिभवचापदलीचापभूपावलीसहीतभृगुना
थनतमाथभारी॥३॥जयतिधार्मिकधीरधुरवीररघुवीरगुरमातपीतबंधुवचनानुसारी॥
चित्रकूटाद्रीविंध्याद्रिदंडकविपिनधन्यकृतपुन्यकाननविहारी॥४॥जयतिपाकारीसुत
काककरतूतिफलदानखनिगरतगोपितविराधा॥दिव्यदेवीवेषदेखीलखिनिसिचरीजनु
विडंबितकरीविश्वबाधा॥५॥जयतिखरत्रिसिरदूषणचतुर्दससहससुभटमारीचसंहार
हरि करता॥गीधसबरीभक्तिविवसकरुणा[illegible]चरीतनिरुपाधित्रिविधार्तिहरता॥६॥जयति
ति मदअंधकुकबंधवधवालीबलसालिवधकरनसुग्रीवराजा॥सुभटमर्कटभालुकटकसंघट
सजतनमतपदरावनानुजनिवाजा॥७॥जयतिपाथोधिपाषानकरीसेतुकौतुकहेतुका
लमनअगमलईललकिलंका॥सकुलसानुजसदलदलितदसकंठरनलोकलोकपकि
एरहितसंका॥८॥जयतिसौमित्रिसीतासचिवसहीतचलेपुष्पकारूढनिजराजधानी॥दास
तुलसीमुदितअवधवासीसकलरामभएभुपवैदेहिरानी॥४४॥जयतिराजराजेंद्रराजीवल ११
लोचनरामनामकलिकामतरुसामसाली॥अनयअंभोधिकुंभजनिसाचरनिकरतिमिर

रामविनयावली

ॐश्रीमते रामानुजाय नमः ॥ गाइए गणपति जगवंदन संकर सुवन भवानी नंदन सिद्धि सदन
गजवदन विनायक कृपा ॥ सिंधु सुंदर सब लायक ॥ मोदक प्रिय मुद मंगल दाता ॥ विद्या वारि
धि बुधि विधाता ॥ मांगत तुलसिदास कर जोरें ॥ बसहु राम सिय मानस मोरें ॥ १ ॥ दीनदयाल दि
वाकर देवा ॥ कर मुनि मनुज सुरासुर सेवा ॥ हिमतम करि केहरि करमाली ॥ दहन दोष दुख द
रित रुजाली ॥ कोक कोकनद लोक प्रकासी ॥ तेज प्रताप रूप रस रासी ॥ सारथि पिंगु दि
व्य रथगामी ॥ हरि संकर विधि मूरति स्वामी ॥ वेद पुराण विदित जस जागै ॥ तुलसी राम भक्ति
वर मांगै ॥ २ ॥ को जाचिये शंभु तजि आन ॥ दीनदयाल भक्त आरति हर सब ॥ प्रकार समरथ भ
गवान ॥ कालकूट ज्वर जरत सुरासुर ॥ निज पन लागि किये विषपान ॥ दारुन दनुज जगत
दुखदायक ॥ मार्यो त्रिपुर एक हि वान ॥ जो गति अगम महामुनि दुर्लभ ॥ कहत संत श्रुति स
कल पुरान ॥ सोई गति मरन काल ॥ अपने पुर देत सदासिव सबही समान ॥ सेवत सुलभ उ
दार कल्पतरु पारवती पति सहज सुजान ॥ देहु काम रिपु राम पद रति तुलसिदास कहु कृपानि
धना० धान ॥ ३ ॥ दानी कहूं शंकर से नाही दीनदयाल दिवोई भावै जाचक सदा सोहाही ॥ मारि कै मारु
थप्यौ जग मैं ॥ जाकी प्रथम रेख भट मांही ॥ ता ठाकुर कौ रीझि निवाजबो ॥ कह्यो क्यो परत मो
पाहीं जोग ॥ कोटि करि जो गति हरि सो ॥ मुनि मांगत सकुचाही ॥ वेद विदित तेही पद पुरारिपुर

जोरा

कुमारित लिंककीना

नं० २८४ ख

पत्र ६६